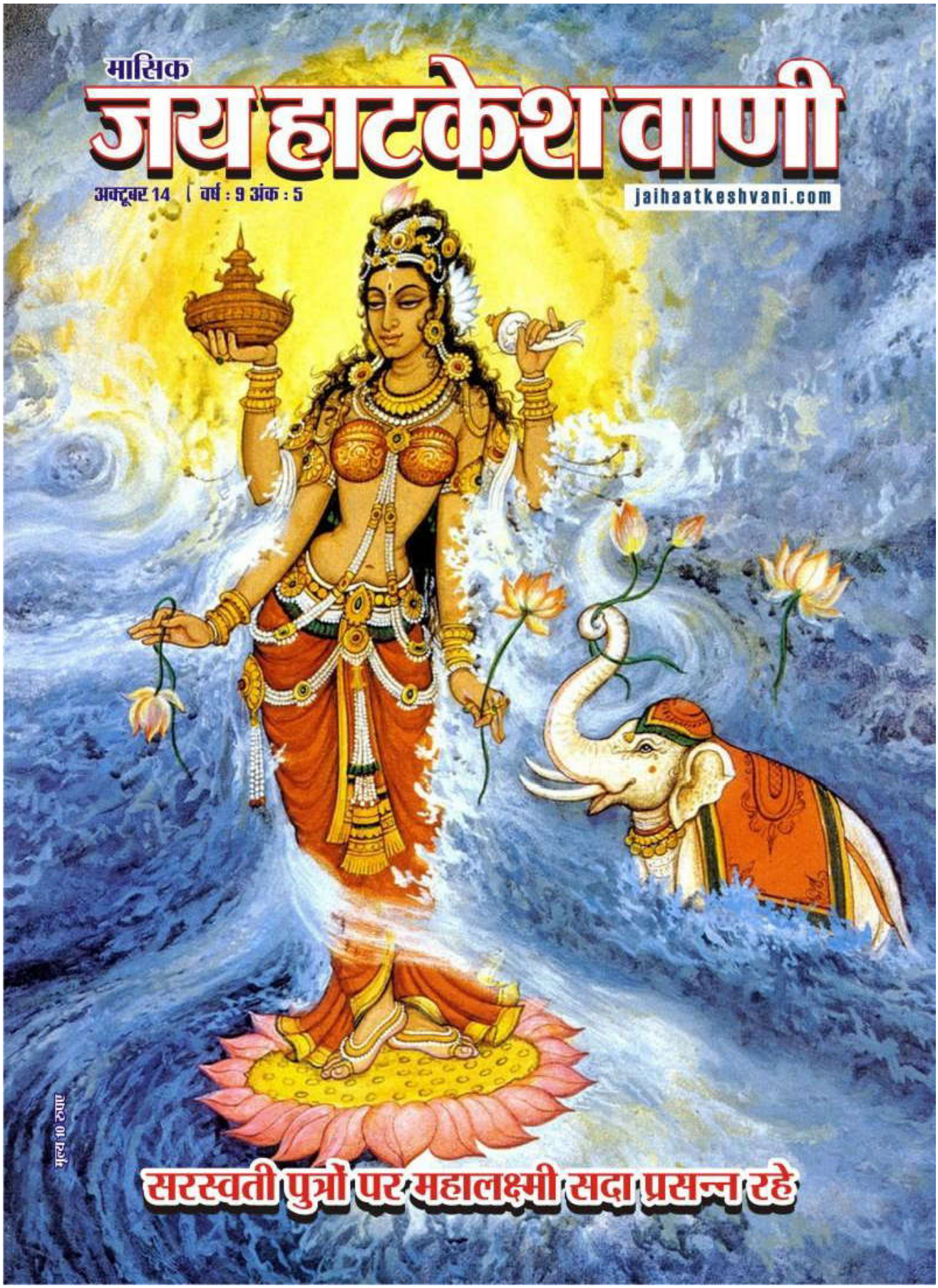
मासिक
जय हाटकेश वाणी
अक्टूबर 14 | वर्ष : 9 अंक : 5
jaihaatkeshvani.com
मूल्य 10 रुपए
सरस्वती पुत्रों पर महालक्ष्मी सदा प्रसन्न रहे

RYDAK®

(RED)

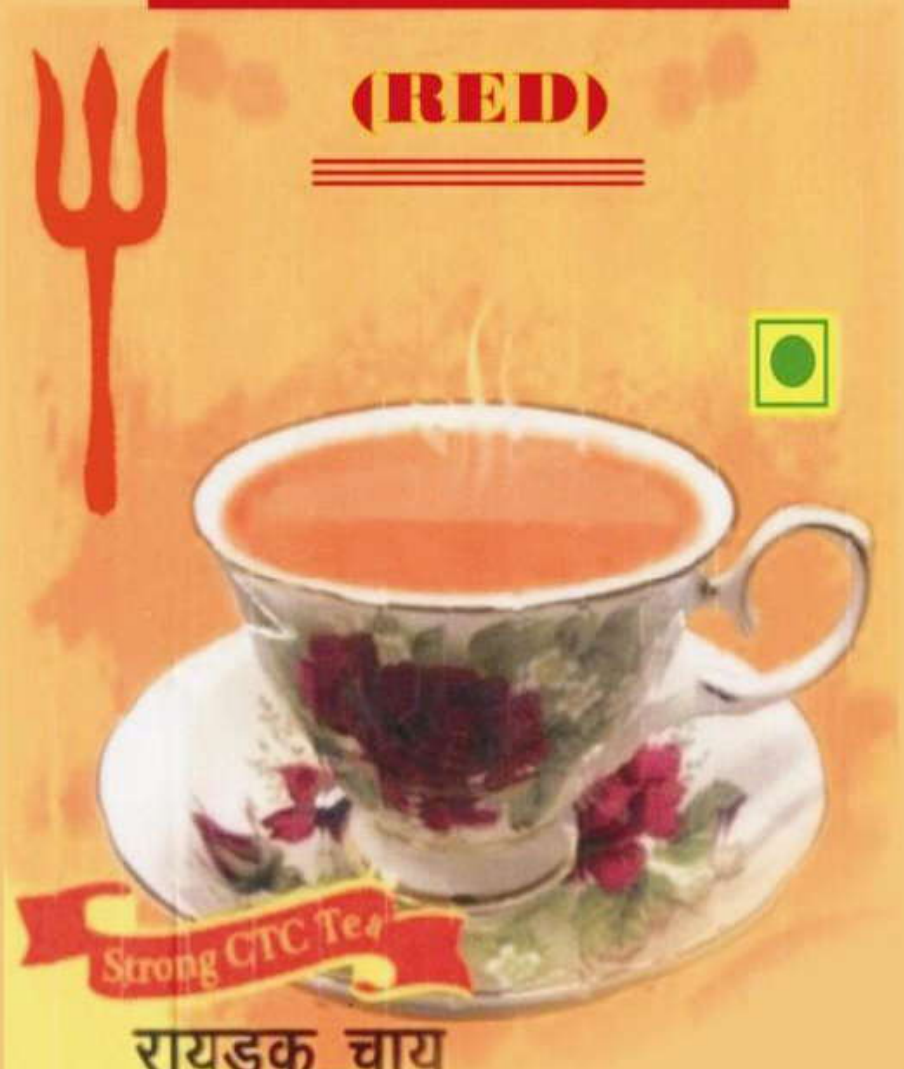

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : **KANT & COMPANY LTD.**

75, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं श्री रवीन्द्र नागर, नईदिल्ली
पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं श्री कान्ताप्रसाद नागर, दास्ताखेड़ी
पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता नवीन झा
-विज्ञापन-
पवन शर्मा
9826095995/92004-20000
वितरण
सौ. सीमा मनीष शर्मा
मो.99265 63129

सम्पादक वाणी...

ज्ञान का 'प्रकाश'

जय हाटकेशवाणी के सभी पाठकों को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं। दीपावली का पर्व वास्तव में रोशनी को प्रकाशित करने का पर्व है। ज्ञान की रोशनी अर्थात जब हम अपने मनुष्य जीवन का सही अर्थ समझ जाएं। त्यौहार मनाना, उत्साह एवं उल्लास का क्षण है, परन्तु आपकी असली दीपावली उसी दिन मनती है, जब आप इस जीवन का अर्थ समझ लेते हैं। दुनिया में असंख्य लोग हैं, जो अपने परिवार, समृद्धि, सम्पत्ति के विस्तार में लगे रहते हैं, परन्तु ये सब व्यर्थ है, बेकार है, का अर्थ उन्हें बुढ़ापे में जाकर समझ में आता है जब उन्हें लगता है कि हमने कुछ नहीं किया। सबके लिए जिए, सबके लिए किया, परन्तु अपने लिए क्या? क्या दो घड़ी भी भगवान के सामने बैठकर अपने अंतर में झांकने का प्रयास किया? वास्तव में जब हम अंतर में ज्ञान का प्रकाश कर यात्रा पर निकलते हैं तो इस बात का अहसास होता है कि हमारे दुर्गुणों का कोई मोल नहीं है। दूसरे की खुशी को देखकर ईर्ष्या की भावना, दूसरों को धोखा देकर अपनी सम्पत्ति में वृद्धि की कामना, अपने आपको बड़ा और बड़ा बनाए जाने की कवायद आपको बाहरी यात्रा में बहुत सुख प्रदान करती है, परन्तु जब आप अंतर की यात्रा पर जाकर अपने आंतरिक गुणों का साक्षात्कार करते हैं तो दृश्य इसके बिल्कुल उलट हो जाता है। जो व्यक्ति अपने अंतर को प्रकाशित कर लेते हैं, उन्हें इस भौतिक जगत के व्यवहार अटपटे से लगते हैं। हम कितने पानी में हैं, इसका प्रमाणीकर किसी लेबोरेटरी में नहीं होता। आप स्वयं जब ज्ञान से प्रकाशित होते हैं तो बाहरी जीवन में किसी को नीचा नहीं दिखाते, संसार आपको मिथ्या लगने लगता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह से आप निवृत्त हो जाते हो, किसी की खुशी में आपको अपनी खुशी दिखने लगती है, आप अहंकार मुक्त होते हो तथा संतोष धन से समृद्ध। परन्तु यह सब पाने के लिए आपको अन्तर में झांकना ही पड़ेगा। अपने आपको ज्ञान से रोशन करना ही पड़ेगा और उसके लिए आपको साधु बनकर जंगल में जाने की जरूरत नहीं है, अपने घर में भी यह काम बखूबी हो सकता है। कई लोग अपनी मुक्ति के लिए अलग-अलग मार्ग अपनाते हैं कोई भक्ति का, कोई परोपकार का, कोई दान का, कोई सेवा का। कोई भी मार्ग आप पकड़ लीजिए.... जो आपको पसंद हो। सही गलत का प्रमाणीकरण अपनी अंतरआत्मा से करवा सकते हैं। आप दो तरफा यात्रा जारी रखिए, आंतरिक एवं बाह्य जब आप अपनी इस यात्रा में संतुलन बना लेते हैं तो कोई भी शक्ति आपको मोक्ष से रोक नहीं सकती। अपने जीवन एवं मोक्ष का लक्ष्य आपको निर्धारित करना ही पड़ेगा तथा दोनों तरह की यात्राओं से न्याय करना पड़ेगा। यह तय है कि जब आप अंतरयात्रा पर जाने लगते हैं तो बाह्य यात्रा अपने आप सुचारू हो जाती है। ये सब आजमाएं, अपने जीवन को सार्थक बनाएं... अपने ज्ञान के दीपक से स्वयं को प्रकाशित करें तथा अज्ञान रूपी अंधेरे में भटके लोगों को भी रोशन करें। यही असली दीपावली है, प्रकाश का तेज दिए में नहीं, आपके चेहरे पर दिखाई देना चाहिए। अपनी सही पहचान के बाद जो खुशी आपको मिलेगी तब असली आतिशबाजी आपके दिल दिमाग में होगी। आओ अब भी मौका है मना लो असली दीपावली।

– संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी
सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा यज्ञ का भव्य आयोजन

डॉ. अनुरागजी शर्मा (मुरैना वाले) के मुखारविन्द से

दिनांक 10 से 16 अक्टूबर 2014
(अपरान्ह 1 से 4 बजे तक)

आप सभी धर्मलाभ लेने हेतु सादर आमंत्रित है।

स्थान - स्वर्णकार ब्राह्मण धर्मशाला
(दैनिक चैतन्य लोक प्रेस के सामने)
जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

- निवेदक एवं सम्पर्क -

दीपक शर्मा 94250 63129, पवन शर्मा 98260 95995
मनीष शर्मा 99262 85002, ज्योति-राजेन्द्रजी नागर 9303274678
श्रद्धा-मनीषजी नागर 99818 06146, प्रबल 94259 02495, दिव्यांश 88781 71414

सेवाभाव की त्रिमूर्ति

जैसा कि सर्वविदित है - मासिक जय हाटकेशवाणी का प्रकाशन समाजोत्थान का ही एक उपक्रम है। प्रतिमाह 25 तारीख से इसके प्रकाशन की कवायद शुरू होती है, तथा 6 तारीख को शासकीय डाक सेवा से इसे देशभर में भेजा जाता है। वर्तमान में 40 पृष्ठ ब्लेक एंड व्हाईट तथा कवर सहित 12 बहुरंगी पेज की किताब को भेजने में नियमानुसार 50 पैसे की डाक टिकिट लगाना अनिवार्य है, इस पुस्तक को भेजने का इससे सस्ता उपाय और कोई नहीं है। जो नागरजन इस पुस्तक के सदस्य हैं, उन तक नियमित यह पहुंचे, हमारी प्रतिबद्धता है, परन्तु शासकीय सेवाओं के प्रति हम कितने आशान्वित रहें, यह भी एक यक्ष प्रश्न है। बहरहाल कुछ सदस्यों की आम शिकायत रहती है कि हमें पुस्तक प्राप्त नहीं हो रही है। वे बार-बार हमें मोबाइल पर शिकायत भी करते हैं। परन्तु हमारी और आपकी स्थिति एक जैसी ही है, हमने अपनी तरफ से निर्धारित दिवस पर डाक रवाना कर दी, आपको पुस्तक नहीं मिलती है तो ऐसा लगता है कि हमने भेजी नहीं, परन्तु ऐसा नहीं है।

कम्प्यूटर में सदस्यों की सूची है तथा प्रतिमाह उसी के अनुसार सबको पुस्तक भेजी जाती है। पुस्तक पर पते चिपकाने का काम हम स्वयं करते हैं, इसलिए पूरा विश्वास रहता है कि पुस्तक रवाना हुई है। यदि आपको डाक से पुस्तक प्राप्त नहीं हो रही है तो उसे अपने ईमेल पर मंगवा सकते हैं। कुछ गांवों से इस तरह के फोन आते हैं कि हमारे यहां बाकि सबको पुस्तक मिल गई, हमारे यहां नहीं आई, ऐसी स्थिति में हमें फोन करने के बजाय जिनके यहां आ गई है, उनसे लेकर पढ़ सकते हैं। अर्थात समाजजन जागरूक होकर इस संबंध में सहयोग कर सकते हैं। पुस्तक के लिए प्रतिमाह प्रकाशन मेटर एकत्र करना, उसे सुसज्जित कर मुद्रित करना तथा डाक में डालने के काम में ही भारी परिश्रम हो जाता है। हमारे स्तर पर श्रेष्ठ सेवा देने का प्रयत्न हम करते हैं, इसके बवजूद यदि शासकीय शिथिलता या अकर्मण्यता से पुस्तक आप तक नहीं पहुंचती तो शिकवा शिकायत का दौर खत्म कर कुछ इस तरह के विलक्षण प्रयास या पहल की जाए कि सब कुछ सुचारू हो जाए। उल्लेखनीय है कि इंदौर लोकल के कुछ सदस्य पुस्तक प्राप्त न होने की दशा में कार्यालय आकर पुस्तक ले जाते हैं, वे प्रशंसा के पात्र हैं, इससे आगे बढ़कर बाहरी क्षेत्रों में कुछ ऐसे सदस्य हैं, जो किसी सदस्य को पुस्तक प्राप्त न होने पर अपनी पुस्तक पढ़कर उन्हें दे आते हैं। ये सब आपसी समझ एवं सहयोग के उदाहरण हैं इनसे भी आगे बढ़कर तीन शख्स ऐसे हैं, जो अपने क्षेत्र में स्वयं घूम-घूमकर सदस्यों तक पुस्तक पहुंचाते हैं। सुदामानगर क्षेत्र में श्री पुरुषोतम जोशी वरिष्ठ समाजसेवी है, जब डाक से किताब उनके यहां जाती थी, तो उन्हें न मिलने की शिकायत आम थीं, उन्होंने स्वयं पहल की तथा पूरे क्षेत्र की 48 पुस्तकें स्वयं प्रतिमाह सदस्यों तक पहुंचाने लगे, एक बार का यदि काम हो तो कोई भी कर दे, परन्तु प्रतिमाह स्वयं के वाहन का पेट्रोल फूंककर घर-घर पुस्तकें पहुंचाना क्या आसान काम है? समाजसेवा की भावना जिनमें कूट-कूट भरी हो वे ही ऐसा काम कर सकते हैं। श्री जोशी की समाजसेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता यही खत्म नहीं होती, वे स्वयं सभी सदस्यों की सूची तैयार कर पुस्तक देने के बाद उनसे प्राप्ति हस्ताक्षर भी करवाते हैं। बहरहाल इस क्षेत्र की वितरण शिकायत खत्म हो गई। आप सोचिये कि यदि श्री जोशी केवल मोबाईल पर हमें शिकायतें दर्ज करवाते रहते तो क्या इस समस्या का हल निकल जाता। उन्होंने स्वयं पहल की। पहले प्रेस पर आकर कम्प्यूटर पर सूची में अपना नाम पता चेक किया तथा वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पुस्तक यहां से प्रतिमाह भेजी जा रही है। डाक विभाग ही गड़बड़ कर रहा है। तब उन्होंने ऐसा कदम उठाया कि न केवल उनकी बल्कि पूरे क्षेत्र के सदस्यों की समस्या का समाधान हो गया। राऊ में भी डाक से पुस्तक समय पर नहीं मिलती थीं, यहां भी गिरिजाशंकर जी नागर ने बीड़ा उठाया। गांधी चौक पर ही उनकी आटा चक्की एवं अनाज की दुकान है, राऊ के सभी सदस्यों की 50 पुस्तकें प्रतिमाह श्री नागर तक हम पहुंचा देते हैं, कुछेक सदस्य तो निर्धारित दिनांक अनुसार दुकान से ही पुस्तक ले जाते हैं, बाकि जगह श्री नागर एवं उनके सुपुत्र श्री पवन नागर घर पहुंच सेवा दे देते हैं। एक बार फिर कहूंगी कि कभी-कभार एकाध बार का काम हो तो कोई भी कर दें, परन्तु प्रतिमाह नियमित यह काम माथाफोड़ी से कम नहीं है। श्री नागर ने अघोषित तौर पर यह सुविधा भी दे रखी है कि सदस्य प्रकाशन सामग्री भी उन्हें दे सकते हैं तथा वे एकत्र सामग्री को प्रेस तक पहुंचाने का काम भी करते हैं, इनमें समाजसेवा का कितना जज्बा होगा, स्वयं अपने खर्च पर पुस्तक का लाभ सभी लोगों तक पहुंचा रहे हैं। यहां खजराना के श्री योगेश शर्मा के नाम और काम का उल्लेख भी अत्यंत आवश्यक है। श्री योगेश शर्मा भी प्रतिमाह खजराना क्षेत्र के 50 से अधिक सदस्यों तक पुस्तक पहुंचाते हैं, इनकी भी श्रीगणेश मंदिर परिसर में दुकान है तथा कुछेक सदस्य वहां आकर पुस्तक ले लेते हैं, किन्तु ज्यादातर जगह श्री शर्मा को स्वयं जा कर घर पहुंच सेवा देनी पड़ती है। श्री शर्मा के पास भी प्रकाशन सामग्री एकत्र करने की सुविधा का लाभ सदस्यों को मिलता है। सेवाभाव की इस त्रिमूर्ति का जितना अभिनंदन किया जाए वह कम है, और उस सोच का भी जो इनका हमारे प्रति है, इन्होंने हमारी मजबूरी को देखा, समझा और हमारे सहयोग के लिए आगे आए, औरों की तरह फोन पर शिकायत करने के बजाय ऐसा कदम उठाया कि स्वयं के साथ अनेकों सदस्यों की समस्या का स्थायी निराकरण कर दिया। उज्जैन के श्री संजय संतोष जी जोशी का सहयोग भी प्रशंसनीय है, वे भी प्रतिमाह अतिरिक्त पुस्तकें मंगवाकर उन समाजजनों तक भेजने का कार्य करते हैं जिन्हें डाक में प्रति प्राप्त नहीं होती। ऐसे युवाओं के उत्साह और जोश की आज समाज को जरूरत है। पुस्तक का नियमित प्रकाशन ही अत्यंत कठिन कार्य है, उसे शासकीय डाक से ही भेजना हमारी मजबूरी है वही सबसे सस्ता विकल्प है। आप भी कोई ऐसी पहल करें कि समस्या का स्थायी समाधान हो सके।

- सम्पादक

नागर समाज
के गौरव
और
हमारे
प्रेरणा स्त्रोत

श्री प्रेमनारायणजी नागर

के यशस्वी जीवन के ४४ वर्ष पूर्ण
होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ
आपका आशीर्वाद हम सभी पर हमेशा बना रहे

शुभेच्छु - मनमोहन-रजनी नागर, सोहन-कुमुद नागर, दिलीप-नीता नागर
सुधा-कमलकान्त मेहता, आशीष, मोनिका, सरा, महिप, प्रीति, अदित,
रोहित, निधि, अर्जुन, दिशा, रवि, स्वाति, आदि, मयंक, श्रुति, नेत्रा, प्रियंक, प्रगति
रजत, शैलेश, सुजाता, कुहु, अमित, सुप्रिया, राधा, सौरभ, अदिति, यश,
एवं समस्त चाचौड़ा परिवार

पुनर्विवाह हेतु आत्मविश्वास का संचार

नागर ब्राह्मण समाज में टूट चुके वैवाहिक सम्बन्धों में नया मोड़ लाते हुए नए जीवन साथी को चुनने का अवसर प्रदान किया जाना मासिक जय हाटकेश वाणी का सतुत्य प्रयास है। हमारे समाज में जन्म पत्रिका का मिलान कर ही विवाह का रिवाज है, परन्तु अनहोनी के आगे सब बेबस है। जीवन की एकाकी यात्रा का अनुभव वही बता सकता है, जिसने उसे भोगा है। पुनर्विवाह नई शुरुआत नहीं है, ये समाज में होते रहे हैं। वैसे तो वाणी के विवाह प्रस्ताव की सूची में भी विवाह विच्छेद के पश्चात के प्रस्ताव आते रहते हैं। परन्तु जय हाटकेश वाणी के राष्ट्रीय मंच से आग्रह कर अवसर प्रदान करना टूटे परिवारों में आत्म विश्वास का संचार करने वाला सिद्ध होगा। नागर समाज में प्रचलित रीति रिवाजों में वैवाहिक सामंजस्य बनाए रखने हेतु विविध प्रावधान पहले से ही उपलब्ध है और समय-समय पर आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी होते रहते हैं। परन्तु सस्ती लोकप्रियता पाने की होड़ में सरकारी तंत्र ने ऐसे विघटनकारी प्रावधानों को जन्म दिया है, जिनकी नागर समाज को कदापि आवश्यकता नहीं थी। जोड़ी स्वर्ग में बनती है और सात जन्म तक रिश्ता निभाने, पति को परमेश्वरी मानने अथवा डोली पिता के घर से उठती है, पर अर्थी ससुराल से ही उठना चाहिए को आधुनिक परिवारों का हल्ला बोल समझ में आता है, परन्तु छोटी-छोटी बातों पर सम्बन्ध विच्छेद की धमकी, तलाक, घरेलू प्रताड़ना और दहेज प्रताड़ना की

शिकायतें मान्य नहीं की जा सकती। हमारे समाज में कन्यादान होता है, दक्षिणा के तौर पर भले ही कुछ दिया जाता हो, परन्तु उसे दहेज कदाचित नहीं कहा जा सकता। कंकू और कन्या हमारा मंत्र है। एक समय था जब बाल विवाह होता था, जोड़े परिवार की साख पर ही बनाए जाते थे। ऐसे में बांसवाड़ा नागर समाज में वर के परिजनों को विवाह के पूर्व स्त्रीधन के रूप में 40 तोला सोने के गहनों के साथ चांदी के परिधान भी देने की व्यवस्था की गई थी, जो विवाहिता के लिए अनहोनी की स्थिति में सुरक्षा का उपाय था, इसे विवाहिता के परिवार अपनी संतुष्टि तक अपने पास रखते थे। इसे वर्तमान में शिक्षा के प्रचार और जीवन बीमा की सुविधा के चलते शिथिल कर दिया गया है।

बांसवाड़ा नागर समाज ने आवश्यकतानुसार बदलाव कर वर-वधू पक्ष में अत्यधिक मधुर सम्बन्ध बनाने की शुरुआत की है आपसी व्यवहार एवं सम्मानस्वरूप दी जाने वाली भेंट में ध्यान रखा जाता है कि किसी को बुरा भला न लगे। आज दामाद ससुराल में प्रसंगों के दौरान पुत्रवत कार्य करता है। बांसवाड़ा से दूर अन्य शहर या विदेश में भी अपने सास-ससुर का माता-पिता की तरह स्वागत करता है। कानूनी मान्यता के बावजूद किसी पुत्री ने अपनी पैतृक सम्पति पर अपना हक नहीं जताया। लंबे समय से चली आ रही परम्परा कि कई पुत्रियों के होते हुए भी दम्पति अपने वंश से दत्तक पुत्र रखकर उसे सम्पति का वारिस बनाते थे। परन्तु बाहर के दत्तक पुत्रों को आचार्य मंडल का समर्थन नहीं मिला और अब पुत्रियां ही पिता की सम्पति की वारिस बन रही है। उत्तर क्रिया में आचार्य मण्डल का दामाद को अधिकार अभी नहीं मिल पाया है, परन्तु प्रस्ताव में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। व्यवस्था के लिहाज से पहली डिलेवरी की जिम्मेदारी कन्या पक्ष उठाता है, इससे बच्चा-जच्चा को भी सुविधा रहती है। प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं। वर्तमान में युवक-युवती आपसी समझ के आधार पर विवाह करते हैं। अतः रिश्ते टूटने की, संभावना न के बराबर है। हमारी परंपराएं, रीति रिवाज का कोई लिखित दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। कुछ दशक पूर्व डॉ. शंकरलाल जी त्रिवेदी ने इन्हें लिपिबद्ध कर हेमसुधा स्मृति ग्रंथ में प्रकाशित कराया है।

बांसवाड़ा से प्रमोदराय झा
मो. 8003063616

धार्मिक क्रियाएं एवं वैवाहिक संस्कार

जय हाटकेशवाणी के सितम्बर 2014 के अंक में श्री आर.के. शर्मा खंडवा का लेख धार्मिक क्रियाओं का वैज्ञानिक आधार बड़ा ही प्रेरणास्पद है। आज के युवा धार्मिक क्रियाओं को रूढ़ीवादी मानते हैं, किन्तु शर्माजी ने वैज्ञानिक आधार बताकर हिंदू समाज में प्रचलित धार्मिक क्रियाओं का महत्व प्रतिपादित किया है।

इसी क्रम में रमेश जी नागर ने विवाह संस्कार की पवित्रता को स्पष्ट करते हुए कहा कि आज हम पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में इस पवित्र संस्कार को शार्ट कर्ट कर विकृत कर रहे हैं, जो सर्वथा अनुचित है। विवाह संस्कार सही रस्मों से करने से हमारे जीवन में अच्छे संस्कार आएंगे तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा।

इन दोनों महानुभावों के लेख हिन्दू समाज को संस्कारवान बनाने की प्रेरणा देते हैं। धन्यवाद।

- चंचरलाल जोशी
बांसवाड़ा, राज.

सहयोग एवं प्रेरणा के लिए धन्यवाद

हमें जय हाटकेशवाणी का बेसब्री से इंतजार रहता है। इस पत्रिका से हमें अपने अभियान में सम्पूर्ण सहयोग मिलता है, तथा प्रेरणा भी। आपको इसके लिए धन्यवाद एवं विजयादशमी एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

सौ. लता महेश नागर
नलखेड़ा (आगर), 8085395760

एक शराबी ने दोस्तों की दावत का प्रोग्राम बनाया, और अपने ही घर से रात को बकरा चोरी किया!

रात को अपने दोस्तों के साथ खूब दावत का मजा लिया और सुबह जब घर पहुंचा तो बकरा घर में ही था!

INDIANFUNNYPICTURE.COM

यह देख उसने बीवी से पूछा "ये बकरा कहाँ से आया?"

बीवी बोली, "बकरे को मारो गोली, ये बताओ रात को तुम चोरों की तरह कुत्ते को कहाँ ले गए थें?!!

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

गांधी जयंती पर राष्ट्रपिता को
शत शत नमन्

महात्मा

davp 2220/13/0046/1415

दर्शन... हवन... और भजन

द्वितीय परिवार स्नेह मिलन सम्पन्न

दक्षिण भारत नागर ब्राह्मण परिवार स्नेह मिलन का तीन दिवसीय कार्यक्रम तिरुपति बालाजी में सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में दक्षिण भारत के अलावा अहमदाबाद एवं राजस्थान के नागरजनों ने धर्मलाभ लिया तथा हवन, भजन एवं दर्शन के चश्मदीद बने।

तिरुपति बालाजी में श्रृंगेरी शंकर मठ में नागरजनों के आगमन का सिलसिला 20 जून से प्रारम्भ हुआ, यहीं पर आमंत्रितों के ठहरने एवं भोजन का इंतजाम किया गया। 21 जून को सभी समाजजनों ने प्रभात दर्शन का लाभ लिया। प्रभात दर्शन के लाभार्थी श्री बाबूलाल पूनमचंदजी मंडवारिया वाले रहे। भगवान तिरुपति बालाजी के दर्शन के पश्चात हवन का कार्यक्रम किया गया, जिसके लाभार्थी श्री मदनलाल (महेन्द्र) पिताम्बर लालजी (जसवंतपुरा) रहे। इसी दिन संध्याकाल में भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य आतिथ्य महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 श्री रवीन्द्रचंद्र पुरी जी महाराज, निरिन्द्रानंदपुरी जी महाराज एवं महामंडलेश्वर 108 श्री रविचंद्र पुरी जी महाराज (पालनपुर) गौभक्त का प्राप्त हुआ तथा उनके मार्गदर्शक प्रवचनों से उपस्थितजन लाभान्वित हुए। कार्यक्रम में सभी समाजजनों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ तथा ठहरने, भोजन की उत्तम व्यवस्था रही। आयोजन में सभी सहयोगियों के नाम जय हाटकेश वाणी के जून 14 एवं सितम्बर 14 अंकों में प्रकाशित किए गए हैं। उपरोक्त स्नेह मिलन समारोह में सभी का सहयोग प्रशंसनीय रहा एवं आयोजन आशा से अधिक सफल रहा।

विजया दशमी पर गरबा विसर्जन

नागर ब्राह्मण समाज का गरबा विसर्जन रविवार शाम विजया दशमी पर सम्पन्न हुआ।

समाज की महिलाएं गरबा गाते हुए शाम को बोहरा कुण्ड पर पहुंची, जहां हजारों लोगों की मौजूदगी में गरबा विसर्जन हुआ। वहां पहले से ही देखने वालों का हुजूम लगा था।

विसर्जन के बाद हाटकेश्वर भवन में पारितोषिक वितरण हुआ। स्व. गिरीश दत्त मेहता की पुण्य स्मृति में मुख्य अतिथि कुसुम मेहता अलका मेहता और माधुरी मेहता ने विजेता युवतियों और महिलाओं को पुरस्कार बांटे। संचालन पीयूष पाचक ने किया।

लखनऊ में धार्मिक आयोजन

श्रावण के प्रत्येक सोमवार को श्री हाटकेश्वर नाथ मंदिर समिति लखनऊ के तत्वावधान में हर्षोल्लास के साथ भगवान हाटकेश्वरनाथ का पूजन, अभिषेक का आयोजन किया गया। प्रथम सोमवार को श्रीमती साधना (रोजी) एवं श्री प्रदीप नागर (दिल्ली) श्रीमती मलका - श्री दीपक दवे, श्रीमती कृष्णा एवं श्री राजेन्द्र अग्रवाल (शिवपुरी निवासी) ने प्रसाद व श्रृगार किया। द्वितीय सोमवार को श्रीमती कुसुम एवं कु. माधुरी दवे, श्रीमती आभा एवं अशोक मोहन नागर (बड़ौदा) श्री शिवेन, मालवीय (शिवपुरी निवासी) ने प्रसाद एवं श्रृगार कराया। तृतीय सोमवार को श्रीमती सुधा एवं श्री हरिहर राम नागर, श्रीमती पुष्पलता पंत एवं श्रीमती वीणा सेठ (शिवपुरी निवासी) ने प्रसाद एवं श्रृगार कराया। चौथे सोमवार को श्रीमती चित्रा एवं सुश्री नीरू नागर, श्री दिलीप नागर, श्रीमती श्यामा एवं श्री एम.एल. पंडया, श्रीमती कुमकुम एवं श्री अनूप मोहन नागर, श्रीमती रुचि एवं श्री विजय दवे ने प्रसाद एवं श्रृगार करवाया। भक्तिभाव के साथ किए गए पूजन-अर्चन से आनंद की वर्षा हुई।

मुंडारा में जल झूलनी मेला

धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों का त्रिवेणी संगम

भाद्रप्रद शुक्ल दसमी संवत 2070 4 सितम्बर भास्कर अरुण आभा के साथ अस्ताचल की ओर प्रस्थान करने की तैयारी में है। नागर समाज गोडवाड क्षेत्र के नागर बंधु मुंडारा जिला पाली (राजस्थान) की धर्मनगरी की पवित्र भूमि पर स्थित श्री चारभुजा जी (क्षीर सागर निवासी भगवान श्री विष्णु) के मंदिर पर अपनी-अपनी कार, मोटर सायकल व बस द्वारा जो भी साधन उपलब्ध हुआ से उससे आगमन प्रारंभ हुआ। यह सिलसिला अगले दिन तक जारी रहा। रात्रि को विशाल भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसके गायक विष्णुकुमार नागर एंड कंपनी सांडेराव जिला पाली (राज) रहे। भजन संध्या में ऐसा समाबंधा कि समाज बंधु देर रात तक भजनों का आनंद लेते रहे।

5 सितम्बर को खुले मंच का आयोजन किया गया। जिसमें कई विषयों पर चर्चा हुई। समाज के वती श्री चम्पालाल जी मोतीलाल ने समस्याओं का उचित समाधान उचित समय पर करने का आश्वासन दिया। युवक-युवती परिचय सम्मेलन का भी आयोजन हुआ, जिसमें काफी संख्या में युवक-युवतियों ने भाग लिया। इसी बीच मंदिर परिसर में उपयुक्त जगह पर मां महाकाली के मंदिर निर्माण की घोषणा की गई। जिसके निर्माण हेतु रूपये 2 लाख की घोषणा श्री देवीचंद जी घासीराम जी व 1 लाख रुपए की घोषणा श्री लक्ष्मीचंद जी सूरतींग जी निवासी रानी जिला पानी (राज) ने की। इसी बीच भगवान श्री चारभुजा जी पालखी के नगर भ्रमण की शोभायात्रा के लिए विभिन्न मदों के लिए बोलियां बोली गई, जिसमें समाज के सभी बंधुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मंच का संचालन श्री चम्पालाल जी मोतीलाल जी नारलाई वालों ने किया। बड़ी तैयारी के साथ दिन के ठीक 11 बजे भगवान श्री चारभुजा जी की पालखी शोभायात्रा की मंदिर परिसर से प्रस्थान ढोल, बाजे, नगाड़े, बैंड बाजे के दल व डीजे सिस्टम की मधुर ध्वनि के साथ हुआ। भगवान श्री चारभुजा जी को शोभा यात्रा के आगे आगे श्रंगार किया हुआ ऊट जिसकी पीठ पर

सुशोभित नगाड़ों की लयबद्ध ध्वनि नगर वासियों को यह संदेश दे रही थी कि भगवान श्री क्षीरसागर वासी चतुर्भुज नारायण का पदार्पण हो रहा है। उसके पीछे बैंड पार्टियां भी अपने वाद्ययंत्रों से भक्तिमय मधुर भजनों द्वारा भगवान के गुणगान करते हुए शनै: शनै: आगे बढ़ रहे थे। बैंड पार्टियों के साथ कौतुक घोड़ा भी अपने कला प्रदर्शन में पीछे नहीं रहा। घोड़ों की लम्बी कतार उन पर सवार लाभार्थी बन ठन बैठे थे उनकी छटा तो अनूठी आभाशित हो रही थी। युवा वर्ग भगवान श्री चारभुजा की पालखी के आगे आगे नाचते गाते भगवान के जयकारे लगाते हुए मस्ती में झूमते शनै: शनै: आगे बढ़ रहे थे। पालखी के पीछे मातृशक्ति कब पीछे रहने वाली थी। वे भी भक्ति में तल्लीन होकर मधुर स्वर में भजन कीर्तन करते हुए भगवान श्री की पालखी के साथ-साथ आगे बढ़ रही थी। सारी सड़क गुलाल से ऐसी पट गई थी कि मानो भगवान श्री के पदार्पण पर पूरे रास्ते गुलाब के फूल बिछा दिए गए हों। मुंडारा निवासियों ने जगह-जगह भगवान श्री की पालखी रुकवा कर पूजा अर्चना की व फलादि भगवान श्री को अर्पण किये। मुंडारा शिव मंदिर चौक पर स्थानीय श्री चारभुजा जी मंदिर की पालखियां भी शोभा यात्रा में सम्मिलित हो गई, जिससे शोभायात्रा का आकार ओर भी बढ़ गया। भगवान की शोभायात्रा का आकार ओर भी बढ़ गया। हर चेहरे पर अलौकिक मस्ती थी। सभी पालखिया तालाब के किनारे पहुंची। परम्परानुसार भगवान श्री चारभुजा जी का तालाब में जलाभिषेक करा पूजा अर्चना की गई तथा प्रसाद बांटा गया। गाजे-बाजे ढोल नगाड़ों की मधुर ध्वनि के साथ भगवान श्री चारभुजा जी का निज मंदिर में प्रवेश हुआ। जहां 108 दीपक वाली आरती से आरती उतारी गई। पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

रात्रि को बहुत उमंग व उल्लास के साथ बहुत ही भव्य सांस्कृतिक संध्या सजी, जिसमें बालक व बालिकाओं ने बढ़-चढ़कर अपनी अपनी प्रतिभा व कला का प्रदर्शन किया तथा सबको भामाशाहों द्वारा नकद पुरस्कार भी मिला। सभी दर्शकों का बहुत मनोरंजन हुआ।

6 सितम्बर भादवा शुक्ल द्वादशी को प्रात: 6 बजे से ही शिक्षा समिति के पदाधिकारी व सदस्य प्रतिभा सम्मान समारोह की तैयारी में व्यस्त हो गए।

पंडाल नागर बंधुओं, माता बहिनों व बालक बालिकाओं से खचाखच भर गया। समय पर समारोह का कार्यक्रम सरस्वती वंदना के साथ प्रारंभ हुआ। पश्चात शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी तेजराज, श्री लक्ष्मीचंद जी सूरतींग जी, श्री जीवराज जी फुसाराम जी व श्री हमीरमल जी ने दीप प्रकट किया। सबसे पहले पारितोष के भामाशाह श्री बाबूलाल जी नारायणलाल जी निवासी खुडाला जिला पाली का साफा शॉल ओढ़ा माल्यार्पण व नारियल भेंट कर सम्मान किया गया। तीनों दिनों के अल्पाहार व महाप्रसादी के लाभार्थियों का तथा दस हजार व उससे ऊपर की राशि भेंट करने वाले भामाशाहों का भी सम्मान किया गया।

समारोह में सभी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों (बालक-बालिकाओं) को अध्ययन उपयोगी पुरस्कार देकर सम्मानित किया। मध्यान्ह के महाप्रसाद के बाद जल झूलनी महोत्सव का विसर्जन हुआ। मंच का संचालन श्री चम्पालाल जी मोतीलाल जी नारलाई वालों ने बहुत ही रोचक ढंग से किया।

- दयाराम नागर
सुमेरपुर (राज.)

श्री हाटकेश्वर बचत एवं साख सहकारी समिति लि.

उच्च नैतिकता एवं भाईचारे की मिसाल

श्री हाटकेश्वर एवं साख सहकारी समिति लिमिटेड का 13वां वार्षिक अधिवेशन 23 अगस्त 2014 को श्री भेरवानंदजी की छत्री में श्री सिद्धनाथ मंदिर परिसर में आयोजित किया गया। कार्यकारिणी के चुनाव तो समिति के उपनियमों के अधीन पांच वर्ष में ही सहकारी समिति कार्यालय अलग से सम्पन्न करवाता है। परन्तु पारदर्शिता के लिहाज से यह वार्षिक समागम आयोजित किया जाता है, जिसमें 334 सदस्यों और उनके परिवारों को निमंत्रित किया गया। कई परिवारों से एक से अधिक सदस्य भी है, जिन्हें सहकारिता विभाग नियंत्रित करना चाहता है, जिसका सभी सदस्यों ने पुरजोर विरोध किया है, महिलाओं ने अपनी एक पृथक समिति भी बना ली है। परन्तु वह बहुउद्देश्यीय होने से इसमें टकराव की कोई स्थिति नहीं है। वर्तमान में हमारी हिस्सा पूंजी 8,03400 रू. हो गई है और मार्च 2014 तक जमा होने वाली जमाराशि 2949257 हो गई है, उसके विपरीत बकाया ऋण राशि 2620317 हो गई है, जिसमें 2013-14 के दौरान ही रू. 19,90,856 की ऋण वसूली हुई और रूपए 21,15000 के नए ऋण स्वीकृत किए गए। नए ऋण सदस्यों को संतान की उच्च शिक्षा, शादी विवाह, भवन निर्माण अथवा भवन की

मरम्मत एवं गृहोपयोगी वस्तुओं की खरीदी के लिए स्वीकृत किए गए हैं और 13 वर्ष के दीर्घकाल में ऋण वसूली शत-प्रतिशत रही है। जो सदस्यों और सम्बन्धित समाज की **उच्च नैतिकता और भाईचारे का प्रमाण रहा है।** अधिवेशन में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर के सेवानिवृत्त प्रधान खजांची और कवि श्री छगनलाल जी नागर को विशेष आमंत्रित के रूप में बुलाया था, उन्होंने सुझाव दिया कि इसमें प्रोडक्टिव कार्यों के लिए भी ऋण की व्यवस्था की जाए। सचिव श्री मधुसुदन झा ने अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार झा और उपाध्यक्ष श्री प्रमोदराय झा तथा सभी सदस्यों का समिति के संचालन में पूर्ण सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित किया और स्वल्पाहार के पश्चात कार्यवाही का समापन हुआ।

- मधुसूदन झा
सचिव, श्री हाटकेश्वर बचत एवं साख समिति लि. बांसवाड़ा (राज.)

हरिद्वार में प्रवचनों की वर्षा

दिल्ली के प्रसिद्ध जिंदल परिवार के संयोजन में सुश्री वर्षाजी नागर की भव्य श्रीमद् भागवत कथा 17 से 23 सितम्बर तक जयराम आश्रम नं. 3 में सम्पन्न हुई। भारी जनसैलाब ने कथामृत का लाभ लिया। उनकी आगामी कथा बेगूसराय (बिहार) में हुई।

मां की विश्व प्रसिद्ध आरती की रचना नागर रत्न शिवानंद जी ने की

सौराष्ट्र, गुजरात या मुंबई में ही नहीं पूरे विश्व में जहां पर भी नवरात्रि उत्सव होता है वहां पर जय आधा शक्ति आरती गाई जाती है। यह आरती आज से करीब 175 साल पहले सूरत के नागर विद्वान पंडित श्री शिवानंद जी पंड्या द्वारा लिखी गई। शिवानंद जी का जन्म सूरत के वड़नगरा नागर परिवार में हुआ था। शिवानंद जी के चाचा श्री सदाशिव जी पंड्या विद्वान थे और शास्त्र के ज्ञाता थे। शिवानंद जी के पिता श्री वामन देव जी के अवसान के बाद शिवानंद जी अपने चाचा श्री सदाशिव के पास रहने लगे। अपना अंतिम समय निकट आने पर सदाशिव जी ने अपने दोनों पुत्रों और भतीजे शिवानंद जी को

बुलाकर पूछा कि तुम्हें मेरे पास से क्या चाहिए? लक्ष्मी या सरस्वती। सदाशिव जी के दोनों पुत्रों ने लक्ष्मी मांगी और शिवानंदजी ने कहा कि मुझे तो सिर्फ आपका आशीर्वाद चाहिए। तब शिवानंद जी ने प्रसन्न होकर अपनी सारी विद्या और सिद्धि शिवानंद जी को अर्पण कर दी और आशीर्वाद दिया कि बेटा, पूरे विश्व में तेरा नाम होगा। शिवानंद जी ने भक्ति पूजन और शिव-शक्ति की आराधना में लीन रहते-रहते इस आरती की रचना की। जय आधा शक्ति, अखंड ब्रह्माण्ड दिपांया, पडवे प्रगटया मां जयो जयो मां जगदंबे।

-उषा ठाकोर, मुंबई

साहित्यकार अमृतलाल नागर की जयंती पर आयोजन

लखनऊ में 17 अगस्त 2014 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतलाल जी नागर की 98वीं जयंती के अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अपने संस्मरण सुनाने आए प्रमुख वक्ता बाएं से दाएं शाखा बंदोपाध्याय, प्रीति गुप्ता, योगेश प्रवीण, बीनू कलसी, चंद्रा कोर्नलस।

हिन्दू जागरण रैली का नेतृत्व ऋषि नागर ने किया

ऋषि नागर के नेतृत्व में सवाई माधोपुर (राज.) में हिन्दू समाज को जागरूक रहने के लिए रैली निकाली गई। 16 सितम्बर 2014 को आयोजित इस रैली में हिन्दू जनजागरण का बिगुल बजाया गया। इसमें लव जेहाद जैसे मुद्दों के लिए पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा गया। इस रैली में 2000 से अधिक स्थानीय नागरिक सम्मिलित हुए। रैली के समापन अवसर पर नागर समाज के ऋषि नागर एवं रोहित नागर ने हिन्दू समाज की एकता पर अपने विचार व्यक्त किए।

सास ने नई-नवेली बहू को घर की व्यवस्था समझाते हुए कहा, "देखो, मैं इस घर की गृहमंत्री हूं, लेकिन साथ ही वित मंत्रालय भी संभालती हूं ... तुम्हारे ससुर घर के विदेशमंत्री है। मेरा बेटा और तुम्हारा पति आपूर्ति मंत्री है एवं मेरी बेटी और तुम्हारी ननद योजना मंत्री है ... अब तुम ही बताओ, तुम कौन-सा विभाग लेना पसंद करोगी ...?"

बहू ने मुस्कुराते हुए तपाक से जवाब दिया, "जी, मैं तो विपक्ष में बैठूंगी ..."

कथाकार अनुराधाजी नागर का आभार

स्व0 उपेन्द्र शर्मा

बिहार के नागरजनों ने मालवा क्षेत्र की सुप्रसिद्ध कथाकार अनुराधा जी नागर का इस बात के लिए आभार व्यक्त किया है कि उन्होंने डॉ. प्रेम शर्मा के पिताजी श्री उपेन्द्र प्रसाद शर्मा के कर्मपूजा कार्यक्रम में 5 सितम्बर 2014 को गांव टेहई (खगड़िया) में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वे दरभंगा जिले के सुपोल कस्बे में 27 से अगस्त से 4 सितम्बर तक रामकथा हेतु बिहार में ही थीं। श्री उपेन्द्र प्रसाद शर्मा का 25 अगस्त 2014 को उनके गृह नगर खगड़िया में देहावसान हो गया। वे 70 वर्ष के थे। वे बिहार सेकेण्डरी स्कूल परीक्षा में गोल्ड मेडलिस्ट थे। एग्रीकल्चर कॉलेज भागलपुर से एमएससी करने के पश्चात कृषि विभाग में विभिन्न पदों पर रहे, उन्होंने डिस्ट्रिक्ट एग्रोनोमिस्ट के पद से वीआरएस से लिया था।

With Best Comliments From

Happy Diwali

PHILLIPS CARBON BLACK LTD.

31, Netaji Subhash Road,
KOLKATA-700001

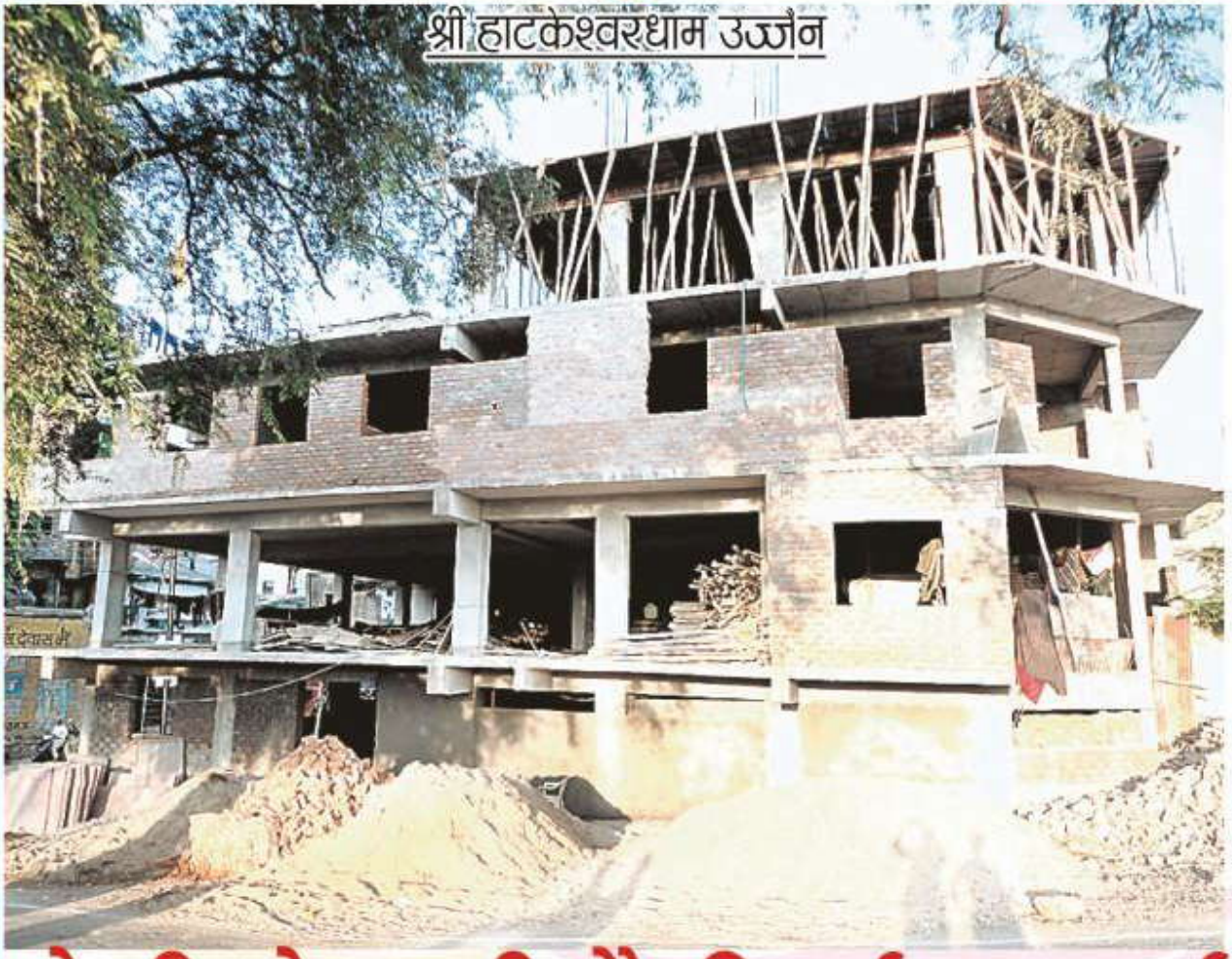

तेजी से जारी है निर्माण कार्य

उज्जैन में हरसिद्धि की पाल पर श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कार्य मालव माटी के वरद पुत्र पं. श्री कमल किशोर जी नागर के पूर्ण आशीर्वाद एवं संरक्षण में तेजी से जारी है। चौथी मंजिल की छत का कार्य प्रगति पर है। साथ ही तीन मंजिलों में दीवारें उठाना, प्लास्टर, बिजली फिटिंग आदि कार्य जारी है। सिंहस्थ 2016 के पूर्व इस भवन को समाज को समर्पित कर देने के प्रयास जारी है। इस अत्याधुनिक भवन को अत्यंत सुविधाजनक बनाया जा रहा है। इस पुनीत कार्य में समाजजन भी अपना आर्थिक सहयोग यथाशक्ति प्रदान कर सकते हैं। वे अपने शहर की निकटतम बैंक शाखा में भारतीय स्टेट बैंक कंठाल शाखा उज्जैन के खाता क्र. 32715150447 नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास के नाम पर जमा कर सचिव श्री संतोष जोशी मो. 9425917541 पर सूचित कर देवें, ताकि प्राप्त दानराशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

अन्नकूट महोत्सव नवम्बर में

उज्जैन में प्रतिवर्षानुसार नागर हाटकेश्वर मंदिर न्यास (हरसिद्धिपाल) एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में भगवान हाटकेश्वर को 56 भोग का अन्नकूट महोत्सव दीपावली के पश्चात नवम्बर माह में आयोजित किया जाएगा। यह आयोजन नवम्बर के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में किया जाना प्रस्तावित है। कार्यक्रम का विस्तृत विवरण स्थान, दिनांक एवं समय की जानकारी हेतु जय हाटकेश वाणी का नवम्बर अंक देखें। उपरोक्त अन्नकूट महोत्सव हेतु नागर हाटकेश्वर मंदिर न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता ने अपने पिताजी श्री गोवर्द्धनलाल मेहता एवं मातुश्री बसंतीबाई मेहता की स्मृति में 21000 रू. भेंट किए हैं।

ऐसा भी होता है

नागर समाज का संगठित, उत्साहपूर्ण, प्रगतिशील रूप यदि आपको देखना है तो बांसवाड़ा इसके लिए सबसे उपयुक्त स्थल है। समाजोत्थान के हर प्रयास का यहां के नागरजन आगे बढ़कर स्वागत करते हैं।

यहां के ज्यादातर नागरजन स्वयं पहल कर मासिक जय हाटकेशवाणी के सदस्य बने तथा अपनी गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के लिए निरन्तर सक्रिय रहते हुए श्री प्रमोदराय झा के नेतृत्व में नियमित रिपोर्टिंग करते हैं। श्री हाटकेश्वर धाम, उज्जैन में भी यहां के नागर समाज ने स्वयं आगे आकर सहयोग देने की मिसाल कायम की है। चूंकि मासिक जय हाटकेशवाणी में श्री हाटकेश्वर धाम के निर्माण के सम्बन्ध में खबरें प्रकाशित हो रही है, उन्हीं को देखकर स्थानीय नागरों ने धन संग्रह का अभियान स्वप्रेरणा से शुरू किया है। प्रारंभिक दौर में यहां के आठ सदस्यों ने एक-एक हजार रुपए एकत्र कर उसका चेक न्यास मंडल को भेज दिया है। न्यास मंडल के सदस्यों का बांसवाड़ा में धनसंग्रह दौरा अभी प्रस्तावित है, उसके पहले ही उत्साहजनक पहल वहां से हो चुकी है। वहां के सजग नागरिकों ने यह निवेदन भी किया है कि स्थानीय श्री केशवाश्रम जी की धर्मशाला में निर्माण कार्य चल रहा है, जिसके लिए स्थानीय निवासियों से ही धनसंग्रह किया जा रहा है, वहां छत डल चुकी है तथा एक-दो माह में कार्य पूर्ण हो जाएगा, उसके पश्चात सभी समाजजन श्री हाटकेश्वर धाम के लिए धनसंग्रह में जुट जाएंगे। खास बात यह है कि बांसवाड़ा में बड़ी संख्या में नागर परिवार निवासरत है, यदि वे एक समान राशि भी सब देते हैं तो कुल राशि बड़ी मात्रा में होगी। भगवान हाटकेश्वर सबका भला करें इसी आशा के साथ।

- संतोष जोशी

श्री हाटकेश्वर धाम में प्राप्त दानराशि की सूची

डॉ. मनोहरलाल शर्मा - बेरछा (स्मृति- स्व. श्री चुन्नीलाल जी शर्मा एवं श्रीमती अन्नपूर्णा देवी शर्मा एवं भाई स्व. श्री प्रकाशचंद शर्मा) -	25000
डॉ. जयदेव जी त्रिवेदी इंदौर -	11000
श्री महेश त्रिवेदी इंदौर -	2100
श्री अरविंद कुमार चम्पालाल जी दवे बांसवाड़ा -	1000
श्री प्रमोदराय दुर्गाशंकर जी झा -	1000
श्री परमेश्वर लाल मन्नालाल जी झा -	1000
श्री नटवरलाल लाभशंकर जी झा -	1000
श्री नरेन्द्र कुमार विजयशंकर जी मेहता -	1000
श्री सुभाषचंद्र नानिकराम जी त्रिवेदी -	1000
श्री कमल कुमार राधेलाल जी याज्ञिक -	1000
श्रीमती मणिकांता ललित किशोर जी दवे -	1000

राष्ट्रहित एवं समाजहित के उद्देश्य से

श्रावण मास में महारुद्राभिषेक सम्पन्न

सर्व कर्माणि सन्त्यज्य सुशान्तमनसो यदा।
रूद्राभिषेकं कुर्वन्ति दु:खनाशो भवेद ध्रुवम्।।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी श्रावण उत्सव समिति के संयोजक एवं आचार्य पं. राजेन्द्र प्रकाश व्यास के तत्वावधान एवं निर्देशन में श्रावण मास में रूद्राभिषेक का आयोजन भव्यता एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। समिति के संयोजक पं. राजेन्द्र व्यास ने बताया कि स्थानीय ए.बी. रोड किनारे स्थित फूलखेड़ी सरकार मंदिर पर प्रतिदिवस पूरे श्रावण माह में राष्ट्र एवं समाजहित में श्री जयेश्वर महादेव पर चार्तुमास उत्सव समिति द्वारा रूद्राभिषेक का आयोजन किया गया। जिसकी पूर्णाहूति 31 अगस्त रविवार को की गई। व्यास द्वारा पूरे श्रावण माह में प्रात: 6 से 8 पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। सतत् चार वर्षों से वह स्वप्रेरणा तथा गुरूदेव के आशीर्वाद से इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराते आ रहे हैं। इस आयोजन के लिए वह कोई भी दक्षिणा या शुल्क किसी से नहीं लेते हैं। गौरतलब है कि पवित्र श्रावण भादौ माह के दौरान आचार्य एवं संयोजक पं. राजेन्द्र प्रकाश व्यास के निर्देशन में समिति के सचिव पं. आनंद नागर, कोषाध्यक्ष पं. महेन्द्र मेहता (झोंकर) एवं अन्य यजमानों द्वारा प्रतिदिन पूरे श्रावण भादौ माह पर ब्रह्ममुहूर्त में विभिन्न द्रव्यों, दही, शहद, शर्करा, गंध, केसर, गंगाजल विभिन्न तीर्थधामों के पवित्र जल गौ दुग्ध, पंचामृत, घृत, विभिन्न उबटनों के रस, सरसों का तेल, द्रोब, कुशोदक, आमरस, गन्ने का रस एवं जलधारा द्वारा भगवान जयेश्वर महादेव के पवित्र शिवलिंग का रूद्राभिषेक किया जाता है। रक्षाबंधन के पवित्र पावन पर्व पर मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण युवा परिषद के अध्यक्ष पं. हेमन्त व्यास, उपाध्यक्ष पं. राजेन्द्र प्रकाश व्यास, पं. शैलेन्द्र व्यास, पं. आनंद नागर, पं. महेन्द्र मेहता, पं. गहन व्यास, पं. भरत व्यास द्वारा विशेष पूजन एवं अनुष्ठान कर लघुरूद्र का आयोजन किया गया।

अंत में पूर्णाहूति पर नियमित मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों एवं अभिषेक में भाग लेने वाले सभी को परिवार सहित कन्या एवं ब्राह्मण भोजन, महाप्रसादी एवं भंडारे के साथ इस श्रावण मास के अनुष्ठान का आयोजन सम्पन्न होता है। इस दौरान विशेष रूप से श्री वीरेन्द्र व्यास ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. हेमन्त दुबे, नागर युवक मंडल शाजापुर के अध्यक्ष पं. संजय नागर (शिक्षा), म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद के सचिव पं. आशीष नागर, पं. संजय नागर (पार्षद प्रतिनिधि), पं. विवेक शर्मा (एडवोकेट), पं. अजय व्यास (राम), पं. नवीन व्यास, पं. आनंद नागर, पं. महेन्द्र मेहता, मंजू नागर (पार्षद), मंजू संजय नागर (शिक्षा), पं. राजेश नागर (पत्रकार), श्रीमती तृप्ति नवीन व्यास, श्रीमती रत्ना राजेन्द्र व्यास, श्रीमती जया दुबे, कनिका नागर, पं. गहन नागर, पं. गहन व्यास, पं. भरण व्यास, सपना नागर, खुशी नागर ओजू नागर का भी प्रतिवर्ष विशेष सहयोग प्राप्त होता रहता है। ज्ञात रहे पं. राजेन्द्र व्यास म.प्र. नागर ब्राह्मण युवक परिषद के महासचिव भी रह चुके है तथा वर्तमान में उपाध्यक्ष पद का निर्वहन करते हुए समाज के रचनात्मक कार्यों के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। आभार पं. आनंद नागर ने माना।

- पं. राजेन्द्र प्रकाश व्यास
8120026200

श्री नागर को मिला न्याय... 1965 से मिलेगा उच्च श्रेणी शिक्षक का वेतनमान

म.प्र. नागर परिषद शाखा पीपलरावां के निवृतमान अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर देवास ने 21 अगस्त 14 को उच्च न्यायालय खण्डपीठ इन्दौर में म.प्र. शासन के विरुद्ध एक अभ्यावेदन प्रस्तुत किया था, जिसके 27 अगस्त 14 को दिये गये अपने निर्णय (निराकरण) में, श्री नागर द्वारा वर्ष 1965 में बीए 1968 में बीएड तथा 1975 में एमए (हिन्दी) की अहर्ताये अर्जित करने के परिणाम स्वरूप माननीय न्यायालय ने श्री नागर की वर्ष 1965 से पदोन्नति स्वत्व (वरीयता) स्वीकारते हुए उच्च श्रेणी शिक्षक वेतनमान प्रदान करते हुए वरीयता क्रम से प्रधानाध्यापक मा.वि., व्याख्याता एवं प्राचार्य हाई स्कूल के पद पर पदोन्नत करते हुए काम नहीं दाम नहीं के सिद्धांतानुसार तत्काल प्रभाव से पुनरीक्षित वेतन एवं पेंशन निर्धारण का आदेश शिक्षा विभागीय अधिकारियों को दिया है।

उल्लेखनीय है कि शिक्षा विभाग ने श्री नागर की पदोन्नति 1965 की अपेक्षा जुलाई 1987 से अर्थात 22 वर्ष पश्चात की थी, जिसके विरुद्ध उक्त अभ्यावेदन प्रस्तुत किया गया था। न्यायालयीन आदेश के परिपालन में जिला शिक्षा अधिकारी देवास ने भी 17 सितम्बर 14 अपना आदेश प्रसारित कर दिया है। एक जानकारी के अनुसार श्री नागर को लगभग पांच लाख रुपए नकद तथा तीन हजार रुपए से अधिक की वृद्धि पेंशन में होना अनुमानित है। प्रभुकृपा से श्री नागर को प्राप्त इस उपलब्धि पर नागर परिषद पीपलरावां के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल, म.प्र. नागर परिषद के निवृतमान अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास (शाजापुर) देवास के पूर्व अध्यक्ष श्री उपेन्द्र नारायण मेहता, म.प्र. नागर युवा परिषद के अध्यक्ष हेमन्त व्यास (उज्जैन), वरिष्ठ पत्रकार श्री सत्येश नागर (तराना) डॉ. श्री बालकृष्ण व्यास एवं निवृत्तमान व्याख्याता डॉ. श्री नरेन्द्र मेहता (दोनों उज्जैन) एड. श्री प्रमोद कुमार व्यास पीपलरावां, निवृत्तमान प्राध्यापक डॉ. रमाकांत नागर उज्जैन सहित अनेकानेक स्वजन एवं स्नेहीजन ने हर्ष व्यक्त करते हुए श्री नागर को बधाई प्रेषित की है।

श्री नागर के अनुसार ऐसे पात्र स्वजन शिक्षक बंधु जो उक्त विषय से लाभान्वित होना चाहते हैं, वे मुझसे सहयोग हेतु सम्पर्क कर सकते हैं 07272222822, 9425948177।

सौ. बिन्दुबाला मेहता
इन्दौर

मंदसौर में
श्री हाटकेश्वर धर्मशाला एवं छात्रावास का निर्माण जारी

मंदसौर में श्री हाटकेश्वर धर्मशाला एवं छात्रावास के निर्माण को लेकर समाज में भारी उत्साह का वातावरण है सर्व सुविधायुक्त बनाने वाली इस धर्मशाला निर्माण हेतु बढ़ चढ़कर दान दिया जा रहा है वर्तमान में चार मंजिल निर्माण कार्य जारी है इस पुनीत कार्य में आप सभी का तन मन धन से सहयोग व सुझाव आमंत्रित है। इस धर्मशाला में भगवान श्री हाटकेश्वर मंदिर में सभागृह छात्रो के रहने हेतु कमरे एवं कोचिंग हेतु हॉल एवं सामाजिक सांस्कृतिक मांगलिक व अन्य कार्यक्रम हेतु स्टेज लाइट डेकोरेशन कमरे (लेट बाथ सहित स्टोर रूम तलघर (बर्तन बिस्तर कुर्सियां आदि भोजनशाला, पंडित निवास, व्यवस्थापक ऑफिस, इत्यादि निर्माण कार्य लगभग पूर्णता की ओर हैं। धर्मशाला के आस पास की जमीन खरीदना प्रस्तावित है, निर्माण कार्य का अवलोकन करते हुए समाज के अध्यक्ष जयेश नागर, सचिव सतीश नागर एवं ट्रस्टी गोविंद प्रसाद नागर।

जयेश नागर, जिलाध्यक्ष 9893252869

उज्जैन में औषधीय पौधों का वितरण

नागर महिला मंडल की पदाधिकारियो द्वारा पर्यावरण के प्रति नगरवासियों को जागरूकता का संदेश देने की कामना से गतदिवस औषधीय पौधे का वितरण व्यास नगर में किया गया। इस दौरान श्रीमती शीला बेन व्यास, डॉ.अरूणा व्यास, श्रीमती नेहा मेहता, श्रीमती विजयलक्ष्मी नागर, श्रीमती वंदना मेहता, श्रीमती प्रीति शर्मा, श्रीमती राधिका व्यास, सुनिता त्रिवेदी, माला नागर परोत, रजनी नागर, संगीता नागर, कृष्णा त्रिवेदी, प्रमिला नागर, शीला नागर के साथ ही अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

म.प्र. नागर परिषद एवं महिला परिषद की बैठक

समाजसेवा में अहंकार सबसे बड़ा दुश्मन

म.प्र. नागर युवा परिषद एवं नागर महिला परिषद की प्रथम बैठक उज्जैन में परमेश्वरी गार्डन में सम्पन्न हुई, जिसमें सहयोग, सदस्यता एवं समन्वय इन बिन्दुओं पर कार्य करने की आगामी योजना तय की गई। हमारी प्राथमिकता है कि जल्द से जल्द समाज के लोगों को परिषद की सदस्यता दिलाई जाए, समाज के युवाओं के लिए कार्यशाला आयोजित करना, नृसिंह मेहता क्रिकेट प्रतियोगिता, इंदौर में आगामी समय में सामूहिक यज्ञोपवीत, प्रदेशभर में अभियान चलाकर युवाओं को समाज से जोड़ना, उक्त विचार नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमन्त व्यास एवं श्रीमती आभा मेहता ने व्यक्त किए। बैठक के दौरान कार्यकारिणी सदस्यों ने भी अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान म.प्र. नागर परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी टमटा का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता म.प्र. नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रेमनारायण नागर ने की तथा मुख्य अतिथि पं. विजय शंकर जी मेहता थे। मंच पर म.प्र. नागर परिषद के अन्य पदाधिकारी सर्वश्री योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमन्त त्रिवेदी, लव मेहता, महिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती आभा मेहता, सचिव श्रीमती मीना त्रिवेदी, बम्बाखाना धर्मशाला के अध्यक्ष डॉ. के.जी. नागर एवं हाटकेश्वर न्यास हरसिद्धि की पाल के अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता, डॉ. प्रदीप व्यास अध्यक्ष शाखा उज्जैन, जय हाटकेश वाणी के श्री दीपक शर्मा एवं हाटकेश्वर समाचार के सम्पादक श्री कुश मेहता सभी अतिथियों का पुष्पहार से अभिनंदन म.प्र. नागर युवा परिषद के अध्यक्ष श्री हेमन्त व्यास ने किया। परिषद के अन्य पदाधिकारियों ने भी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया।

मनोरंजन के साथ...

म.प्र. नागर युवा परिषद के अध्यक्ष श्री हेमंत व्यास के आयोजनों की खास विशेषता रहती है, वे प्रत्येक सामाजिक आयोजन में गीत-संगीत को अवश्य शामिल करते हैं, जिससे आयोजन में नीरसता नहीं आती। उन्होंने बैठक में सभी अतिथियों का स्वागत एक शानदार भजन से किया। जिसके बोल थे..... अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो, के दर पर सुदामा गरीब आ गया है..... महफिल जमने से पूर्व भी ट्रेक पर श्री मुकेश शर्मा ने मुकेश के नगमे पेश किए तथा अन्य गायकों ने समां बांधे रखा।

सुदामा गरीब क्यों?

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं जीवन प्रबंधन समूह के पं. विजय शंकर मेहता का सम्पूर्ण उद्‌बोधन समाजसेवकों के लिए प्रेरणादायी एवं उत्साहित करने वाला था, उन्होंने कहा कि समाज का काम करने वालों में अहंकार नहीं होना चाहिए... सबको साथ लेकर चलना, धैर्यवान होना तथा सहनशीलता के गुण पदाधिकारियों में बहुत आवश्यक है। जब सुदामा भगवान श्री कृष्ण से मिलने उनके भव्य महल में पहुंचे तो उनके पांव भगवान कृष्ण ने पखारे..... वे एक ब्राह्मण का सम्मान कर रहे थे... ब्राह्मण का मान हर जगह है... परन्तु जब सुदामा ने भगवान कृष्ण से अपनी गरीबी का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि एक बार मेरे हिस्से के चने तुमने खा लिए थे, भगवान या समाज का हिस्सा जो भी खाएगा वह दरिद्री ही होगा। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पर चर्चा करते हुए पं. मेहता ने कहा कि ज्यादा गहराई में जाने के बजाय मनुष्य को स्वधर्म के बारे में गंभीर रहना चाहिए तथा ऐसा प्रयास करें कि मोक्ष जीते जी हो जाए। समाज के लिए कार्य करते समय अहंकार की भावना नहीं आना चाहिए। कार्यक्रम में श्रीमती आभा मेहता, श्रीमती सोनिया मंडलोई एवं खुला मंच के तहत अनेक पदाधिकारियों ने अपने विचार खुलकर रखे तथा सफल संचालन हर्ष मेहता ने किया तथा आभार श्री विवेक नागर ने माना। कार्यक्रम समापन के पश्चात सुस्वाद भोजन के साथ खुशनुमा माहौल में सकारात्मक प्रतिक्रिया के बाद सभी अतिथियों ने बिदाई ली।

पारंपरिक गरबों पर झूमा नागर समाज

उज्जैन में मां दुर्गा के पर्व नवरात्री में वैसे तो पूरे नगरभर में विभिन्न स्थानो पर रंगारंग गरबो के आयोजन हो रहे है परंतु नागर ब्राह्मण समाज द्वारा शर्मा परिसर देवासरोड़ पर 25 सितंबर से 2 अक्टुबर 2014 तक रंगारंग गरबा (नागर डांडिया 2014) का भव्य आयोजन चल रहा है, जिसमें समाजजन परंपरागत रूप से गरबे रम कर माता की आराधना करने के साथ ही एकजुटता का परिचय भी दे रहे हैं।

कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए म.प्र नागर युवा मंडल के मीडिया प्रभारी निलेश नागर ने बताया कि म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद, नागर महिला मंडल, म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद, हाटकेश्वर देवालय न्यास बम्बाखाना एवं हाटकेश्वर देवालय न्यास हरसिद्धि के संयुक्त तत्वावधान में विगत 36 वर्षो से रंगारग गरबो का आयोजन किया जा रहा है। देवास रोड स्थित शर्मा परिसर में माता की स्थापना के साथ पारम्परिक गरबों का आयोजन किया जा रहा है, इसिलिए गरबों व ढोल की थाप पर पूरा पांडाल माता की आराधना में झूम रहे है। कार्यक्रम में शामिल होकर धर्मलाभ अर्जित करने और इसे सफल बनाने पर आभार डॉ.जी.के नागर,पं.राजेश त्रिवेदी (टमटा), डॉ.प्रदीप व्यास, पं. हेमन्त व्यास, योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमन्त त्रिवेदी, कुश मेहता, आशुतोष मेहता, दिलीप मेहता, कन्हैयालाल मेहता, सुधीर मेहता, संजय व्यास, डॉ.दिलीप नागर, प्रमोद त्रिवेदी(मामाजी),संजय बालकृष्ण नागर, विजय नागर, मधुसुदन नागर, विकास त्रिवेदी, विकास नागर, सतीश मेहता, सार्थक मेहता, संजय नागर, मनीष मेहता, डॉ.मनोज शर्मा, सुलभ शर्मा, दिनेश त्रिवेदी, दीपक लालशंकर नागर, महेश नागर, अर्पित त्रिवेदी,ओमप्रकाश नागर, शैलेन्द्र व्यास, दीपक मनमोहन नागर, मनोज त्रिवेदी, योगेन्द्र नागर, नितेश नागर, शुभम शुक्ला, सुदीप मेहता, सार्थक नागर, जयशंकर नागर, दिनेश नागर, अमित नागर, नितिन नागर भाटगली, वीरेन्द्र नागर, प्रमोद नागर, गिरीश मेहता, शैलेन्द्र नागर, सतीष जगदीशचंद नागर, विशाल मेहता, नितिन मेहता, शुभम रावल, प्रतीक नागर, श्रीमती आभा मेहता, श्रीमती नेहा मेहता, डॉ.अरूणा व्यास, डॉ.मधु नागर, वंदना मेहता, विभा मेहता, सुनिता नागर, डॉ.प्रीति शर्मा, शीला व्यास, संगीता नागर, कृष्णा त्रिवेदी,श्रीमती कविता मेहता, श्रीमती लीला नागर, श्रीमती सुनिता नागर, श्रीमती माया नागर,कु. साक्षी नागर व अन्य समाजजनों ने की है।

राज्य स्तरीय समारोह 24 एवं 25 दिसम्बर को उज्जैन में

प्रविष्टि भेजने की अंतिम दिनांक 15 नवम्बर 2014

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति के तत्वावधान में दो दिवसीय राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन उज्जैन में किया जावेगा। 24 दिसम्बर 2014 को समिति के संस्थापक नागर रत्न स्व. श्री विष्णुप्रसाद जी नागर की स्मृति में समिति की सांस्कृतिक इकाई अभिरुचि विकास मंच द्वारा सांस्कृतिक समारोह तथा 25 दिसम्बर 2014 को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जावेगा।

पुरस्कार के लिए चयन हेतु उज्जैन नगर के नर्सरी से कक्षा 8वीं तक एवं सम्पूर्ण म.प्र. के कक्षा 8वीं से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण तथा व्यावसायिक प्रदेश परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र अपनी अंकसूची की फोटोकापी भेजें। इस समिति द्वारा वर्ष 2013 तक 5 बार पुरस्कृत छात्र-छात्राएं आशा-विष्णु स्वर्णपदक हेतु वर्षभर पुरस्कारों की जानकारी सहित आवेदन पत्र प्रस्तुत करें। राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं भी अपने प्रमाण पत्र की छायाप्रति भेजें। अंकसूची पर अपना नाम, माता-पिता का नाम, पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल क्रमांक अवश्य लिखें।

पुरस्कार हेतु चयनित छात्र-छात्राओं की अंकसूची/प्रमाण का सत्यापन पुरस्कार से पूर्व किया जावेगा। अंकसूची भेजने की अंतिम दिनांक 15 नवम्बर 2014 है। अंक सूची निम्न पतों पर 15 नवम्बर 2014 के पूर्व भेजें-

1. रमेश मेहता प्रतीक अध्यक्ष, म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र समिति
530 सेठी नगर उज्जैन 0734-2521228, 9425093702
2. अभिमन्यु त्रिवेदी 'सत्यसुख', 191 सेठी नगर (बैंक ऑफ इंडिया के पीछे) उज्जैन मो. 9630111651

श्रीमती शारदा मेहता को साधुवाद

संजा पर्व की प्राचीन लोक परम्परा को श्रीमती शारदा नरेन्द्र मेहता ने पुनः धरातल पर लाकर साधुवाद का कार्य किया है। यह नागर समाज की ही नहीं भारतीय संस्कृति की झलक थी, जो आज विस्मृत होने के कगार पर है। बांसवाड़ा नागर समाज में पितृपक्ष में न केवल बालिकाओं का संजा का कार्यक्रम चलता था, वरन् पुरुषों का भी गोरधननाथ मंदिर में रंगों के समायोजन के साथ रंगोलीनुमा हांजी का प्रचलन था, जो ग्यारस से आरम्भ होकर पांच दिनों तक चलता था, जिसमें श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित झांकियां सजाई जाती थी। श्रीकृष्ण पेड़ पर बैठकर बांसुरी बजाते ग्वालबालों के संग आनन्द मनाते बंसीवट के दर्शन होते थे। दूसरे दिन चीरहरण का दृश्य जहां श्रीकृष्ण पेड पर सभी गोपियों के वस्त्र लेकर बैठे दिखाई देते हैं, वहां गोपियां जमुनाजी में नहाती हुई अपने वस्त्र लौटाने की मनुहार करती झाकी रहती है। तीसरा दिन रासलीला को समर्पित रहता था, जहां श्रीकृष्ण गोपियों के साथ गोल घेरा बनाकर रास खेलते दिखाई देते हैं। अंतिम दिन गोवर्द्धन धारी कृष्ण का होता था जो इन्द्र के प्रकोप से बचने के लिए पर्वत उठा लेते हैं और सभी मथुरावासियों को उसके नीचे बुला लेते हैं। रात को आरती के पश्चात कवित्त और हास्य सामाजिक कविता के वातावरण सराबोर रहता है। महिलाओं की संजा का कार्यक्रम तो गोबर से परहेज, दीवारों का रंगरोगन खराब होने का भय और मनोरंजन के अन्य साधनों की बहुतायत से बंद हो गए, हमारी पीढ़ी को उसकी निरन्तर याद आती रहती है, परन्तु पुरुषों और बच्चों की हॉजी अभी भी यथावत है, परन्तु पहले जैसा उत्साह छूमंतर हो गया लगता है। मनोरंजक कार्यक्रमों की बाढ़ में यह सांस्कृतिक विरासत बह नहीं जाए उसका भय सताता रहता है। संजा तू थारा घरे जा, कहते-कहते उत्साहपूर्ण परम्परा ही विदा हो गई, जिसकी स्मृतियां ही शेष है।

- श्रीमती मंजू प्रमोद राय झा नागरवाड़ा, बांसवाड़ा

उसका हर आंसू रामायण, प्रत्येक कर्म ही गीता है...

उज्जैन निवासी स्व. दुर्गाशंकर जी नागर की धर्म पत्नि श्रीमती प्रभावती नागर हमेशा जीवन भर अनेक मुसीबतों के साथ जीवन भर सेवा कार्य मे लगी रही। अपने किसी भी परिचित एवं रिश्तेदारो को पारिवारिक परेशानियों मे हमेशा सर्वत्र उनकी मुसीबतों मे हिस्सा लेने पहुच जाती है।

मामाजी स्व. दुर्गाशंकर जी नागर ने भी अपने मित्रो, परिचितों एवं रिश्तेदारों को अपने घर पर रखकर अपने पुत्रों के समान रखकर निस्वार्थ भाव से उनका जीवन संवारा एवं वर्तमान में वो सभी ऊंचे पदों पर है। मामी प्रभावती नागर ने भी उन्हें अपने बच्चो समान रखा एवं सभी को सच्चे मन से अपने पास रखा। मैं भी उनके पास करीब 5 वर्ष तक रहा उन्होने मुझे अपने लडको से भी ज्यादा प्यार दिया। उन्होने अपनी ननंद स्व. मनीबाई नागर का स्वास्थ्य दो वर्षो तक खराब रहा उनकी सेवा दो वर्षो तक की उनका शुगर के कारण एक पेर काटना पड़ा था। उनको बिस्तर पर से उठाकर उनकी निस्वार्थ भाव से सेवा की, बाद में उनकी देवरानी स्व. कान्ता नागर का स्वास्थ्य भी खराब रहा उनकी भी सेवा की। बाद में स्व. कृष्ण वल्लभ जी नागर का स्वास्थ्य खराब रहा उनकी भी सेवा की। बाद में स्वयं के पुत्र स्व. शिवेश नागर का भी एक वर्ष तक स्वास्थ्य खराब रहा स्वयं ने बडी हिम्मत के साथ अपने स्वयं के लड़के की सेवा की। स्वं. दुर्गाशंकर जी नागर की सन् 2003 में हार्टअटेक आने से मृत्यु हो गई। उस दुःख में भी हिम्मत रख कर सामना किया। सन् 2005 मे मेरी माताजी स्व. चन्द्रकान्ता नागर को पेरेलेसीस का अटेक आया उनकी भी करीब 5 वर्षो सेवा की। वे जब भी आती करीब एक महीने तक रूकती एवं सच्चे मन से सेवा करती थी। उनके भाई स्व. चन्द्रशेखरजी शुक्ल का स्वास्थ्य खराब रहा उनकी भी सेवा की सन् 2011 से मेरा भी स्वास्थ्य खराब रहा करीब 1 माह मेरे पास भी रही मेरे स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा एवं मेरा स्वास्थ्य ठीक होने के बाद ही अपने घर गई। इस तरह उन्होने जीवन भर निस्वार्थ भाव से जिस परिवार के ऊपर मुसीबत आती है, उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहती। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनका भविष्य उज्जवल हो एवं उनका परिवार भी हमेशा स्वस्थ एवं प्रसन्न रहे।

ओरो के हित जो मरता है,
ओरो के हित जो जीता है।
उसका हर आंसू रामायण,
प्रत्येक कर्म ही गीता है।

- मणीशंकर नागर
शाखा प्रबंधक, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक शाखा - हाटपीपल्या जिला देवास

खेद प्रकाश- हम संपादक मण्डल के सदस्य अत्यन्त क्षमाप्रार्थी हैं कि उपरोक्त मेटर माह सितम्बर की जय हाटकेश वाणी में श्रद्धावाणी में प्रकाशित हो गया। भूल को सुधार करते हुए इस अंक में मेटर को उपयुक्त स्थान देते हुए हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि श्रीमती प्रभावती नागर को वे दीर्घायू प्रदान करें।

म.प्र. नागर परिषद की प्रथम बैठक नरसिंहगढ़ में सम्पन्न

7 सितम्बर 2014 को नागर ब्राह्मण की प्रदेश स्तरीय कार्यसमिति की बैठक का आयोजन नगर नरसिंहगढ़ के गायत्री शक्ति पीठ मंदिर परिसर में रखा गया। कार्यसमिति की मीटिंग के पूर्व नरसिंहगढ़ शाखा का गठन एवं विधिवत अनुमोदन प्रदेश स्तरीय कार्यसमिति द्वारा किया गया। तहसील स्तरीय समिति में सर्व सम्मति से जगदीश चंद्र नागर को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष पद पर राजेन्द्र आचार्य सहित हद्धेश नागर कोषाध्यक्ष प्रेमनारायण नागर सह सचिव प्रदीप नागर कार्यालयीन सचिव राजू नागर सदस्यता प्रभारी हर्षल नागर (बिट्टू) को बनाया गया। ग्रामीण शाखा अध्यक्ष पद पर सोहम प्रकाश नागर ग्राम जामौन्या जौहार को नियुक्त किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम अध्यक्षता हेतु राजेश त्रिवेदी प्रान्ताध्यक्ष : मुख्य अतिथि दिनेश नागर राजगढ़ शाखा अध्यक्ष के मुख्य आतिथ्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजन रखा गया। सरस्वती वंदना कु. टीना नागर, प्रगृति मेहता, दिपाली नागर द्वारा प्रस्तुति की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम एकल नृत्य कु. स्मिता नागर द्वारा किया गया, जिसका सभी पदाधिकारियों द्वारा प्रशंसा की गई एवं प्रदेश स्तर पर उक्त नृत्य प्रस्तुति पर बालिका को पुरस्कृत किया जाएगा। इसी कार्यक्रम में गणपति वंदना श्रीमती मेघा शर्मा, कु. छाया शर्मा, कु. माया शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर नागर ब्राह्मण समाज शाखा नरसिंहगढ़ के वयोवृद्ध स्वजन ब्रजमोहन नागर ग्राम जामौन्या जोहार एवं सिद्धनाथ नागर ग्राम जामौन्या गणेश कासम्मान प्रदेश कार्यसमिति द्वारा किया गया। स्वागत भाषण पवन मेहता द्वारा दिया गया। इस अवसर पर मंच संचालन दिनेश शर्मा द्वारा किया गया। मंच संचालन से प्रसन्न होकर प्रान्ताध्यक्ष राजेश त्रिवेदी टमटा द्वारा शर्मा को राजगढ़ जिले का संगठन दायित्व सौंपा गया एवं नियुक्ति की घोषणा की गई। इस अवसर पर प्रदेश कार्यसमिति से हेमन्त त्रिवेदी, सुश्री शीला बहन व्यास, भेरूलाल मेहता, लव मेहता, गोपाल कृष्ण व्यास, श्रीमती नीता नागर, दिलीप मेहता, निलेश नागर, अरूण मोहनी कान्त व्यास, अमित नागर पंचौली, योगेन्द्र त्रिवेदी, मधुसुदन नागर, हेमन्त व्यास युवा शाखा अध्यक्ष, महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती आभा मेहता, कुश मेहता, प्रधान संपादक हाटकेश्वर समाचार मणीशंकर नागर, विनोद पारोणिक, सुश्री मंगला दवे, ममता नागर, मोहन शर्मा, विजय शर्मा, दीपक मेहता, दिनेश त्रिवेदी, प्रवीण नागर, प्रमोद त्रिवेदी, कन्हैयालाल मेहता, मनोहर लाल मेहता, संजय नागर एवं संरक्षक मण्डल के विरेन्द्र व्यास पूर्व प्रान्ताध्यक्ष कमलकांत मेहता, मनुभाई मेहता, मोहन नागर, प्रवीण त्रिवेदी, महेन्द्र नागर, आशीष त्रिवेदी, श्रीमती वत्सला बहन नागर, डॉ. श्रीमती निरूपमा नागर तथा ब्यावरा राजगढ़, अकलेरा, रतलाम के शाखा अध्यक्ष भी उपस्थित हुए। कार्यसमिति द्वारा कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु राजू नागर का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में विनोद मेहता, दिनेश शर्मा, पवन मेहता, जगदीश नागर, राजू मेहता, देवेन्द्र मेहता, डॉ. सत्यम नागर, हद्धेश शर्मा, डॉ. प्रदीप नागर, श्रीमती प्रतिमा मेहता, कैलाश शर्मा, राजू नागर (बबलू), प्रेमजी नागर, चितरंजन आचार्य, प्रेम नागर, पिंकू नागर, बिट्टू नागर, अशोक नागर, ओमप्रकाश नागर, रमेश चंद्र नागर, देवेन्द्र नागर, द्वारका प्रसाद नागर, मनोहर प्रसाद नागर, दुर्गाप्रसाद नागर, गिरीश नागर, श्रीमती अनिता देवी नागर, श्रीमती उमा देवी नागर, श्रीमती श्यामादेवी नागर, श्रीमती मधुदेवी मेहता, श्रीमती प्रतिभा मेहता, श्रीमती कांता देवी नागर, श्रीमती चित्रा देवी नागर, श्रीमती आशा देवी नागर, श्रीमती हेमा नागर, श्रीमती सुनीता देवी नागर, श्रीमती पुष्पादेवी नागर, श्रीमती आशा देवी नागर, श्रीमती सपना आचार्य, श्रीमती मंजू नागर, अजय नागर, विजय नागर, पंकज नागर, श्रीमती पूजा देवी नागर, दिनेश मेहता समस्त ग्रामीणजन उपस्थित थे।

रतलाम में नवदुर्गोत्सव हेतु बैठक

रतलाम महिला मंडल की सचिव श्रीमती प्रज्ञा दीक्षित ने बताया कि गरबोत्सव हेतु विशेष बैठक श्रीमती अनुराधा दवे के निवास पर आयोजित की गई, जिसमें 25 सितम्बर से 3 अक्टूबर 2014 तक नौ दिवसीय गरबा उत्सव के तहत विभिन्न ड्रेस कोड के साथ डांडिया रास, मटकी गरबा का आयोजन तय किया गया। बैठक में मंगला दवे, कल्पना मेहता, ज्योति मेहता, सुभद्रा मेहता, अमिता मेहता, रानी दवे, प्रज्ञा दीक्षित एवं कृष्णकांता व्यास उपस्थित थीं।

बधाई

सौ. लीना राजेश नागर

को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था जोबट जिला अलीराजपुर
में इंस्टीट्यूट मैनेजिंग कमेटी (आई.एम.सी.)
सदस्य मनोनित होने पर

हार्दिक बधाई

-बधाईकर्ता-

राजेश नागर, यशवंत भण्डारी, अजय रामावत, नीरज राठौर,
जयेन्द्र वैरागी, विपिन-ज्योति नागर, द्विजेन्द्र-वंदना व्यास,
अभिषेक-डिम्पल नागर एवं समस्त नागर व मेहता परिवार

जन्म वर्षगाँठ
पर बधाईयाँ

प्रतिभा (चिंकू)

सुपुत्री : महेन्द्र-सुनीता शर्मा
1 अक्टूबर

शुभाशीर्वाद एवं बधाईयाँ
समस्त शर्मा परिवार
माकड़ौन (उज्जैन)
मो. 94248-15705

फटे हाथ-पैरों की खास क्रीम

वामा™ क्रीम
www.anjupharma.in

फटी एड़ियां, खारवे, बिवाईयां,
रूखी त्वचा आदि के लिये अचूक क्रीम
आज ही खरीदें

मात्र ₹50/-

कृपया
अपनी सदस्यता
का नवीनीकरण
जल्द करा लेवें
व असुविधा से बचें

जय हाटकेश वाणी में
विज्ञापन के माध्यम
से अपने संस्थान
की पहचान देशभर
में बनाएँ

संपर्क-पवन शर्मा
9826095995

अधिकृत विक्रेता पम्प डिस्ट्रीब्यूटर
जी-1, बाबादीप कॉम्प्लेक्स, सियागंज, इन्दौर फोन: 9301530015

इंदौर में नवदुर्गोत्सव

म्हारी हुंडी सिकारो महाराज रे...

मप्र नागर परिषद शाखा इंदौर एवं म.प्र. नागर महिला मण्डल शाखा इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में रजत जयंती वर्ष का नवदुर्गोत्सव 25 सितम्बर से 3 अक्टूबर 2014 तक कंचनबाग उद्यान नं. 3 में सम्पन्न हुआ। इंदौर में आयोजित अन्य गरबोत्सव की अपेक्षा यहां भक्तिभाव एवं शालीनता का भाव अधिक रहता है, यही इस कार्यक्रम की बहुत खास विशेषता है। नागर समाज के विश्व प्रसिद्ध संत भक्त नरसी मेहता का सुप्रसिद्ध भजन म्हारी हुंडी सिकारो महाराज रे सांवरा गिरधारी... तथा अन्य गुजराती गरबा गायन के साथ पूर्णतः धार्मिक वातावरण यहां छाया रहता है। शहर भर में फैले समाजजनों की विशेष मांग पर इस वर्ष आयोजन स्थल शहर के बीचों-बीच कंचनबाग में रखा गया। उक्त गार्डन को सुविधाजनक ढंग से दिलाने में अध्यक्ष श्री जयेश झा का विशेष सहयोग रहा। नवदुर्गोत्सव के दौरान भक्तिभाव के साथ-साथ रविवार 28 सितम्बर 2014 को विभिन्न प्रतियोगिताओं रांगोली, श्लोक गायन, वाद-विवाद प्रतियोगिता में सभी आयुवर्ग के सदस्यों ने हिस्सेदारी की। 2 अक्टूबर 2014 को दोपहर में महाष्टमी के अवसर पर हवन किया गया तथा रात्रि में समाजजनों ने महाआरती की। जिसके लिए महिला परिषद की अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई ने बताया कि उक्त कार्यक्रम हेतु मंडल की सदस्यों ने एक माह तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। महाआरती में महिला परिषद द्वारा आरती की थाल सजाकर प्रतिभागिता प्रदान की। इस बार नवमी एवं दशहरा साथ होने से महानवमी एवं दशहरा मिलन का संयुक्त आयोजन हुआ। नवदुर्गोत्सव के दौरान पूरे नौ दिनों तक प्रतिदिन समाज के वरिष्ठजनों द्वारा गरबा पश्चात दूध एवं खिचड़ी का वितरण कराया गया।

इस वर्ष गरबोत्सव को सौहार्दपूर्ण ढंग से विस्तार करने की सृष्टि से उज्जैन से म.प्र. नागर महिला परिषद की अध्यक्षा श्रीमती आभा मेहता के नेतृत्व में उज्जैन के सदस्यों ने इंदौर आकर तथा इंदौर के सदस्यों ने उज्जैन जाकर गरबोत्सव में हिस्सा लिया। आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी समाजजनों का आभार अध्यक्ष जयेश झा, उपाध्यक्ष हर्ष मेहता, हिमांशु पुराणिक, सचिव राजेन्द्र व्यास, कोषाध्यक्ष पुरुषोत्तम जोशी, सहसचिव प्रदीप मेहता, योगेश शर्मा, महिला शाखा अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई, उपाध्यक्ष श्रीमती उषा दवे, श्रीमती गायत्री मेहता, सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई, सहसचिव डॉ. रेणुका मेहता, कोषाध्यक्ष श्रीमती अरुणा व्यास, संयोजक श्री आशीष त्रिवेदी, डॉ. नीलेश नागर, श्रीमती पल्लवी झा, श्रीमती दिव्या मंडलोई, श्रीमती पल्लवी व्यास, विनीत नागर, केदार रावल, नितिन नागर, सुमित व्यास, भावेश रावल, सौरभ व्यास, भावेश शुक्ल आदि ने व्यक्त किया।

पीयूष नागर राष्ट्रीय फुटबाल टीम में

चि. पीयूष नागर (सुपुत्र-सुधीर नागर मकोडिया आम, उज्जैन) को दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय स्पर्धा के लिए बतौर गोल कीपर चयनित किया गया है। चि. पीयूष केन्द्रीय विद्यालय में 11वीं कक्षा में अध्ययनरत हैं। नीमच में हुई राज्य स्तरीय फुटबाल प्रतियोगिता में प्रदेश की 19 टीमों के 342 खिलाड़ियों में से 18 खिलाड़ियों का चयन हुआ है, जिसमें उज्जैन के चि. नागर भी हैं। पीयूष नागर ने 7 से 9 अगस्त को नीमच में आयोजित फुटबाल स्पर्धा में केंद्रीय विद्यालय फुटबाल टीम में गोलकीपर के रूप में भाग लिया। निर्णायकों ने गोल बचाने की उनकी तकनीक से प्रभावित होकर राष्ट्रीय टीम में उनका चयन किया है। आगामी फुटबाल राष्ट्रीय स्पर्धा में प्रदेश की टीम में गोलकीपर के रूप में प्रदेश की टीम में गोलकीपर के रूप में शामिल होंगे। बधाई।

प्रेषक- सत्यनारायण नागर, उज्जैन
मो. सुधीर नागर 9826170040
पीयूष नागर 9098661777

सुश्री कृति नागर सीए बनीं

अहमदाबाद। सुश्री कृति नागर ने इंस्टीट्यूट ऑफ़ चार्टर्ड एकाऊनटेन्ट्स ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित सीए परीक्षा पास कर ली है। उन्होंने परीक्षा के सभी स्तरों में पहले प्रयास में सफलता अर्जित की। सुश्री कृति ने गुजरात यूनिवर्सिटी से बी.कॉम. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर प्रावीण्य सूची में 13 वां स्थान भी प्राप्त किया है। मेधावी छात्रा के रूप में कृति गुजरात माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हाई स्कूल की परीक्षा 90 प्रतिशत तथा हायरसेकण्ड्री की परीक्षा 88 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण कर चुकी हैं। वे श्री मनोज नागर एवं सौ. मनीषा नागर की सुपुत्री तथा देवास के पूर्व सहायक शाला निरीक्षक स्व.श्री रमाकांत नागर एवं श्रीमती शैलबाला नागर की सुपौत्री और शिवपुरी के श्री कैलाशचंद्र मेहता व स्व. श्रीमती अनुसुईया मेहता की नातिन हैं। मूलतः मध्यप्रदेश के मालवांचल के नागर ब्राह्मण समाज से महिला सीए बनने वाली वे पहली युवती है। उनकी इस सफलता पर परिवारजनों तथा स्नेहीजनों ने बधाई देते हुए सुखद भविष्य की कामना की है।

श्रीमती नागर को मास्टर ऑफ आर्ट्स की उपाधि

श्रीमती विनीता पं. सुनील नागर उज्जैन को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा ज्योतिष फलित एवं गणित विषय की मास्टर ऑफ आर्ट्स की उपाधि म.प्र. के राज्यपाल श्री रामनरेश यादव द्वारा प्रदान की गई।

- प्रेषक संतोष जोशी, उज्जैन

चि. सुयश म.प्र. कबड्डी टीम में

चि. सुयश नागर (सुपुत्र सौ. संगीता-गजेन्द्र नागर) सुपौत्र सौ. विद्या-गेंदालाल जी नागर) का चयन म.प्र. की अंडर-17 वर्ग की शालेय टीम में हुआ है। उनका चयन पिछले दिनों शाजापुर में सम्पन्न राज्य स्पर्धा में उम्दा प्रदर्शन के आधर पर हुआ है। उक्त स्पर्धा में इंदौर संभाग की टीम ने स्वर्ण पदक जीता। तिलोकचंद विद्यालय में कक्षा दसवीं में अध्ययनरत चि. सुयश अब पश्चिम गोदावरी (आंध्रप्रदेश) में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में होने वाली राष्ट्रीय स्पर्धा में म.प्र. टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे।

- पवन शर्मा, इंदौर

कु. कृष्णा को शैक्षणिक सुयश

कु. कृष्णा (सुपुत्री- सौ. वर्षा-नरेश नागर, बैंगलोर (सुपौत्री- सौ. चंद्रकला दयाराम नागर, सुमेरपुर) ने कक्षा 7वीं से कक्षा 8वीं में 86 प्रतिशत अंकों के साथ प्रवेश किया। बधाई

कु. दर्शना को सुयश

कु. दर्शना (सुपुत्री- सौ. वर्षा नरेश नागर) सुपौत्री सौ. चंद्रकला दयाराम नागर सुमेरपुर (राज.) ने 98.7 फीसदी अंकों के साथ कक्षा 5वीं से 6वीं में प्रवेश किया। बधाई।

अभिषेक नागर का तीन कम्पनियों मे चयन

मंदसौर-अभिषेक नागर पिता सतीष नागर माता श्रीमति निर्मला नागर (सचिव म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद) हाटकेश्वर न्यास मंदसौर के पुत्र जो देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर में बी.ई. (आई.टी.) अंतिम वर्ष में अध्ययनरत है का चयन आई.टी. क्षेत्र की भारत की मानी हुई तीन प्रमुख कंपनियो, इंफोसिस, वीप्रो, एंव कोंगनीजेट में चयन हुआ है। अभिषेक शुरु से ही मेधावी छात्र है इन्हें म.प्र नागर ब्राह्मण परिषद उज्जैन एवं मंदसौर द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में इनकी पूर्व में उपलब्धियों पर पुरुस्कृत किया गया है।

अध्ययन हेतु कुणाल विदेश रवाना

बेरछा। शाजापुर जिले के ग्राम बेरछा निवासी व सेवानिवृत्त शिक्षक पं. शिवनारायणजी शर्मा के पौत्र तथा पं. मनोज शर्मा के पुत्र कुणाल शर्मा एम.बी.ए उद्यमिता के कोर्स करने हेतु एमिटी युनिर्वसीटी यु.ए.ई. के लिए इंदौर से रवाना होने पर परिवारजन, इष्ट मित्रों तथा बेरछा नागर समाज की ओर से उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना कर बधाई दी।

-शक्ति शर्मा, बेरछा मण्डी

प्रतिभावान युवा अंकित शुक्ल

बचपन से ही संगीत एवं क्रीड़ा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर राष्ट्रीय स्तर तक पुरस्कार एवं सम्मान पाने वाले प्रतिभावान युवा है अंकित शुक्ल। नागर ब्राह्मण समाज के प्रतिष्ठित आचार्य पं. कैलाश जी शुक्ल - सौ. कल्पना शुक्ल उज्जैन के ज्येष्ठ सुपुत्र अंकित शुक्ल ने नौ वर्ष की आयु में ही खोखो, जिमनास्टिक, योग आदि में अभ्यास आरम्भ किया। लोकमान्य तिलक विद्यालय परिसर उज्जैन में अनवरत अभ्यास करने के पश्चात भारत के अनेक राज्यों में अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। खो-खो में राष्ट्रीय स्तर पर विक्रम विश्वविद्यालय के लिए कैप्टनशिप की। युवा एवं खेलकूद कल्याण विभाग म.प्र. ने सन् 2012 में सम्मानित किया। राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर क्रीड़ा के क्षेत्र में श्री अंकित शुक्ल के प्रदर्शन एवं योगदान की सराहना की गई। 26 वर्षीय युवक अंकित ने खेलकूद के साथ ही संगीत के क्षेत्र में भी कीर्तिमान स्थापित किया है। सात वर्ष की आयु में ही ढोलक बजाना शुरू किया था। धीरे-धीरे तबला, ड्रम, कॉंगों आदि वाद्य यंत्रों पर अभ्यास किया। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर गायन एवं वादन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चयनित हुए तथा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला का प्रदर्शन किया। सन् 2010 में यूथ फेस्टिवल मुम्बई में राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हुए। खो-खो खेल के लिए एक जोशीले गीत की रचना की, जिसके बोल हैं- दो घर की दौड़ है। सन् 2012 में मुम्बई में आयोजित खो-खो की अन्तर विश्व विद्यालयीन प्रतियोगिता में इस गीत की लाइव प्रस्तुति दी, जिसे लोगों ने बहुत सराहा। अब इस गीत के वीडियो पर भी ये कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में वाराणसी (बनारस) में स्थित रेडियो मंत्रा में प्रोमो प्रोड्यूसर के पद पर कार्यरत हैं। इसके पूर्व इन्होंने बिग एफएम में कार्यरत म.प्र. के सर्वश्रेष्ठ साउण्ड इंजनियर श्री सौरभ मेहता जो इनके जीजाजी है, से विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री अंकित शुक्ल लसुडिया ब्राह्मण निवासी पं. शिवनारायण जी शुक्ल स्व. श्रीमती पद्मावती शुक्ल के पौत्र एवं ग्राम मड़ावदा निवासी स्व. पं. स्वरूपनारायण जी मेहता - स्व. श्रीमती कमला देवी मेहता के नाती एवं श्री दीपक मेहता के भानजे हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों एवं नागर ब्राह्मण समाजजनों ने युवा प्रतिभा अंकित शुक्ल के खेलकूद एवं संगीत के क्षेत्र में योगदान की सराहना की। यह अप्रतिम प्रतिभा ईश्वरी वरदान तो है ही किन्तु बाल्याकाल से ही निहित प्रतिभा को उजागर करते हुए अपनी लगन, उत्साह एवं परिश्रम के द्वारा उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त की।

नेहा शर्मा विदेश प्रवास पर

श्रीमती नेहा पति श्री लोकेश शर्मा (पुत्री सतीश श्रीमती निर्मला नागर) मंदसौर बी.ई.(सी.एस) अपनी कंपनी जिसमे वे कार्यरत है एटोस लिमिटेड पूना द्वारा आगामी 3 माह के लिये कंपनी के कार्यो हेतु दुबई दिनांक 20 सितम्बर को मुबई से विमान से रवाना हुई। कुमारी नेहा सदैव शिक्षा एवं अन्य गतिविधियो मे सदैव अग्रणी रही है। नागर परिषद उज्जैन एवं मंदसौर द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोहो मे इन्हे प्रथम पुरस्कारो से पुरूस्कृत किया गया है।

कु. कृतिका को सुयश

कु. कृतिका नागर (सुपुत्री श्रीमती साधना स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद नागर) ने उत्कृष्ट विद्यालय झाबुआ से 12वीं बोर्ड परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफलता अर्जित की। कु. कृतिका के उज्जवल भविष्य हेतु सभी शुभचिन्तकों की ओर से असीम शुभकामनाएं।

चि. विपिन नागर
11 अक्टूबर
चि. द्विजेन्द्र व्यास
24 अक्टूबर
बधाईकर्ता- राजेश नागर, सौ. लीना नागर झाबुआ

दीपिका नागर
4 सितम्बर
शुभेच्छु : नागर परिवार देवास, 9827678692

02-10-14	कु. स्नेही (खुशी) तिवारी	(7 वर्ष)
15.10.14	कु. सोम्या (डिम्पी) जोशी	(8 वर्ष)
25.10.14	कु. वन्या (अवि) जोशी	(4 वर्ष)

जोशी, नागर, तिवारी, जाधव परिवार
- पी.आर. जोशी, इंदौर

कु. वाणी नागर

सुपुत्री-सौ. सीमा-नवीन नागर
23 सितम्बर
शुभाकांक्षी-समस्त नागर एवं मेहता परिवार
तराना, उज्जैन, मक्सी, इंदौर

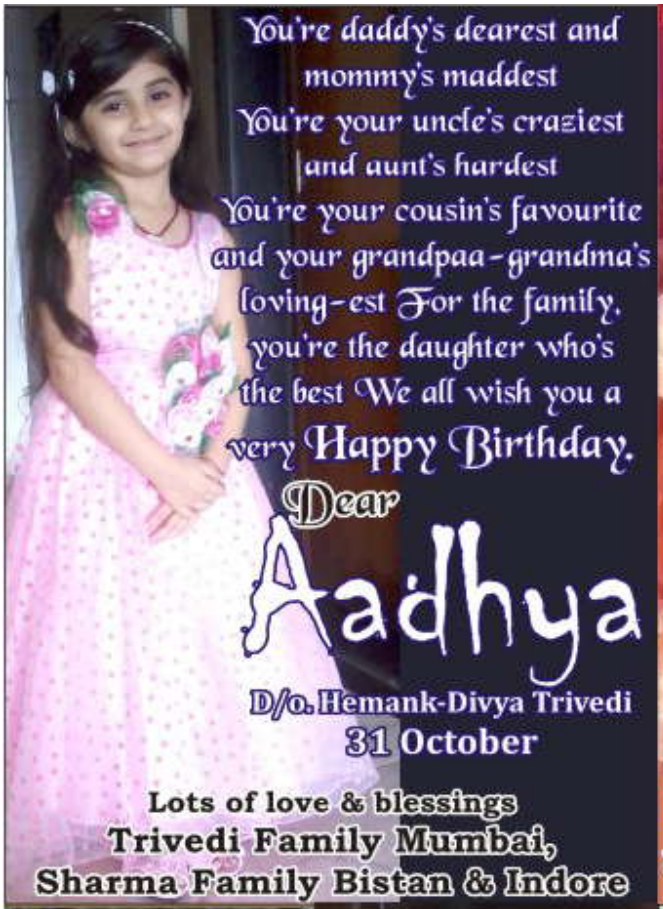
You're daddy's dearest and
mommy's maddest
You're your uncle's craziest
and aunt's hardest
You're your cousin's favourite
and your grandpaa-grandma's
loving-est For the family,
you're the daughter who's
the best We all wish you a
very Happy Birthday.
Dear
Aadhya
D/o. Hemank-Divya Trivedi
31 October
Lots of love & blessings
Trivedi Family Mumbai,
Sharma Family Bistan & Indore

प्रथम जन्मदिवस
पर ढेर सारा
आशीर्वाद,
शुभकामना
धन्या
(सुपुत्री : अंकुश-राधिका त्रिवेदी)
21 अक्टूबर 2014
आशीर्वाददाता-
परमपूज्य गीता भागवत डॉ. स्वामी दिव्यानंदजी महाराज 'भिक्षु'
(तपोवन हरिद्वार) भगवतीदेवी त्रिवेदी (परदादी),
कमलेश-उषा त्रिवेदी (दादा दादी),
एम.के.त्रिवेदी-कविता त्रिवेदी (छोटे दादा-दादी), चाचा, भुआ, नानी, मौसी,
मामा एवं समस्त त्रिवेदी एवं मेहता परिवार उज्जैन, इंदौर (मो.9977891389)

तृतीय
जन्मदिन
पर
शुभाशीर्वाद
आध्या
(15 अक्टूबर)
उमाशंकर नागर-सौ. चारुमित्रा (दादा-दादी)
सुरेशजी-सौ. केसरबाई नागर (नाना-नानी)
रितेश-सौ. ऋधिमा नागर (पापा-मम्मी)
आरव (भाई), विनय (काकू)
एवं समस्त परिवार, खजराना, इन्दौर
मो.9826667059, 98934-50576

प्रथम
जन्मदिन
पर
शुभाशीर्वाद
चि.राघव
सुपुत्र-छाया-शरद नागर
(16 अक्टूबर)
आशीर्वाददाता
दादी-दादा-प्रेमलता-प्रदीप नागर
नानी-नाना-शांतिदेवी-राजेन्द्र नागर, ब्यावरा
भुआ-फुफाजी, चाचा, मामा, मौसी-मौसाजी
एवं समस्त नागर परिवार, खजराना व सुतारखेड़ा (देवास)
मो. 9009303201

वैवाहिक युवक

चि. दिपेश रमेशचंद्र नागर

जन्म दि. 29.08.1988
समय- 6.24 पीएम, बांसवाड़ा (राज.)
शिक्षा- एम.टेक (फायनल ईयर)
कार्यरत : राजस्थान रोडवेज (डूंगरपुर)
सम्पर्क- बांसवाड़ा, 7597226882

आशीष अतुल शंकर नागर

जन्म दिनांक- 22.02.1989
कार्यरत- न्यूज इंडिया चैनल
पैकेज- 2.6 लाख (ईयरली)
सम्पर्क- जयपुर, 9928941725

विवेक प्रदीप मेहता

जन्म दि.-24.07.1988
समय- 12.25एएम, खंडवा
शिक्षा-बी.टेक मैकेनिकल इंजीनियर
कार्यरत- बिनानी सीमेंट प्लांट (सिरोही)
सम्पर्क- बूंदी (राज.), 9829661688, 07597747774

आनंद शर्मा स्व. छगनलाल दशोरा

जन्म दि. 20.07.1978
समय- 00.30एएम, उदयपुर
शिक्षा-बी.कॉम
कार्यरत- डिस्ट्रीब्यूटर (केस्ट्रॉल इंडिया लि.)
मासिक आय- 50000, 9772212214

संदीप बालाराम नागर

जन्म दि.-12.03.1994
समय- प्रात: 04.24 आगर तह. शामगढ़
शिक्षा-10वीं
कार्यरत- कृषि व्यवसाय, भूमि 7 हेक्टेयर
सम्पर्क- 8120372328, 9165330370

अमित दुर्गादत्त दशोरा

जन्म-16.07.1985 जोधपुर (राज.)
शिक्षा-बीकॉम, एमकॉम (एबीएसटी)
एमबीए (फायनेंस)
कार्यरत- एचडीएफसी बैंक
वार्षिक पैकेज-3 लाख, 0141-2785910

नवीन रामप्रसाद शर्मा

जन्म दि. 10.05.1990
समय- 10.45 पीएम इंदौर
शिक्षा- बीसीए, एमबीए द्वितीय वर्ष
कार्यरत- होटल सयाजी
सम्पर्क- इंदौर, 9713989986, 7354684902

विपुल अशोक दशोरा (मांगलिक)

जन्म - 18.03.1986 जयपुर (राज.)
शिक्षा-बी.कॉम, एम.कॉम (फायनेंस)
कार्यरत- इंफोटेल साल्यूशन गुड़गांव
वार्षिक आय- 5 लाख प्लस
सम्पर्क- मो. 9414889589, 9414889588

हंसगुल्ले

टीचर- तुम बड़े होकर क्या करोगे?
स्टूडेंट-शादी।
टीचर-नहीं मेरा मतलब है क्या बनोगे।
स्टूडेंट-दूल्हा
टीचर-ओहो मेरा मतलब है बड़े होकर क्या हासिल करोगे?
स्टूडेंट-दुल्हन
टीचर-अबें मतलब बड़े होकर मम्मी-पापा के लिए क्या करोगे?
स्टूडेंट-बहू लाऊंगा।
टीचर-कमबख्त... तुम्हारे पापा तुमसे क्या चाहते हैं?
स्टूडेंट-पोता
टीचर-हे भगवान, अबे जिंदगी का क्या मकसद है?
स्टूडेंट-हम दो हमारे दो।

वैवाहिक युवती

कु.सृष्टि रामप्रसाद शर्मा

जन्म दि. 24.04.1995
समय-2.30 दोपहर, इंदौर
शिक्षा-पॉलिटेक्नीक डिप्लोमा 12वीं सिविल कार्यरत
कार्यरत- क्राफ्टमेन सिविल
सम्पर्क- इंदौर, 9713989986
7354684902

लक्ष्मी स्व. प्रदीप नागर

जन्म दिनांक-
12.09.1980/12.31एएम/बनारस
शिक्षा-एमएससी, बीएड, अध्यापिका बनारस
20,000 प्रतिमाह
9839447258

आस्था रवि दवे

15.02.1988
बी.टेक (आय.टी.), एनआईटी (एमएसीटी)
कार्यरत- एमएनसी (बैंगलूर)
राजेश दवे 9425606893
सुधीर व्यास 9822530580

दिशा राजेन्द्र प्रसाद दशोरा

जन्म-21.10.1989 उदयपुर(राज)
शिक्षा- एम.कॉम, एमबीए पीएचडी (अध्ययनरत)
कार्यरत-एयरसेल, एचआर एक्जीक्यूटिव
सम्पर्क- जयपुर 9549822626

मैत्रेयी सिद्धार्थ भट्ट (मांगलिक)

जन्म दि.-
08.07.1989
शिक्षा- मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एचआर एंड आय आर)
कार्यरत- एचआर एक्जीक्यूटिव, कद- 5'3''
सम्पर्क- जयपुर 9414889588

कु. महिमा सुभाषचंद्र त्रिवेदी

जन्म दि. 28.09.1989
समय- 4.20एएम, इंदौर
शिक्षा- बी.ई. (सीएस)
मेथ्स (सीएस)
लेक्चरर, प्रायवेट कॉलेज
सम्पर्क- राऊ (इंदौर)
9826843154,9039576714

निकिता शैलेन्द्र मंडलोई

जन्म दि. 24.07.1988 जबलपुर
समय-4.20 पीएम
शिक्षा- एम.कॉम पीजीडीसीए
सम्पर्क- जबलपुर, 9329003583

नाम गुम जाएगा...

हमारा नाम हमारे जीवन के साथ ही जीवित रहता है... फिर तो यह शरीर केवल बॉडी ही कहलाता है। नाम जीवन के साथ है, तथा काम जीवन के बाद। पिछले दिनों इसी तरह आपसी वार्ता के दौरान यही प्रसंग निकला कि मनुष्य के अवसान के बाद उसके मृत शरीर को भी नाम लेकर नहीं बोला जाता, वह मात्र शरीर (बॉडी) रह जाता है। लेकिन उसी शरीर द्वारा जीवन भर किए गए कार्यों का स्मरण अवश्य किया जाता है। आपके जीवन का सही अर्थ क्या है, यह आप श्मशान तक किसी की अंतिम यात्रा में जाकर ही समझ सकते हैं। आम तौर से किसी भी व्यक्ति के सद्कार्यों की खुले दिल से प्रशंसा उसके जीते जी करने में लोग कंजूसी ही करते हैं, या अपने आपको असहज पाते हैं, परन्तु अवसान के बाद सब लोग उसकी जी भर कर प्रशंसा करते हैं। जीवन का सही आंकलन उसके अवसान के पश्चात हो ही जाता है। (आंकलन तो जीतेजी भी लोग करते हैं परन्तु उसे व्यक्त नहीं करते, अपने मन में ही रखते हैं) अवसान के पश्चात श्रद्धांजलि सभा में कभी यह नहीं कहा जाता कि इनके पास चार बंगले थे... पांच लक्जरी कारें थी, बेडरूम में ए.सी. लगा था... कहीं जाते तो केवल हवाई जहाज में ही जाते थे, खूब समृद्ध थे... नहीं वहां तो केवल सद्गुणों, सद्कर्मों की चर्चा होती है। अवसान के पश्चात न केवल प्रशंसा, बल्कि अंतिम यात्रा में कितने लोग सम्मिलित है, उससे भी जीवन पर्यन्त किए गए कार्यों का आंकलन किया जाता है। आप समझ लें कि जब तक आपका नाम है तब तक आपकी बाहरी समृद्धि, प्रतिष्ठा या सम्पत्ति का महत्व है, नाम गुमने के बाद केवल सद्गुणों या सद्कार्यों की चर्चा रह जाएगी। क्योंकि वास्तव में यह शरीर आपको सद्कर्मों के लिए ही प्रदान किया गया था, आत्मा तो परमात्मा में विलीन हो चुकी है। यह सब बातें किसी, अवसर विशेष पर ही सोचने की नहीं है, प्रतिपल, प्रति क्षण हमें जीवन की वास्तविकता के बारे में विचार करना चाहिए... सजग रहना चाहिए। जीवन के व्यवहार यदि अपने नाम के लिए जरूरी है तो मौत की तैयारी भी साथ-साथ जरूरी है। जीतेजी सम्मान समारोह में हार पहना कर आपके पद, प्रतिष्ठा, उल्लेख किया जाएगा, कई बार शान में झूठे कसीदे भी पढ़े जाएंगे। परन्तु वास्तविक 'सभा' में केवल यथार्थ की चर्चा ही की जाती है। वहां तो झूठ बोलने का सवाल ही नहीं है, प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति क्षणिक वैराग्य की अवस्था में होता है। इसलिए जब वास्तविक आकलन की बारी आए तो उसमें खरा उतरना जरूरी है, सोचें कि नाम के लिए क्या कर रहे हैं तथा बॉडी के लिए क्या कर रहे हैं। वैसे भी भौतिक सुख समृद्धि की कोई सीमा नहीं है। इस सम्बन्ध में आप अपने विचार 25 अक्टूबर 2014 तक हमें भेज सकते हैं, उन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

– *सम्पादक*

विषय- विचार और विजन (दृष्टि)

योजना बनाने से ही भविष्य निर्माण होगा

जो लोग सुखद भविष्य, उन्नत जीवन का सोच ही नहीं रखते, वे आगे कैसे बढ़ेंगे एवं लिखा है, विचार ही अवसर बनाते हैं, साधन जुटाते हैं, विचारों से ही प्रगति होती है। कितना सटीक विचार लिखा गया है। उपरोक्त वाक्य से प्रेरणा लेकर व्यक्ति को अपने भविष्य को उन्नत और समृद्ध बनाने के लिए योजना बनाना चाहिए। जब तक हम कोई विचार या योजना नहीं बनाएंगे तब तक हम किसी मुकाम पर नहीं पहुंच पाएंगे। उदाहरण के तौर पर मैं बताना चाहूंगा, मान लो हमने विचार किया हमें परिवार के लिए एक मकान बनाना है, तो हमें उसके लिए सारी योजना बनाना पड़ेगी, मकान कितना लम्बा चौड़ा, कितने कमरे होंगे, मकान का नक्शा बनाना पड़ेगा आदि, तब कहीं जाकर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे। इसी प्रकार व्यक्ति को अपने भविष्य के प्रति भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। भविष्य को समृद्ध कैसे बनाया जाए, भविष्य उन्नत कैसे बने आदि बातों पर विचार करना ही चाहिए। अगर कोई व्यक्ति एक ही स्थान पर खड़ा रहेगा तो वह आगे कैसे बढ़ेगा? आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है कि कदम आगे बढ़ाए तभी आगे जा सकेगा, अन्यथा लोग आगे चलते चले जाएंगे वह व्यक्ति वहीं खड़ा रह जाएगा, तब वह भगवान को दोष देने लगेगा कहेगा, भगवान ने मेरी किस्मत कैसी लिखी यार मेरी समझ में नहीं आता, मेरा तो कुछ हुआ ही नहीं, सब लोग मुझ से आगे निकलते जा रहे हैं और मैं यहीं खड़ा हूं। वह यह नहीं सोचेगा कि मैंने अपने जीवन को उन्नत और समृद्ध बनाने के लिए कोई योजना ही नहीं बनाई, जिससे मैं अपने परिवार को उन्नत और समृद्ध जीवन जीने का अवसर प्रदान कर सकूं। समृद्धि प्राप्त करने के लिए प्रयास तो करना ही पड़ता है, तभी ईश्वर भी। आपकी मदद करते हैं कहां भी है- हिम्मत ए मर्दा मदद-ए-खुदा। हमेशा सिर पकड़कर बैठे रहने से कुछ नहीं होगा। हमारे देश को भी उन्नत बनाने के लिए योजना आयोग द्वारा योजनाएं बनाई जाती है तब देश आगे बढ़ता है। ठीक उसी प्रकार हमें अपने जीवन के लिए भी योजना बनाना चाहिए।

-**सुरेन्द्र शर्मा** देवास, 9303228767

प्रश्न हमारे...उत्तर आपके...

अपने पुरूषार्थ से महानता पाने वाले का हो सम्मान

प्रश्न – सम्मान पद का हो या कार्य का?

उत्तर – अमेरिकन नीग्रो शिक्षा शास्त्री बूकर टी वाशिंगटन ने इस विषय में ठीक ही कहा है कि किसी व्यक्ति का कद इस बात से नहीं आंकना चाहिये कि वह उन्नति के कितने ऊँचे शिखर (पद) पर पहुंचा, वरन इस बात से आंकना चाहिये कि वह कहां से चला और उन्नति की किस मंजिल तक पहुंचा। भगवान महावीर स्वामी ने भी यही बात कही कि, यदि सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना चाहते हो तो शुरूआत नीचे (धरातल) से करो। इन कथनों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति जब धरातल से प्रारंभ होकर बुलंदियों के उच्चतम शिखर (पद) तक पहुंचा, और तब हम उसका सम्मान करते हैं तो यह सम्मान उसके उन कार्यों का सम्मान होता है जिनके कारण वह उच्चतम पद तक पहुंचा। किसी सेवा निवृत्त व्यक्ति का सम्मान उसके उन दीर्घकालीन सेवा-कार्यों का सम्मान है जो उसने अपने सेवाकाल में किये-ऐसे उद्बोधनों में भी उस व्यक्ति द्वारा सम्पादित कार्यों को ही याद किया जाता है। अतः सम्मान कार्य का ही होता है। मोहनदास करमचंद गांधीजी का सम्मान हम उन्हें महात्मा संबोधन द्वारा करते हैं। मिस्टर गांधी से महात्मा गांधी तक का उनका सफर कितना कठिन था यह किसी से भी छिपा नहीं है। उनकी जीवनशैली, उनका अपने स्वयं पर कठोर अनुशासनात्मक आचरण, जीवन के प्रति उनका असांसारिक दृष्टिकोण तथा वह पवित्रता (शुचिता) जो उनके व्यक्तित्व से उसी प्रकार प्रस्फुटित होती थी जैसे एक पुष्प में से उसकी सुगंध। इन सभी बातों ने उन्हें अपने चारों ओर के मानव समुदाय से पृथक (ऊपर) एक पहचान दी थी, एक महान आत्मा महात्मा बना दिया था। यही सम्मान उनके लिये एक उपयुक्त सम्मान है। गांधीजी की सम्मानता और बढ़ जाती है जब उन्होंने अपने इस सम्मान (महात्मा) के बारे में कहा कि एक महात्मा की व्यथा केवल एक महात्मा ही समझ सकता है। क्यों न हो ऐसा महान कर्मशील व्यक्ति का सम्मान? सिकन्दर महान, नेपोलियन आदि साम्राज्यवादियों की ख्याति की तुलना गौतम, गांधी, ईसा और पैगम्बर मोहम्मद की ख्याति से नहीं की जा सकती। क्योंकि इनके कार्यों में बहुत अन्तर है, और उन्हीं कार्यों की बदौलत आज भी हम गौतम गांधी, ईसा और पैगम्बर मोहम्मद का सादर सम्मान करते हैं। महानता के संदर्भ में कहा जाता है कि कुछ पैदायशी महान होते हैं- कुछ इसे अर्जित करते हैं और कुछ पर महानता थोंप दी जाती है। सम्मान तो इन तीनों ही प्रकार के महान व्यक्तियों का होता है, किंतु उस व्यक्ति का सम्मान करना ज्यादा उचित है जिसने अपने पुरूषार्थ से महानता अर्जित की है। चाणक्य ने इस विषय में क्या खूब कहा है- अच्छे कार्यों की सुगंध और कीर्ति बिना पंख के दूर-दूर तक फैलती है। अंत में मेरे मतानुसार- अच्छे कार्य ही व्यक्ति को उच्च पद तक पहुंचाते है अतः अच्छे कार्यों का सम्मान किया जाना न्यायोचित है।

– मोरेश्वर मंडलोई,
आनंद नगर खंडवा

प्रोत्साहन और प्रेरणा के लिए किया जाता है सम्मान

उत्तर – मेरे विचार से सम्मान उपलब्धिपूर्ण कार्य का ही होना चाहिए यही न्याय संगत होगा। कारण यह है कि समाज हित में या जनभावना के अनुरूप कोई उत्तम कार्य किया जाता है तो अन्य लोगों को जो इस क्षेत्र में कार्य कर रहे होते हैं या नहीं कर रहे होते हैं, एक उत्तम संदेश जाता है जिससे प्रेरित होकर वे भी समाज के लिए या सर्वजन हिताय के लिए कार्य करने की योजना बनाने लग जाते हैं, उनमें भी कार्य करने का जज्बा उत्पन्न होता है। देखने वाले, सुनने वालों के अन्दर भी इच्छा उत्पन्न होती है कि हम भी ऐसा कोई कार्य करें, जिससे हमारा भी सम्मान हो, इस प्रकार उनको भी भारी प्रोत्साहन मिलता है। अतः मेरे विचार में उत्तम कार्य उपलब्धिपूर्ण करने पर ही सम्मान करना न्यायसंगत होगा तथा प्रेरणा स्त्रोत भी।

(दूसरा) पद प्राप्त होने वालों का सम्मान करना कोई बुरा तो नहीं परन्तु अर्थपूर्ण नहीं कहा जा सकता। अधिकांशतः देखने में आता है कि पदेन व्यक्ति का सम्मान स्वार्थी लोग ही करते हैं। वे जानते हैं कि इस व्यक्ति से मुझे लाभ होगा और भविष्य में मेरा कोई काम रुकेगा नहीं। इसलिये वे स्वार्थपूर्ण नीति के अनुरूप कोई छोटे-मोटे आयोजन कर पदेन व्यक्ति का सम्मान करने का नाटक किया करते हैं। जैसे किसी शहर में कोई नया कलेक्टर एसपी, पार्टी या सामाजिक पदेन व्यक्ति आता है तब कैसे लोग सम्मान करने के लिए भाग दौड़ करते हैं। सम्मान करने पर बड़े प्रसन्न होते हैं कि मैंने अपना मुकाम बना लिया, भविष्य में मैं अपना काम इस व्यक्ति से आसानी से करवा लूंगा, मुझे कोई परेशानी नहीं होगी, ऐसे व्यक्ति सम्मान करने के पीछे अपनी स्वार्थ परक सोच रखते हैं।

अतः मैं पुनः एक बार यही कहना चाहूंगा कि सम्मान हमेशा उन्हीं लोगों का किया जाना चाहिए, जिन की भावना समाजहित या जनहित में हो तथा ऐसा कोई उत्तम कार्य किया हो, जो व्यक्ति सेवाभावी है और समाजसेवा तथा मानव सेवा ही अपना धर्म समझकर कार्य में लगा हो, सम्मान होने न होने की चिन्ता नहीं करता उसी का सम्मान होना चाहिए।

– सुरेन्द्र शर्मा
देवास, 9303228767

कद या पद का नहीं

विशेषता का सम्मान होता है

सम्मान हिन्दी का विशेषता लिए एक लचीला गुणी शब्द है। इसकी प्रयुक्ति कई प्रकार से आवश्यकता अनुसार होती है। शैषव संस्कार में हमें बड़े-बुजुर्ग का चरण छू कर प्रणाम सहित आदर करना सिखाया जाता है। समय परिवर्तन के साथ आकृति व आवर्ती परिवर्तित हो चली हैं। जीवन में इसका अर्जन करना प्राय: कठिन ही होता है। मानव जीवन में कर्म क्षेत्र के प्रति दृष्टिकोण विचार, लक्ष्य की दूर दृष्टि, कार्य शैली, सहयोग व कार्यान्वय इन पर काफी कुछ आधारित व निर्भर रहता हैं। सवाल जहन में उठता है कि पद अधिकार, या सेवा (सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय) कार्य इसकी गुणवत्ता के परीक्षण विचारणीय हो सकते हैं।

शासकीय सेवा, पदोन्नति, निवृत्ति का दायरा सीमित रहता है एवं कर्मचारी ने सेवा नियमान्तर्गत प्रदत्त अधिकार अनुरूप निभायें। कार्यान्वय पर आम आदमी खुश हुआ या नहीं इस गोपनीय परीक्षण पर सम्मान मिलने की परम्परा है। सम्मान मिलने से व्यक्ति को कार्य की गति में प्रेरणा, ऊर्जा, उत्साह का बल मिलता है। यह परम्परा चली आ रही है।

सम्मान के प्रति एक बात और सोच की ओर मोड़ती है। वह यह कि पद या कुर्सी का महत्व अधिक होता है? क्योंकि वह अधिकृत अधिकारी होती है। उस पर बैठने वाला तो केवल कर्ता होता है। कुर्सी निर्जीव होती है। परन्तु अधिकार सम्पन्न होती है। अत: सम्मान कुर्सी को ही मिलता है। उसमें सम्मान के साथ कर्ता भी प्रभावित होता है लेकिन आदर कुर्सी का प्रभावी होता है। महाराजा सिंहासन के कारण ही आदर पाते हैं अन्यथा वे भी प्रजा की श्रेणी में आते हैं।

लोकतंत्र में राजनीतिक-पार्टियां भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। सार्वजनिक सेवा के प्रति इनके अपने-अपने विचार, नीति व दृष्टिकोण रहते हैं। यहां पर भी पद पाना, अर्जित करना उपलब्धि का आदर होता ही है। पार्टी अपनी नीति अनुरूप सर्व जन हिताय में कितनी सफल या असफल हुई यह विचारणीय हो सकता है। समाज की सेवा में व्यक्ति स्वहित से परे हो आम जनता व अक्षम को ऊंचा उठाने, जीवन की आवश्यक सुख सुविधा उपलब्धि के प्रति समर्पण भावना से सक्रियता, निरन्तरता के लिए रहा हो यह महत्वपूर्ण है। उसका कार्यान्वयन ही जनता के दिल में अहम स्थान बना लेता है। यही पद से अलग विशेषता सम्मान शब्द की गरिमा बढ़ाएगी। उपलब्धिपूर्ण किया कार्य ही उसका सम्मान ही न्याय संगत होगा। पद गौण व समाज में अपनों से अक्षम जनता की सेवा ही सम्मान योग्य है।

पी.आर. जोशी,
इंदौर

जन्मदाता, पहले भगवान हैं...

माता-पिता तो ऐसे हितचिंतक, कल्याण मित्र है कि जो संतानों को दोषों से बचाते हैं, पाप से बचाते हैं, पतन से बचाते हैं, खराब संगत से बचाते हैं, व्यसनों से बचाते हैं। जीवन में ऐसे जो भी अनिष्ट है उन सबसे माता-पिता आपको बचा सकते हैं, लेकिन यदि आप उनसे निवेदन करते हो तो। यदि अपने जीवन को पवित्र बनाना हो, उत्तम बनाना हो, आदर्श बनाना हो, सुखी बनाना हो, संतुष्ट बनाना हो, उद्धर्वगामी बनाना हो तो आप पर अपने माता-पिता का अंकुश होना चाहिये।

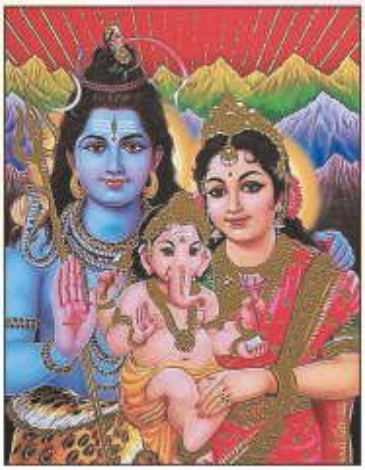

- मां-बाप की सच्ची विरासत पैसा और प्रसाद नहीं, प्रमाणिकता और पवित्रता है... उन्होंने जन्म दिया और पालन-पोषण करके बड़ा किया, यही उनका सबसे बड़ा उपकार है।
- सोचो... आप अपने माता-पिता के अंकुश में है कि आपके माता-पिता आपके नियंत्रण में है? आप अपने माता-पिता के साथ हैं कि माता-पिता आपके साथ है?
- मंगलसूत्र बेचकर भी तुम्हें बड़ा करने वाले मां-बाप को ही घर से निकालने वाले ऐ नौजवान। तुम अपने जीवन में अमंगल शुरू कर कर रहे हो।
- मां-बाप की आंखों में दो बार आंसू आते हैं... लड़की घर छोड़े तब... लड़का मुंह मोड़े तब...
- जीवन के अंधेरे पथ में सूरज बनकर रोशनी करने वाले माता-पिता की जिन्दगी में अंधकार मत फैलाओ।
- जिस दिन तुम्हारे कारण मां-बाप की आंखों में आंसू आते हैं। याद रखना... उस दिन तुम्हारा किया सारा कर्म धर्म... आंसू में बह जाते हैं।
- तुमने जब धरती पर पहला श्वांस लिया, तब तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे पास थे, माता-पिता अन्तिम श्वांस ले, तब तुम उनके पास रहना।
- मां-बाप को सोने से न मढ़ो, तो चलेगा, हीरे से न जड़ो तो चलेगा, पर उनका जिगर जले और अंतर आंसू बहाए, यह कैसे चलेगा।
- क्या अपने पुत्र-पुत्री को देखकर जो आनंद मिलता है, ऐसा आनंद अपने माता-पिता को देखकर आता है? जैसे अपने पुत्र-पुत्री को चीजें लाकर देते हो, वैसे अपने माता-पिता को लाकर देते हो?

- सौ. रश्मि मनीष मेहता
राजीव नगर, भोपाल

स्विफ्ट सॉल्युशन मतलब सिंगापुर

गुजरात में No. 1

Singapore Student legal Advise & Recruitment Centre

श्री राकेश व्यास – निदेशक
Swift Solution
Expert in Singapore Visa Guidance

HOTEL MANAGEMENT | ENGINEERING | MEDICAL | DIPLOMA | DEGREE | MASTERS AND MANY MORE

10 पास जा सकते है?	हां
IELTS एवं INTERVIEW के बिना जा सकते है?	हां
पढ़ाई के बाद नौकरी का मौका?	हां
परिवार के साथ स्थाई हो सकते है?	हां
वीजा शुल्क	नहीं
कन्सल्टिंग चार्ज	नहीं
किसी भी देश के रिजेक्टेड़ केस	स्वीकृत
स्पे. स्कॉलरशिप और डिस्काउन्ट के लिए	रूबरू मिलें

स्टूडेन्ट वीजा

- सर्टिफिकेट से मास्टर्स तक के 150 से ज्यादा सरकार मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम
- एज्युट्रस्ट एप्रूव्ड कॉलेजो में प्रवेश एवं 100% गारंटीड वीजा प्रोसेस
- आपके बजट में (कम से कम 1 लाख– किस्त के साथ) भी सिंगापुर में पढ़ाई का मौका
- केवल 1 दिन के BANK BALANCE की आवश्यक्ता
- एयरपोर्ट ड्रॉप, पिकअप एवं रहने खाने की उत्तम सुविधाएं
- 'S' PASS और 'E' PASS की गारन्टी

ज्यादा जानकारी के लिए पासपोर्ट एवं अकेडमिक सर्टीफीकेट्स के साथ रुबरु मिलें।

*conditions apply

बिजनेस वीजा

- कम खर्चमें सिंगापुर में अपना व्यवसाय शुरू कर के परिवार के साथ रह सकते है। ■ PR का अवसर।

स्विफ्ट सॉल्युशन ही क्यों?

- सटीक मार्गदर्शन
- शुल्क में किस्त की व्यवस्था
- वीजा के बाद शुल्क के भुगतान की व्यवस्था
- पढ़ाई के साथ एवं बाद में जेन्युइन इन्टर्नशीप

सिंगापुर ही क्यों?

- विश्वस्तरीय शिक्षा
- केवल 15 दिनों में वीजा प्रोसेस
- पढ़ाई के बाद USA, UK, CANADA, AUSTRALIA जैसे देशों में आसानी से स्थानांतर

100% Visa Ratio*
Bank Loan Facilities
Job Support*

Swift Solution®
A path to success
Overseas Education Consultant
ISO Certified 9001 : 2008

Call 24 X 7 - **99988 05566**

602, Rangoli Complex, Opp. V.S. Hospital, Ashram Road, Ahmedabad.
Phone : 079 66053300, Email : info.inquiry.sg@gmail.com, swift.solution.ifc@gmail.com
Visit us : www.swiftsolution.in

रंगा सियार-एक विचार

एक महात्मा जंगल में अपने आश्रम में अपने शिष्यों अनुयाइयों भक्तों एवं चेलों को धर्म का, शास्त्रों का, वेदों का, उपनिषदों का अध्यात्म का एवं मोक्ष का ज्ञान 'प्रवचन' साधना, जीवन जीने की कला एवं जीवन का महत्व परोपकार धर्म अधर्म पाप-पुण्य की कला सिखाते थे। उनका उद्देश्य था एक सभ्य सुदृढ़ सम्पन्न सुसम्मानित सुसंसकारित समाज का निर्माण हो सके ताकि लोग सुख से जीवन जी सके। वो चाहते थे। इसके लिये योग्य, बुद्धिमान, विद्वान, सम्पन्न, दयावान, सेवाभावी, समर्थ, कोमल हृदय वाले, जो समाज निर्माण में समय दे सकें, जिनके पास स्वयं के साधन हो, जिनमें त्याग एवं समाज के उत्थान की ललक हो। समर्पित भावना के धनी को समाज का जन प्रतिनिधि बनाए एवं नेतृत्व उन्हीं के हाथों में हो।

सारे शिष्य ज्ञानी हो गये, महारथी एवं विद्वान हो गये कुछ तार्किक हो गये। महात्मा से गुरू परम्परा का प्रारम्भ हुआ। परिवार बढ़ता गया जनसंख्या बढ़ती गई- कुटुम्ब- समाज-राज्य एवं देश का निर्माण किया। अब कुटुम्ब, संस्कृति का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। घर में कुटुम्ब में जाति एवं सम्प्रदाय में बुजुर्ग व्यक्ति को सम्मानित एवं मार्गदर्शक का पद मिलता था। उनका कहा-उनके आदेश का ससम्मान पालन हुआ करता था। सम्मानित व्यक्ति भी पूरी जवाबदारी निष्ठा बिना भेदभाव एवं निस्वार्थ भावना लिये ईमानदारी से इस पद की गरिमामय कार्य सम्पादित करते थे। समय के साथ-साथ परिवार बढ़ता गया विस्तार होता गया। साथ ही लोगों की आवश्यकताएं, व्यवस्थाएं भी बढ़ती गई।

नई शिक्षा पद्धति नये ज्ञान-विज्ञान अनुसंधानों एवं नये अविष्कार ने इन आवश्यकताओं की काफी पूर्ति की, जो आगे भी जारी है। समानान्तर विचारों में भी असमानताएं पदलोलुपता झूठी शान, अयोग्य नायक अहम दंश लोभ वर्चस्व एवं महत्वाकांक्षाओं का प्रार्दुभाव हुआ।

अहम एवं वर्चस्व की होड़ होने लगी। लड़ाई नेतृत्व की होने लगी। मनमुटाव, दुर्भावनाओं, कुंठाओं, कुटिलताओं, स्वार्थता की भावनाएं हृदय में स्थान बनाने लगी। इन्हीं विशेषताओं से राजनीति का जन्म हुआ। समाज में हर जगह राजनीति होने लगी।

समय के साथ समाज के ठेकेदारों के पद निर्मित होने लगे। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक, मंत्री, सरपंच-पंच अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, निकाय सहकारिता, संघ समितियां मण्डल, सचिव के साथ जाति, संप्रदाय, सामाजिक पद प्राप्ति की लड़ाई जारी है। उद्देश्य से भटका समाज पद प्राप्ति के लिए अनैतिक हथकण्डों में चतुरता, चालाकी, चपलता, चाटुकारिता, चंचलता, चोर भावना लिये कुटिल, कपटी, कामुक, क्रोध, काली कमाई के साथ व्यसनी, घमण्डी सवयं को सम्मानित होने की प्रतिस्पर्धा एवं दूसरों को अपमानित करने का अवसर ढूंढ, उपेक्षा करना ही आज की राजनीति बन गई। ये दूषित हवा शहर से जंगल में भी चलने लगी। इंसानों से जानवरों तक पहुंची। उस जंगल में सबसे ज्यादा सियार (लढ़ैया) जाति की संख्या थी। सियारों ने शहरी वातावरण का अध्ययन किया, नेता चुनने के लिए हमारे द्वारा बनाए गए बायलाज की नकल की एवं सियारों में भी प्रतिनिधि, पदाधिकारी बनने की होड़ लग गयी। चुनाव होने लगे चतुर-चालाक सियार पदों पर आसीन होने लगे।

चुनाव प्रचार चल रहा था। मतदाताओं ने एक मंच पर ही सभी पार्टी के उम्मीदवारों को अपनी चुनाव घोषणाओं एवं अपनी बात रखने को आमंत्रित किया। प्रथम नये उम्मीदवार को पहले बोलने का अवसर दिया। पहला उम्मीदवार बोला मतदाता भाइयों यदि आपने मुझे जिताया तो मैं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार खत्म कर दूंगा- विकास की गंगा बहा दूंगा, हर मतदाता को रहने का घर, भोजन एवं रोजगार का उत्तम प्रबंध करूंगा। दूसरा नया उम्मीदवार सियार पहले वाले से एक कदम आगे बढ़कर बोला-कहा मैं सभी समाज को भोजन-मकान-घर-सड़क के अलावा सारी सुविधाऐं फ्री में मुहैया कराऊंगा। एक बार अवसर दे। अंत में उस उम्मीदवार सियार को मंच पर बुलाया जो विगत दोबार से नेता बना हुआ था। पुराना उम्मीदवार बोला मतदाता भाइयों जैसा कि आप लोग भलीभांति जानते हैं मैं एक सामान्य गरीब सियार था, पहली बार जब मैं जीता तो मैंने अपना घर भरा, खूब कमाई की आज चार गाड़ियां, 6 मकान, जमीन, जायदाद, कल कारखाने का मालिक बन गया।

दूसरी बार आपकी कृपा से मैं निर्वाचित हुआ तो मेरे परिवार इष्ट मित्रों मेरे रिश्तेदारों एवं मेरे चमचों की खूब कमाई कराई किसी से छुपा नही है। अब मैं तीसरी बार फिर उम्मीदवार हूं। आपसे निवेदन है कि आप सोच समझकर वोट दें। अब मेरे पास आप लोगों की सेवा आपका विकास करने के अलावा कोई काम नहीं है। आप मुझे ही वोट देकर जिताएं एवं यदि आपने किसी नये उम्मीदवार को जिताया तो वो भी यही करेगा जो मैने किया, आपका नम्बर तो तीसरी बार ही आएगा। लोगों ने उसका नाम रखा रंगा सियार क्योंकि वह राजनीति में रंगा गया था।

चुनाव हो गये रंगा सियार जीत गया। सभाओं का दौर चलने लगा। नेताजी बोले भाई मुझे लोग कैसे पहचानेंगे कि मैं नेता हूं। कुछ अलग होना चाहिये। मेरी कुर्सी, कार्यालय, गाड़ी आदि की व्यवस्था होना चाहिए। लोगों ने प्रस्ताव पारित किया एक लकड़ी का लट्ठा नेताजी की पूंछ से बांधा जावे। यही नेताजी की कुर्सी एवं पहचान होगी। आप जहां भी जावे इसी कुर्सी पर आसीन होकर सभाऐं कर सकते हैं। नेताजी की पूंछ में लकड़ी का लट्ठा बांधा गया। सारे समाज में सभाएं होने लगी घोषणाएं करने लगे। उद्घाटन स्वागत, सम्मान होने लगे। नेताजी पूरे राजनीति में पक्के रंगा गये, अब उनकी सोच बदलने लगी। वे चाहने लगे कि सारे सियार समुदाय मुझे नमस्कार करें। मेरे सिर झुके मेरे पैर छुऐं मुझे सम्मान दें और मुझे उपहार भी दें। बदलें में मैं उन्हें तिरस्कारित करूं-उपेक्षित करूं, अपमानित करूं, साम दाम दंड भेद की राजनीति करने लगे।

विरोधियों को शक्ति से कुचलने लगे एवं एक छत्र राज करने लगे। नेताजी की एक बहुत बड़ी महासभा चल रही थी। हजारों सियारों की

मोजूदगी में नेताजी बढ़-चढ़कर भाषण दे रहे थे। बोले मैं सबसे अधिक शक्तिशाली सम्पन्न एवं महान सियार हूं। जंगल का राजा भी अब मैं ही हूं। तभी जंगल का राजा शेर घूमता हुआ निकला उसने नेता सियार का भाषण सुनना और शेर ने जोर से गर्जना की। शेर की गर्जना सुनकर सभा में हड़कम्प मच गया। सारे सियार भाग खड़े हुए एवं अपने-अपने बिलों में घुस गए। अंदर से बोलने लगे नेताजी जल्दी बिल में घुसो शेर राजा पीछे आ रहा है। पीछे शेर को आता देख नेताजी बिल में घुसने का पुरजोर प्रयास करने लगे। लेकिन नेताजी आधे बिल में एवं आधे बाहर ही रहे क्योंकि पूंछ में बंधा लकड़ी का लट्ठा जो कि उनकी कुर्सी भी बिल में फंस गई, पूंछ बाहर-नेताजी अंदर, जब तक शेर आ गया। सारे चमचे बोले नेताजी जल्दी करो बाप आ गया है। नेताजी रोते हुए बोले भाई अंदर कैसे आऊँ ये राजनीति आड़े आती है। शेर ने कोई गलती नहीं की। रंगा सियार मारा गया।

लोगों को महात्मा का ज्ञान याद आया। जन नायक नहीं जन सेवक बनो। मंत्री नहीं संत्री (रक्षक) बनो, सांसद नहीं- सेवक बनो।

ध्यान रखो
आनंद के लिए - संगीत
खाने के लिए - गम
पीने के लिए - क्रोध
निगलने के लिए - अपमान
व्यवहार के लिये - नीति
लेने के लिए - ज्ञान
देने के लिये - दान
जीतने के लिय - प्रेम
धारण करने के लिये - धैर्य
तृप्ति के लिये- संतोष
त्याग के लिये - लोभ
करने के लिये - समाजसेवा
प्राप्त करने के लिये - यश
फेंकने के लिये - ईर्ष्या
छोड़ने के लिये - मोह
रखने के लिये - इज्जत
बोलने के लिय - सत्य
यही है जीवन के मूल आधार - ध्यान रखो
रंगा सियार नहीं - सियाराम में रंग जाओ-कल्याण होगा।

जय हाटकेश

-अरुण मेहता
मेहता कृषि केन्द्र
नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़ 9425445137

छोटे से नियम से मिल सकता है बड़ा लाभ...

एक सेठ किसी महात्मा की कथा में गया। महात्मा ने उससे कहा- जीवन में कोई न कोई नियम ले लो। उस सेठ ने कहा :- बाबाजी मेरे से कोई व्रत नहीं होगा, न ही कोई पूजा-पाठ होगा, और तो कोई नियम नहीं लेकिन जब तक मेरे घर के सामने रहने वाला बूढ़ा कुम्हार जिंदा होगा, तब तक उसको देखकर ही दोपहर का भोजन करूंगा।

बाबा : चलो... ठीक है। इतना ही व्रत रख लो भाई।

यह व्रत तो आसान था। बूढ़ा कुम्हार घर के सामने ही रहता था। इस व्रत को पालने में कोई श्रम भी नहीं था। दूर से देख ले तब भी काम बन जाता था।

एक दिन बूढ़े का लड़का ससुराल चला गया। बूढ़ा गधे को लेकर मिट्टी लाने गया। सेठ घर पर भोजन करने आया तो उसे बूढ़ा नहीं दिखा। कुम्हार की पत्नी से सेठ ने पूछा: कहां गया बूढ़ा?

पत्नी : गधे लेकर मिट्टी लाने गये हैं।

सेठ : कब आयेगा?

पत्नी : अभी ही गये हैं, थोड़ी देर लगेगी।

सेठ : कहां मिट्टी लेने गया है?

बुढ़िया ने जगह बता दी। सेठ गया उस जगह की ओर दूर से ही देखा कि वह बूढ़ा मिट्टी भर रहा है। यह देखकर सेठ वापस घर लौटने लगा। उसका तो केवल दूर से देखने का ही व्रत था। उसे लौटते समय देखकर बूढ़े ने आवाज लगायी : ए भाई इधर आ। सेठ : अरे तुझे देख लिया।

बात यह थी कि बूढ़े को मिट्टी खोदते-खोदते सोने की अशर्फियों का भरा हुआ घड़ा मिला था और वह घड़े को व्यवस्थित ही कर रहा था कि उसी वक्त सेठ ने कहा कि अरे, तुझे देख लिया। कुम्हार ने समझा कि सेठ यह घड़ा देखकर जा रहा है पुलिस को बताने। सरकार में चला जाए इससे अच्छा तो आधा इसका आधा मेरा।

सेठ ने एक बूढ़े कुम्हार को देखकर दोपहर के भोजन का जरा-सा व्रत लिया तो अशर्फियों का आधा घड़ा उसे मिल गया। अगर बाबाजी के कहे अनुसार वह कोई अन्य व्रत लेता तो और भाग्य बदल लेता। हम भी नागर ब्राह्मण है। अपने जीवन में कोई न कोई अच्छा व्रत, नियम अवश्य होना चाहिए। छोटा-सा नियम भी जीवन में बड़ी मदद करता है। ऊँ जय हाटकेश।

- चिराग डायालाल नागर
सिरोही राज.
9610937004

नौ रूप में शक्ति की आराधना

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा 25 सितम्बर से नवरात्रि का प्रारम्भ हुआ। अनेक पौराणिक कथाओं में शक्ति की आराधना का महत्व व्यक्त किया है। नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा के उन नौ रूपों का पूजन किया जाता है जिन्होंने सृष्टि के आरम्भ से लेकर अभी तक इस पृथ्वीलोक पर कई लीलाएं की थी। नौ दिनों तक चलने वाले पर्व में दुर्गाजी के नौ रूपों- 1- शैलपुत्री, 2- ब्रह्मचारिणी, 3- चंद्रघंटा, 4- कुष्मांडा, 5- स्कन्दमाता, 6- कात्यायनी, 7- कालरात्रि, 8- महागौरी, 9- सिद्धिदात्री देवी की पूजा का विधान है।

संकलन-
टीशा जितेन्द्र नागर
देवास

अतुलनीय अंगूठा

मनुष्य प्राणी जगत का सर्वाधिक विकसित जीत है। जैव-विवर्तन के फलस्वरूप मनुष्य ने जीव के सर्वोत्तम गुणों को पाया है। मानव शरीर एक मानव जीव की सम्पूर्ण सरंचना है, जिसमें एक सिर, गर्दन, धड़, दो हाथ तथा दो पैर होते हैं। एक वयस्क मानव शरीर करीब सौ टिलियन (1014) कोशिकाओं का बना होता है। वैसे तो मानव शरीर के विभिन्न अंगों की एक निश्चित कार्यप्रणाली होती है, परन्तु इसी श्रेणी में हाथ एवं पैर की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। ये भौतिक जगत के कार्य सम्पादन में अहम हैं। मनुष्य अपने दोनों हाथों एवं दोनों पैरों का उपयोग कर अनेक कौशल्य जनित कार्यों को विशिष्ट प्राविण्यता के साथ सम्पादित करता है। मनुष्य अपने इन्हीं हाथों से अच्छे-बुरे, सही-गलत, उत्कृष्ट-निकृष्ट कार्य कर सम्मान अथवा तिरस्कार प्राप्त कर सकता है। शायद यही कारण है कि सभी धर्मों में ईश्वर की आराधना में मनुष्य के हाथों (अंगुलियां, अंगूठा तथा हथेली) का विशेष महत्व प्रतिपादित किया गया है। हिन्दू धर्म शास्त्र में कहा गया है-

कराग्रे वसते लक्ष्मी:, करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्द:, प्रभाते करदर्शनम्।।

वैसे तो मानव हस्त में उपस्थित सभी अंगुलियों, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका का अपना महत्व है परन्तु अंगूठे (थम्ब) का महत्व सर्वाधिक है। इस संदर्भ में अंगूठे की महत्ता को निम्नांकित रूप में रेखांकित किया जा सकता है।

1- **साक्षरता का प्रतीक** :- मनुष्य के हाथ का अंगूठा उसके साक्षरता का प्रतीक होता है। निरक्षर व्यक्ति जो लिखना पढ़ना नहीं जानता है उसे अपनी पहचान स्थापित करने हेतु अंगूठे की छाप देना होती है। इसी कारण ऐसे व्यक्ति को सामान्य भाषा में अंगूठा छाप कहा जाता है। इतना ही नहीं अनेक स्थानों पर व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत पहचान के रूप में अंगुलियों के साथ-साथ अंगूठे की छाप भी देना होती है।

2- **शारीरिक क्षमता** :- मनुष्य की शारीरिक क्षमता को दर्शाने वाले अनेक कार्यों में हाथ के अंगूठे का विशेष महत्व होता है। व्यक्ति अपने हाथ के साथ-साथ अंगूठे का प्रयोग दो प्रकार की पकड़ ग्रीप के लिये करता है-पहली है मजबूत पकड़ (पावर ग्रीप) जिसके द्वारा व्यक्ति अंगूठे की सहायता से अनेक यंत्रों, उपकरणों, औजारों इत्यादि पर अपनी पकड़ मजबूत करता है तथा दूसरी हैं उम्दा पकड़ (प्रीसिजन ग्रीप) जिसमें व्यक्ति अंगूठे की सहायता से निर्दिष्ट कार्य सफलतापूर्वक कर पाता हैं जैसे लेखनकार्य, चित्रकारी, संगीत यंत्रों का संचालन, क्रिकेट में गेंदबाज द्वारा गेंद को स्पीन कराना इत्यादि।

द्वापर युग के महान आचार्य द्रोणाचार्य जो कि शस्त्रविद्या एवं युद्ध कौशल के महान ज्ञानी थे जिन्होंने एक ओर अपने विशिष्ट चहेते अर्जुन को संसार का महान धर्नुधारी बनाया था वहीं दूसरी ओर निम्न वर्ण (भीलजाति) में उत्पन्न एक अन्य धर्नुधारी एकलव्य से अंगूठा दक्षिणा में मांगकर उसकी शारीरिक क्षमता एवं सामर्थ्य पर हमेशा के लिये अंकुश लगा दिया था।

3 **मान-अपमान** :- व्यक्ति के अंगूठे को सम्मान/अपमान का प्रतीक भी माना गया है। किसी व्यक्ति को अपमान के रूप में अंगूठा दिखा देना उसको अपमानित करने का द्योतक होता है।

जब तक था उनको काम, पैरों के छूते थे वो अंगूठा।
अब मतलब निकल गया, तो दिखा रहे हैं वो अंगूठा।।

शायद यही कारण है कि भारत सरकार ने पूर्व में जो एक रूपये का सिक्का जारी किया था उस पर गेहूं की बाली का चिन्ह अंकित था क्योंकि एक रूपये में उस समय अनाज मिल सकता था, परन्तु वर्तमान में जारी किये गये सिक्के पर अंगूठे को दर्शाया गया है, जिसका तात्पर्य है कि अब एक रूपये में कुछ नहीं आता। ठेंगा मिलता है।

4 **संकेतों का प्रतीक** :- व्यक्ति के हाथ के अंगूठे को संकेतों का प्रतीक भी माना गया है। यदि हाथ का अंगूठा उर्ध्वगामी (थम्स अप) होने पर उसका तात्पर्य स्वीकृति से होता है। वहीं दूसरी ओर यदि अंगूठा अधोगामी (थम्स डाऊन) होने पर यह असहमति दर्शाता है। इस प्रकार के संकेत हवाई अड्डों पर नियुक्त ग्राउण्ड स्टाफ द्वारा वायुयान के पायलट को उड़ान भरते समय तथा वायुयान के अवतरण के समय दिया जाता है।

5 **योग एवं व्यायाम** :- योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया हैं, जिसमें शरीर, मन तथा आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। यह शब्द/प्रक्रिया/धारणा बौद्ध धर्म एवं हिन्दू धर्म में ध्यान क्रिया से सम्बन्धित हैं। भगवतगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने योग शब्द अनेक रूपों में व्यक्त किया हैं जैसे- ज्ञान योग, सन्यासयोग, कर्मयोग, भक्तियोग इत्यादि। योग के आठ अंग दर्शाये गये हैं जिसमें आसन एवं प्राणायाम प्रमुख हैं इन दोनों क्रियाओं में मनुष्य के हाथ-पैर विशेषकर अंगूठे के प्रयोग का विशेष महत्व हैं। महर्षि दुर्वासा ने अंगूठे के बल पर तप कर ज्ञान प्राप्त किया था। भगवान महावीर तथा गौतम बुद्ध की विभिन्न ध्यान मुद्राओं/ज्ञान मुद्राओं में अंगूठे की महत्ता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

6 **चिकित्सा जगत** :- चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से मनुष्य के हाथ या पैर के अंगूठे अत्यंत ही संवेदनशील होते हैं अत: इन पर लगी चोट

का सामान्य रूप से ठीक न होना एक विशेष स्थिति को दर्शाता है। इसी कारण कभी-कभी इस प्रकार की चोट/घाव समुचित उपचार के अभाव में गंभीर व्याधियों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। जैसे मधुमेह का गैंग्रिन के रूप में परिवर्तन।

7 **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** :- वैज्ञानिक जगत में अंगूठे के महत्व को थम्स रूल (अंगूठे का नियम) के रूप में जाना जाता है। विद्युत प्रभाव के कारण उत्पन्न होने वाले चुम्बकीय क्षेत्र तथा सांख्यिकी के क्षेत्र में स्थाई दर की घतांक वृद्धि को थम्सरूल के द्वारा ही दर्शाया जाता है।

8 **मंगल कार्य** :- भारतीय परम्पराओं में सम्पन्न अनेक मंगल कार्यों में हाथ तथा पैर के अंगूठे का विशेष महत्व है। दाहिने हाथ का अंगूठा किसी व्यक्ति के मस्तक पर तिलक लगाने में अहम भूमिका अदा करता है। इसी प्रकार विवाह पश्चात नव वधू के गृह प्रवेश पर उसके दाहिने पैर के अंगूठे से धान से भरा लोटा गिराने की भी परम्परा अनेक परिवारों द्वारा निभाई जाती हैं।

9 **आध्यात्मिक जगत** :- हिन्दू धर्मग्रंथों में उल्लेखित विभिन्न कथानकों पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी अंगूठा रहा है। चूंकि ईश्वर की भक्ति/आराधना/पूजा उनके चरणों में बैठकर की जाती है तथा प्रसाद के रूप में चरणामृत को प्राथमिकता से ग्रहण किया जाता है अत: देवी देवताओं के पैर का अंगूठा अत्यंत ही पूज्यनीय माना जाता है।

गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या, जोकि उनके श्राप से पाषाण की हो गई थी भगवान श्रीराम के पैर के अंगूठे के सम्पर्क में आते ही वह पुन: मानव रूप में परिवर्तित हो गयी थी। मानव रूप में अवतरित भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण का निर्वाण भी उनके पैर के अंगूठे में लगे बाण के कारण हुआ था जो कि एक शिकारी भील द्वारा अज्ञानतावश छोड़ा गया था। शास्त्रों में दोनों हाथों में कुछ देवतीर्थ स्थान बताए गए हैं। चारों अंगुलियों के अग्रभाग में देवतीर्थ, तर्जनी अंगुली के मूलभाग में पित्रतीर्थ, कनिष्ठिका के मूलभाग में प्रजापतितीर्थ और अंगूठे के मूलभाग में ब्रह्मतीर्थ बताया गया हैं। इसलिये देवताओं को तर्पण में जलांजलि देवतीर्थ से, ऋषियों को प्रजापति तीर्थ से तथा पितरों को पित्रतीर्थ से देने का विधान हैं।

- प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
इंदौर

कदम मिलाकर चलना होगा...

हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे।

कर्तव्य के क्षेत्र में सत्य का प्रचार करते हुए मर जाना श्रेयस्कर है। स्वामी विवकानंद के अमृत तुल्य अमर वचन

मरते दम तक कार्य करते रहो (गीता-कर्मण्येवाधिकारस्ते) मैं तुम्हारे साथ हूं और जब मैं चला जाऊंगा, तो मेरी आत्मा तुम्हारे साथ काम करेगी। धन, नाम, यश और सुख भोग तो केवल दो दिन के हैं। संसारी कीट की भांति मरने की अपेक्षा कर्तव्य क्षेत्र में सत्य का प्रचार करते हुए मर जाना कहीं अधिक श्रेष्ठ है- लाख गुना अधिक श्रेष्ठ है।

आगे बढ़ो

आगे बढ़ने में बाधाऐं तो आऐंगी ही। बाधाओं को हंसते-हंसते पार करो। अटल बिहारी वाजपेई की अमर रचना बाधाऐं आती है आए से सीख लेकर जीवन में उतारें और सफल होवें।

बाधाएं आती हैं आएं, घिरे प्रलय की घोर घटाएं पांवों के नीचे अंगारे, सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं, निज हाथों से हंसते, हंसते, आग लगाकर चलना होगा कदम मिलाकर चलना होगा।

हृास्य रुदन में, तूफानों में, अमर असंख्यक बलिदानों में, उद्यानों में, वीरानों में, अपमानों में, सम्मानों में, उन्नत मस्तक, उभरा सीना, पीड़ाओं में पलना होगा। कदम मिलाकर चलना होगा।

डॉ. तेज प्रकाश व्यास
धार, 9425491336

जुगाड़

जुगाड़ शब्द कितना प्यारा है न्यारा है। जुगाड़ लगते ही भवबाधा और दिक्कतें दूर हो जाती हैं। मन को बड़ा ही आनन्द मिलता है। जिसके कारण मन अनेकानेक प्रकार की हवाई कल्पना करने लगता है। कई लोगों ने तो अपना पूरा जीवन जुगाड़ लगाने और जुगाड़ खोजने में लगा दिया। जुगाड़ लग जाने पर जुगाड़ लगने की बात हर कोई कहना नहीं चाहता क्योंकि पोल खुलने पर सच बात उजागर हो जाती है। समाज के हित में सेवा करने वाला भी अपनी जुगाड़ ढूंढने में लगा रहता है। कोई जुगाड़ की आड़ में सत्कर्म का दिखावा करते हैं। जुगाड़ रहस्य है मानव जीवन का सहारा भी है क्योंकि जुगाड़ वह पहलू है जो अपने स्वार्थ तक सीमित रहकर असत्य का सहारा पकड़ लेता है। जिसके कारण सौ झूठ बोलने भी पड़ते हैं। जुगाड़ी प्रवृत्ति वाला ईश्वर से भी नहीं डरता। रिश्तों की फिक्र नहीं पालता। वह अपना काम निकालने में माहिर रहा करता है। उसकी गति, लीला और काम करने की प्रकृति में चाहे सरलता हो, किन्तु कन्जूसी, सेल्फिशनेस और दूसरों की निंदा करने में उसे जरा भी शर्म नहीं आती। अपने खुद के महत्व के पीछे वह अपने आपको गुणी चतुर और माहिर समझता है, जिसके कारण दूसरों से आदर प्राप्त नहीं कर पाता।

हरिश्चन्द्र नागर (नीरव) शर्मा ज्ञानी
मोबाइल अंक ज्योतिषी
उज्जैन

दस का दम

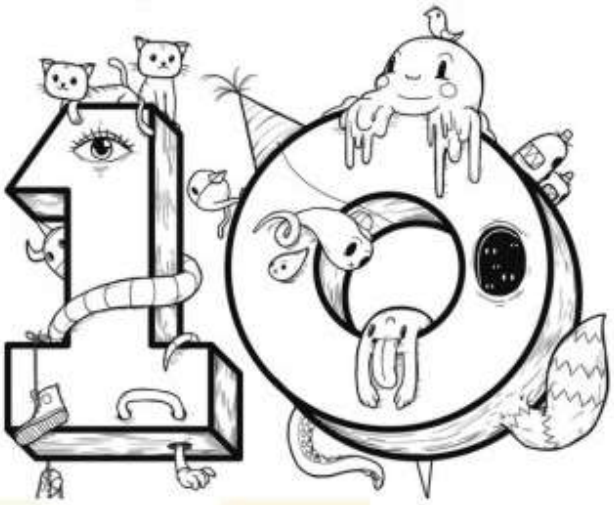

1. दशानन-दस सिर वाला-रावण
तुलसीकृत रामायण में रावण ने हर पात्रों से हमेशा एक मुख से संवाद किया है, लेकिन लंकाकांड के दोहा नं. 5 में रावण के दसों मुख से बोलने का वर्णन मिलता है। दस मुख से बोले गये दस शब्द समुद्र के पर्यायवाची या समानार्थक शब्द हैं।
2. हाथ पैरों की दस-दस अंगुलियां-
वैसे तो हाथ और पैरों में दो-दो अंगूठे होते हैं, लेकिन उन्हें अंगुलियों के रूप में ही गिना जाता है।
3. दुर्योधन
जिसमें दस हाथियों सा बल था।
4. दशाव्रत- इस व्रत में दस कच्चे धागों में दस कच्चे धागों में दस गांठें लगाकर पूजा की जाती है। दस लड्डू खाने का भी विधान है।
5. दशावतार- 1.मत्स्यावतार, 2. कच्चा अवतार, 3. वाराह अवतार, 4. नृसिंह अवतार, 5. वामन- अवतार, 6. परशुराम अवतार, 7. राम-अवतार, 8. कृष्ण-अवतार, 9. बुद्ध अवतार, 10. काल्कि अवतार।
6. विवाह के समय वर-वधु द्वारा ली जाने वाली 10 प्रतिज्ञायें-
1- मैं अपनी धर्मपत्नि को अर्धांगिनी समझूंगा और उसका पूर्णतया ध्यान रखूंगा।
2- गृहलक्ष्मी का अधिकार उसे सौंपकर जीवन की गतिविधियों और कार्यक्रमों में उसका परामर्श लूंगा।
3- पत्नि के किसी दोष-विकारों पर बिना असंतोष प्रकट किए उसे सुधारने की चेष्टा करूंगा।
4- परनारी पर बुरी नजर नहीं डालूंगा पत्नि व्रत का पालन करूंगा।
5- पत्नि को मित्रवत रखूंगा- पूरा स्नेह दूंगा।
6- अपनी आमदनी पत्नि को सौंपूंगा।
7- किसी के सामने पत्नि को लांछित नहीं करूंगा।
8- पत्नि के साथ समझौता-नीति का पालन करूंगा।
9- पत्नि के विचार या असमर्थता की स्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करूंगा।
10- पत्नि के व्यक्तित्व विकास में पूरा सहयोग दूंगा।
इस तरह की दस प्रतिज्ञायें वधु द्वारा भी ली जाती हैं।
7. समुद्र मंथन में निकली दस दुर्लभ वस्तुऐं- 1. ऐरावत हाथी 2.कामधेनु गाय 3. उच्चैः श्रवा घोड़ा 4. कौस्तुम मणि 5. कल्पवृक्ष 6. अप्सरा 7. धनवन्तरी-साक्षात विष्णु के अक्षांश अवतार 8. लक्ष्मी-अमृत कलश 9. हलाहल 10. वारूणी देवी
8. क्रिकेट के खिलाड़ी- क्रिकेट में 11 खिलाड़ी होते हैं, पर खेल का निर्णय 10वें खिलाड़ी के आउट होने पर ही हो जाता है।
9. यह मान्यता है कि सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण का कुप्रभाव ग्रहण लगने के दस घंटे पहले शुरू हो जाता है।
10. लोकप्रचलित दस भारतीय वाद्य-यंत्र
1.वीणा 2.हारमोनियम 3. तबला 4. ढोलक 5. सितार 6. बांसुरी 7. तानपुरा 8. पखावज 9. मंजीरा 10. तुरही
11. तबले के दस बोल-
धा, धिन, तिट, तिन, ना, क, धी, ना, कि, क्त
12. संगीत के दस ठाठ
1. यमन (कल्याण) 2. विलावल 3. खमाज 4. भैरव 5. पूर्वी 6. मारवा 7. काफी 8. आसावरी 9. तोड़ी 10. भैरवी
इन ठाठों से राण उत्पन्न होते हैं।
13. दशहरा- राम-रावण युद्ध के वाद राम की विजय स्वरूप यह त्योहार मनाया जाता है। राम-रावण युद्ध दस दिन चला है। मां दुर्गा भी आश्विन मास में नौ दिन के लिए पृथ्वी पर आती है दसवें दिन ही उनका विसर्जन होता है।
14. दस नम्बरी- बहुत चालाक मनुष्य
15. दस दिशाएं-
1. पूरब, 2. पश्चिम 3. उत्तर 4. दक्षिण 5. ईशान 6. अग्नि 7. नैऋत्य 8. वायु 9. अर्ध्व-आकाश 10. अधरस्त्व

- सविता (नीलू) दवे दिल्ली

संता की वकालत!

प्रोफेसरः अगर तुम्हे किसी को संतरा देना हो तो क्या बोलोगे?

संताः ये संतरा लो।

प्रोफेसरः नहीं, एक वकील की तरह बोलो।

संताः मैं एतद द्वारा अपनी पूरी रुचि और बिना किसी के दबाव में यह फल जो संतरा कहलाता है, को उसके छिलके, रस, गुदे और बीज समेत देता हूँ और साथ ही इस बात का सम्पूर्ण अधिकार भी कि इसे लेने वाला इसे काटने, छीलने, फ्रिज में रखने या खाने के लिये पूरी तरह अधिकार रखेगा और साथ ही यह भी अधिकार रखेगा कि इसे वो दूसरे को छिलके, रस, गुदे और बीज के बिना या उसके साथ दे सकता है... और इसके बाद मेरा किसी भी प्रकार से इस संतरे से कोई संबंध नहीं रह जाएगा।

रामकथा के अति अल्पज्ञात प्रसंग

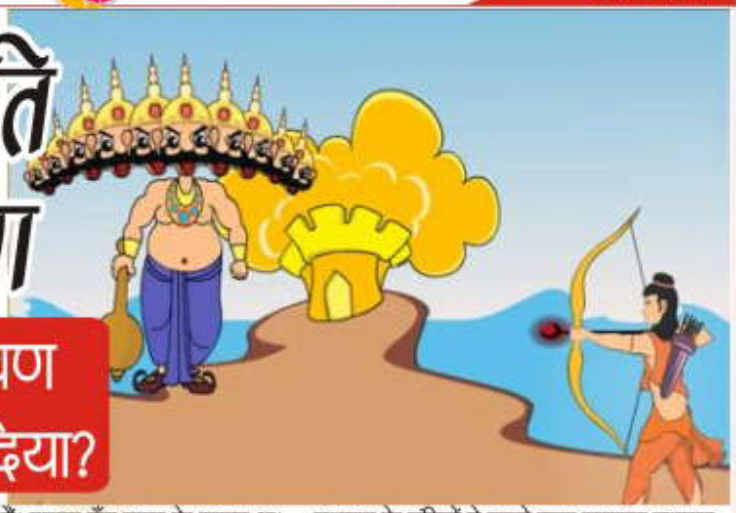

दशानन-दशग्रीव से रावण नाम किसने, क्यों, कब दिया?

रामायण में कुछ ऐसे प्रसंग हैं जो हमारे समाज में अति अल्पज्ञात हैं क्योंकि वाल्मीकिजी रचित रामायण संस्कृत भाषा में है। संस्कृत के श्लोकों को समझना एक सामान्य व्यक्ति के लिये कठिन होता है। रामायण में ऐसे अनेकों अति अल्पज्ञात प्रसंगों में से ही एक प्रसंग का यहाँ वर्णन है। रामायण के उत्तरकाण्ड के सोलहवें सर्ग में दशानन-दशग्रीव रावण कैसे बना इसका वर्णन अगस्त्यजी श्रीराम को बताते हैं। दशानन ने अपने ही भाई कुबेर के राज्य को जीत लिया तथा श्रवण नाम के प्रसिद्ध सरकंडों के विशाल वन को जो कि कार्तिकेयजी की उत्पत्ति स्थल था को पार करता हुआ पर्वत पर चढ़ने लगा। उस समय ही उसके पुष्पक विमान की गति रूक गई तथा विमान निश्चेष्ट हो गया। दशानन को बड़ा दुःख एवं आश्चर्य हुआ कि स्वामी की इच्छानुसार चलने वाले विमान को क्या हो गया! उसी समय भगवान शंकर के पार्षद नंदीश्वर दशानन के पास पहुँचे। नन्दीश्वर देखने में विकराल एवं बलवान थे। उन्होंने दशानन से कहा लौट जाओ। इस कैलाश पर्वत पर भगवान शंकर क्रीड़ा करते हैं। यहाँ सम्पूर्ण नाग, यक्ष, देवता, गन्धर्व और राक्षस सभी प्राणियों का आना-जाना बंद कर दिया गया है- निवर्तस्व दशग्रीव शैले क्रीडति शंकरः। सुपर्णनागयक्षाणां देवगन्धर्वरक्षसाम्।। सर्वेषामेव भूतानामगम्यः पर्वतः कृत। - वा.रा.उत्तरकाण्ड, 16।10) नंदीश्वर की बात सुनकर दशानन क्रोधित हो गया और पुष्पक से उतरकर बोला कौन है? यह शंकर? इतना कहकर पर्वत के मूल भाग में पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने देखा भगवान शंकर से थोड़ी ही दूरी पर चमचमाता हुआ शूल हाथ में लिये नन्दी दूसरे शिव की भाँति खड़े हैं। उनका मुँह वानर के समान था। उनके वानर मुख को देखकर दशानन ठहाका मारकर हँसने लगा- सौऽपश्यन्नन्दिनं तत्र देवस्यादूरतः स्थितम् दीप्तं शूलमवष्टभ्य द्वितीयमिव शंङ्करम्।। तं दृ ।वानरमुखमज्ञाय स राक्षसः। प्रहासं मुमुचे तत्र सतोय इव तोयदः।। - वा.रा.उत्तरकाण्ड,सर्ग 16।13-14। यह देखकर शिव के दूसरे स्वरूप मे भगवान नंदी क्रोधित होकर बोले-दशानन तुमने मेरे वानर रूप में मुझे देखकर अवहेलना एवं ठहाका लगाकर वज्रपात किया है। अतः तुम्हारे कुल का विनाश करने के लिये मेरे ही समान पराक्रमी एवं तेज से सम्पन्न वानर उत्पन्न होंगे। ये वानर एकत्र होकर तुम्हारे मंत्री और तुम्हारे पुत्रों सहित प्रबल अभियान को चूर-चूर कर देंगे। तू अपने ही कर्म से मरा हुआ है अतः मैं मरे हुए को मारता नहीं हूँ। दशानन बोला कि मेरे पुष्पक विमान की गति जिस पर्वत के कारण रूक गई है, मैं उस पर्वत को जड़ से ही उखाड़ फेंकता हूँ। ऐसा कहकर दशानन अपनी भुजाओं के निचले भाग से पर्वत उठाने का प्रयत्न करने लगा तथा पर्वत हिलने लग गया। पर्वत के हिलने से शंकरजी के सारे गण एवं पार्वतीजी विचलित हो उठी तथा शंकरजी से लिपट गई। अगस्त्यजी श्रीराम से कहते हैं कि तब महादेवजी ने पर्वत को पैर के अँगूठे से ही दबा दिया। दशानन के हाथ पर्वत से दब गये। दशानन मंत्रीगण व राक्षस आश्चर्य में पड़ गये। दशानन ने रोष तथा अपनी बाहों की पीड़ा के कारण सहसा बड़े ही जोर से विराव-रोदन अथवा आर्तनाद करने लगा, जिससे तीनों लोकों के प्राणी काँप उठे। उसके रूदन से समुद्रों में ज्वार आ गया, पर्वत हिल उठे। यह देख कर दशानन के मंत्रियों ने उससे कहा महाराज दशानन अब आप नीलकंठ, उमावल्लभ महादेवजी को सन्तुष्ट कीजिये। उनके सिवा दूसरे किसी को हम ऐसा नहीं देखते हैं, जो यहाँ आपको शरण दे सके। आप महादेवजी की स्तुतियों द्वारा उन्हें प्रणाम करके उन्हीं की शरण में जाइये। भगवान शंकर बड़े दयालु हैं वे सन्तुष्ट होकर आप पर कृपा करेंगे। मंत्रियों के कहने पर दशानन ने भगवान शंकर को नाना प्रकार के स्तोत्रों तथा सामवेदोक्त मंत्रों द्वारा उनका स्तवन किया। इस प्रकार हाथों की पीड़ा से रोते हुए और स्तुति करते हुए उस राक्षस के एक हजार वर्ष बीत गये। महादेवजी ने प्रसन्न होकर दशानन की भुजाओं को संकट से मुक्त कर दिया तथा कहा-दशानन, तुम वीर हो, मैं तुम्हारे पराक्रम से प्रसन्न हूँ। तुमने पर्वत से दब जाने के कारण जो अत्यन्त भयानक राव (आर्तनाद) किया था, उससे भयभीत होकर तीनों लोकों के प्राणी रो उठे थे, इसलिये राक्षसराज, अब तुम रावण के नाम से प्रसिद्ध होओगे। देवता, मनुष्य, यक्ष तथा दूसरे जो लोग भूतल पर निवास करते हैं, वे सब इस प्रकार समस्त लोकों को रूलानेवाले तुझ दशग्रीव को रावण कहेंगे। यस्माल्लोकत्रयं चैतद् राविंत भयभागतं। तस्मात् त्वं रावणो नाम नाम्ना राजन् भविष्यसि।। देवता मानुषा यक्षा ये चान्ये जगतीतले। एवं त्वामभिधास्यन्ति रावणं लोकरावणं।।

-वा.रा.उत्तरकाण्ड,सर्ग 16। 36,37,38

डॉ. नरेन्द्र कुमार
मेहता उज्जैन,
मो. 9424560115

सुख-शांति के सूत्र

आज सबसे ज्यादा जिस चीज की तलाश अधिकतर लोग कर रहे हैं, वह है-शांति। हर व्यक्ति की यही आकांक्षा रहती है कि उसे कुछ पल ऐसे मिल जाएं जिनमें वह जीवन की सैंकड़ों पेचीदगियों से थके लस्त-पस्त दिमाग को सकून दे सके। पर सुख शांति और सकून किसी अंधेरी गुफा में छुप कर जा बैठते हैं। व्यक्ति को आगे पीछे देर सवेर यह समझ लेना चाहिये कि हमारी जिन्दगी के शिल्पकार हम खुद हैं, कोई दूसरा नहीं। सुनहरे अतीत में खोए रहना और कर्म किए बिना भविष्य के शेखचिल्ली सपने देखना बंद करके नीचे लिखे कुछ ठोस कदम आसानी से उठाए जा सकते हैं -1 सबको खुश नहीं रख सकते - कोई भी व्यक्ति चाह कर भी उसके संपर्क में आने वाले सभी लोगों को खुश नहीं रख सकता। इसलिए इस तरह की कोशिशों का परिणाम हमेशा अपने मनमाफिक नहीं होता है। अपने किसी काम से किसी का नुकसान न हो यह ध्यान जरुर रखना चाहिये। 2 दूसरों के कामों में दखल अंदाजी न करें - दूसरों के कामों में हस्तक्षेप करने के परिणाम हमेशा तकलीफदेह होते हैं। हर

आदमी का नजरिया अलग होता है। और उसे ही वह उपयुक्त समझता है। अपनी राय मांगने पर दो तभी उसकी कद्र होती है। 3 प्रशंसा और सम्मान पाने की लालसा से बचें - आजकल लोगों के मन में स्वार्थ का तत्व इतना ज्यादा सक्रिय रहता है कि लोग उन्हीं का सम्मान करते हैं, जिनसे उन्हें अपना उल्लू सीधा करना हो। अपनी प्रतिभा और काबलियत के बल पर कोई चाहे कि लोग उसका सम्मान और प्रशंसा करें तो उसे समझ लेना चाहिए कि ऐसी चाह से उसके मन की शांति में भूचाल आने वाला है। अभिनंदन और सम्मान आजकल उन्हीं का होता है जो सम्मान राशि, शाल श्रीफल और समारोह के आयोजन का सारा खर्च खुद उठाते हैं। इसलिए शान्ति और सकून की तलाश है तो सम्मान की लालसा को तिलांजलि दे दें। 4 ईर्ष्या न करें - यह बात अच्छी तरह समझ लें कि ईर्ष्या हमारे मन की शान्ति को छिन्न भिन्न कर देती है। सफलता और समृद्धि पाने में जितना हाथ मेहनत का है, उससे ज्यादा नियति का होता है। आपके जीवन में जो उपलब्धि होना है उसे कोई रोक नहीं सकता और जो प्रारब्ध और नियति में नहीं है, उसे कोई दे नहीं सकता। इसलिए ईर्ष्या से बचें। 5. खुद को बदलें - यदि आप दुनिया नहीं बदल सकते तो परिस्थिति के अनुसार खुद को बदल लें। जिसका इलाज करना बस में नहीं है उसे सहन करना सीख लें। दुखी उदास होने से कुछ नहीं संवरता। अफसोस करना छोड़ दें। यदि शांति की कामना है तो पैसे के पीछे भागना छोड़ दें। इस तरह कुछ छोटी छोटी बातों को ध्यान में रख कर आप सुख शांति और सकून पा सकते हैं।

डॉ0 रणवीर नागर
उज्जैन, 9926573054

हिन्दी को हिन्दी ही लिखे, हिंदी नहीं

भारत विभिन्न भाषा एवं संस्कृति का देश है। यहां की भाषाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि उसे जैसा लिखा जाता है, वैसा ही उच्चारण किया जाता है, अंग्रेजी, भारतीय भाषा नहीं है, यह तो आयातीत भाषा है, इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा उच्चारण नहीं किया जाता।

उदाहरण के लिये साईकोलॉजी शब्द पर्याप्त है, जिसकी स्पेलिंग क्या है, और उसे पढ़ा क्या जाता है। भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।

पूरा उत्तर भारत इसे मातृभाषा के रूप में सम्मान देता है। कारण भी स्पष्ट है। संस्कृत से इसका प्रादुर्भाव हुआ है, इसीलिये इसे देवनागरी की उपाधि से विभूषित किया गया है किन्तु पाश्चात्य संस्कृति एवं भौतिकवाद के प्रदूषण से अब हिन्दी शब्द भी प्रभावित होने लगा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा प्रिन्ट मीडिया वर्तमान में हिन्दी शब्द को हिंदी के रूप में छाप रहा है। जो मेरी दृष्टि से उचित नहीं है।

हिन्दी भाषा की वर्णमाला में 0 शून्य (बिन्दु) अं की वर्तनी हैं, वर्तमान में मीडिया या अन्य प्रकाशनों में हिन्दी न लिखकर हिंदी लिखा जा रहा है। यह त्रुटिपूर्ण है। वर्णमाला की वर्तनी के अनुसार हिंदी का उच्चारण हिंदी न होकर हिम्दी होता है। फलस्वरूप हिन्दी शब्द का स्वरूप ही बदल जाता है। यह मेरे निजी विचार है। हिन्दी भाषा की प्रगति एवं लोकप्रियता में हिन्दी भाषा के ही मूर्धन्य विद्वानों एवं अनुवादकों ने अवरोध उत्पन्न कर दिया है। शासकीय विधेयक जो लोकसभा या विधानसभा में पारित होते हैं, उनका जो अनुवाद हिन्दी में किया जाता है उसमें ऐसे क्लिष्ट शब्दों का समावेश कर दिया जाता है, जिसे पढ़कर साधारण व्यक्ति तो क्या हिन्दी के ज्ञाता को भी पसीना आ जाता है। मैंने म.प्र. विधानसभा में पारित एक विधेयक का आद्योपान्त अवलोकन किया है। इन्हीं कारणों से दक्षिण भारत के लोग हिन्दी भाषा से घृणा कर विरोध पर उतर आये हैं।

होना तो यह चाहिये कि हम अपनी मातृभाषा पर पाण्डित्य की छाप न लगाकर उसे सरल से सरलतम रूप देकर जनप्रिय बनाने में सहयोग करें।

इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया से मेरा सानुरोध निवेदन है कि कृपया हिंदी न लिखकर हिन्दी ही प्रिन्ट करने की कृपा करें।

त्रिभुवन लाल मेहता
से.नि.प्र.अ.
पीपलरावां, जिला
देवास म.प्र.

अपने सपनों पर यकीन करें...

मुश्किलों के मैदान पर अपने दम पर टिके रहना वाकई एक सुखद अनुभूति है। अगर आप अपने दम पर अकेले खड़े रहते हैं तो दुनिया को आपकी बातों को समझना, मानना और अपनाना पड़ता है। सीखें अपने दम पर अकेले खड़े रहना।

कई बार आप कोई सपना देखते हैं और उसे पूरा करने का प्रयास करते हैं, पर दुनिया में कोई भी आपके साथ खड़ा नहीं होता। किसी को भी आपके सपने पर यकीन नहीं होता। ऐसे में घबराने की जरूरत नहीं है। सच्चाई तो यह है कि हर महान काम और सपना खुद के बलबूते ही पूरा किया जा सकता है। क्या आप अकेले खड़े रह सकते हैं और दुनिया की बातों का मुकाबला कर सकते हैं? अगर आप काबिल हैं तो आपको दूसरों की आलोचना से परेशान होने की जरूरत नहीं है।

स्वामी रामदेव कहते हैं, अकेला इंसान क्या कुछ नहीं कर सकता। पत्थर को भी फोड़ सकता है। अक्सर दुनिया में कहा जाता है कि उसके साथ कोई नहीं है, वह कुछ नहीं कर पाएगा। यह बात सामने वाले को कमतर आंककर कही जाती है। यह सच बात नहीं है। जब आप अकेले सपना देखते हैं तो खुद पर भरोसा करते हैं। आप दूसरों को अपना विश्वास, सपने या विचार प्रदान नहीं कर सकते। आपको अपने सपने अपने पास रखने होंगे और दुनिया को साबित करना होगा कि अकेले के दम पर दुनिया जीती जा सकती है। एक बार आप खुद के बूते सफल हो जाते हैं तो दुनिया को भी आपकी बात को सुनना, समझना और अपनाना पड़ता है। आलोचकों के मुंह बंद हो जाते हैं और हर तरफ आपकी चर्चा होने लगती है। आपको भीड़ से बाहर निकलना होगा और मुसीबतों का खुद आगे बढ़कर सामना करना पड़ेगा। दूसरों के अनुसरण के चक्कर में आप खुद को आगे बढ़कर सामना करना पड़ेगा। दूसरों के अनुसरण के चक्कर में आप खुद की राह भूल सकते हैं। आप दूसरों के सपनों को अपना नहीं बना सकते, इसलिए अपने सपनों का यकीन करें।

इसके लिए आपको एकांत में चिंतन करना चाहिए कि आपकी असली ताकत क्या है और आप जिंदगी में क्या हासिल कर सकते हैं। यह जवाब आपको अपने अंदर से ही मिल सकता है। इसके लिए आपको समय निकालना होगा और मन की बात को सुनना होगा। कोलाहल में रहने के कारण इंसान अपने मन की आवाज को सुनना भूल चुका है। वह अक्सर लोगों के कहे में आ जाता है और अपने लक्ष्य को भुला देता है। आपको ऐसा नहीं करना है। आपको बनी-बनाई राह छोड़कर खुद अपनी राह बनानी है। यही सही है कि हम सब साथ-साथ हैं, पर हम सब अपने-अपने दम पर ही आगे बढ़ते हैं। इसलिए दूसरों की ताकत या मदद के सहारे रहने के बजाय खुद अपने अंदर ताकत विकसित कीजिए।

ॐ जय हाटकेश।

- डायालाल नागर, अध्यापक
सिरोही (राज.)
9610937004

गोवर्धन पूजा की परम्परा द्वापर युग से जारी है

दिवाली के बाद कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा पर उत्तर भारत में मनाया जाने वाला गोवर्धन पूजा धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें हिन्दू धर्मावलंबी घर के आंगन में गाय के गोबर से गोवर्धन नाथ जी की अल्पना बनाकर उनका पूजन करते है। तत्पश्चात ब्रज के साक्षात देवता माने जाने वाले गिरिराज भगवान (पर्वत) को प्रसन्न करने के लिए उन्हें अन्नकूट का भोग लगाया जाता है। यह परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है। उससे पूर्व ब्रज में भी इंद्र की पूजा की जाती थी। मगर भगवान कृष्ण ने यह तर्क देते हुए कि इंद्र से कोई लाभ नहीं प्राप्त होता जबकि गोवर्धन पर्वत गौधन का संवर्धन एवं संरक्षण करता है, जिससे पर्यावरण भी शुद्ध होता है। इसलिए इंद्र की नहीं गोवर्धन की पूजा की जानी चाहिए। कृष्ण ने दाउ को संबोधित कर स्पष्ट कहा है कि गोवर्धन उनके गौ-धन की रक्षा करते है। वृक्ष देते हैं और ऐसे में हमे उनका पूजन-वंदन करना चाहिए। वह हमारी प्रकृति की रक्षा करते हैं। इस प्रकार भगवान कृष्ण ने ब्रज में इंद्र की पूजा के स्थान पर कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पूजा की परंपरा प्रारंभ कर दी। ब्रज में स्थित द्वापरकालीन पहाड़ियों, पर्यावरण एवं यमुना की रक्षा के लिए संघर्षरत जयकृष्ण दास ने इस संबंध में बताया कि कृष्ण पर्यावरण के सबसे बड़े संरक्षक थे। इंद्र के मान-मर्दन के पीछे उनका यही उद्देश्य था कि ब्रजवासी गौ-धन एवं पर्यावरण के महत्व को समझें और उनकी रक्षा करें।

- **अर्पित मेहता**, इंदौर

परिधान के पराधीन

पाषाण युग से वर्तमान युग तक कितनी ही सभ्यताओं ने जन्म लिया, और काल के गर्त में अपना इतिहास दफन कर गई। कालान्तर में जाकर की गई खुदाई से उस समय के रहन सहन, रीति रिवाज व परिधान आदि का पता चलता है, इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि आदम युग में लोग घुमक्कड़ जीवन बिताते थे। वृक्षों के पत्तों व मृगछालाओं से परिधानों की शुरुआत हुई। जंगली जानवरों से रक्षा हेतु पत्थरों के हथियारों का प्रयोग शुरू हुआ तथा मनुष्यों ने आत्मरक्षा हेतु समूह में रहना शुरू किया। समूह से परिवार व अलग-अलग जगह स्थाईत्व हेतु गांवों का निर्माण हुआ। समय व मौसम अनुसार कई सभ्यताओं ने जन्म लिया व परिधानों का चलन बदलता गया। परिधानों की दृष्टि से हम यदि वर्तमान में दृष्टि डालें तो पीछे मुड़कर देखने का समय नहीं है। आज परिधान मनुष्यों के स्टेटस का सिम्बल बन गया है। परिधानों से व्यक्तित्वों का मूल्यांकन किया जाने लगा है। जितना ऊंचा व महंगा परिधान, उतना ही व्यक्ति महान माना जाने लगा है। परिधान रुदबे का सूचक हो गया है। या यूं कहे कि परिधान व्यक्तित्व का पोषक हो गया है- परिधानों ने प्रतियोगिता का रूप ले लिया है। आज जो परिधान हमने पहना है वह कल पुराना होकर चलन से बाहर हो गया है वह घर में रखे पुराने संदूकों की शोभा बढ़ा रहा है। परिधानों ने लोगों की मानसिकता बदल दी है। सोचने समझने का किसी के पास वक्त ही नहीं है। परिधान हमारे शरीर का कवच है, जिसे मौसम व समय अनुसार पहनना है। परिधान हमारी सभ्यता व संस्कृति के अनुरूप हो तो वह ज्यादा अच्छा व सुहाना लगता है लेकिन वर्तमान में हालात यह हो गए हैं हमने अपनी सीमाओं को लांघ कर परिधानों के दास बनना स्वीकार कर लिया है। कहीं शादी में जा रहे हो या पार्टी में, यदि वहां शामिल होने वाले अन्य लोगों के स्तर पर हम कपड़े पहनकर नहीं गए तो शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा। यही सोच ने परिधानों में प्रतियोगिता शुरू कर दी है तथा आम आदमी का बजट बिगाड़ दिया है। हर घर परिवार में खाने पर कम परिधानों पर अथाह खर्च किया जा रहा है। हम इसे रोक नहीं पा रहे हैं, यह हमारी परिधानों के लिए पराधीनता नहीं है तो क्या है? परिधान हमारे लिए है पर हमें परिधान के दास हो कर रह गए हैं। परिधानों की फैशन की बीमारी घर-घर में महामारी की तरह फैलती जा रही है। तंग मोरी के पेंट जिंस व बुशर्ट या टाप की ऐसी बाढ़ आ गई है कि लड़के या लड़की की पहचान करना मुश्किल हो गया है। एक बार स्टेज पर एक लड़का जिंस पेंट में हाल में डांस कर रहा था। व दर्शकों की वाहवाही लूट रहा था। एक दर्शक कुछ ज्यादा ही उत्साहित होकर खड़ा हो गया और ताली बजाकर बोला वाह क्या बात है लड़के ने डांस में कमाल कर दिया। पास वाला दर्शक भी जिंस पेंट पहने बैठा था बोल पड़ा वह लड़का नहीं मेरी लड़की है। उत्साहित दर्शक ने कहा आप भाग्यवान पिता है जो ऐसी कलाकार बेटी मिली। पास वाले दर्शक ने कहा क्षमा करना मैं लड़की का पिता नहीं उसकी मां हूं। कहने का तात्पर्य यह है कि महिलाओं एवं युवतियों के नए जमाने के परिधानों को लेकर मैं अन्य कोई ओर दूसरी टिप्पणी नहीं करना चाहता वरना चारों ओर ऐसे मुझे पुराने विचारों वाला, दकियानुसी, बेकवर्ड के व्यंग बाणों को सहना पड़ेगा और महिला आयोग के विरोध का सामना करना पड़ेगा जो अलग। पर इतना जरूर कहना चाहूंगा कि युवतियों और महिलाओं के परिधानों में शालीनता पीछे छूटती जा रही है। तंग जीन्स टाप, पारदर्शी परिधान, हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाते हैं। फैशन की अंधी दौड़ में सास बहू में फर्क नहीं मालूम पड़ता है। यह कहना भी गलत होगा कि क्या अब दो-दो हाथ का घूंघट निकाल कर रहें तो हमारी सभ्यता संस्कृति महान हो जाएगी। उम्र व परिवार की प्रतिष्ठा के मान से परिधान का चयन होना चाहिए। महिलाओं के पक्ष में मशहूर शायर अकबर इलाहबादी की ये पंक्तियां दे रहा हूं-

बै पर्दा नजर आई जो चंद बीवियां,
अकबर गैरत ए कोम से पानी में गड़ गया।
पूछा कि आपका पर्दा गया किधर?
कहने लगी कि अक्ल पे मर्दों के पड़ गया।।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि हमें अपना मूल्यांकन स्वयं करना है। परिधान से मनुष्य की पहचान होती है, वाली बात तो ताक में रखना होगी। हम यह क्यों भूल जाते हैं, यदि परिधान से ही मनुष्य का मूल्यांकन या पहचान होती तो आज पूरे विश्व में सिर्फ एक लंगोटी वाली धोती पहनने वाले महात्मा गांधी को कोई नही जानता। मोटी साड़ी पहनने वाली मदर टेरेसा को सब भूल जाते। गेहूंए वस्त्रधारी स्वामी विवेकानंद, अमेरिका जैसे प्रगतिशील देश में भारतीय दर्शन का डंका नहीं बजा पाते। परिधान किसी भी दशा में हम पर हावी नहीं होना चाहिए। आपके व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने में आपके परिधान नहीं बल्कि कड़ी मेहनत, अपने लक्ष्य के प्रति आगे बढ़ने का अदम्य साहस, दूरदर्शिता ही सर्वोपरि होना चाहिए। परिधानों का चयन सोच समझकर करें, कहीं ऐसा न हों हम पर यह कहा वत चरितार्थ हो जाए-

ऊपर से बैल बूटे और नीचे से पैंदे-फूटे।।

अतः परिधानों के पराधीन नहीं बने। सभी बुजुर्गों के आशीर्वाद और भगवान हाटकेश्वर की कृपा के हकदार होंगे।

- *सुरेश दवे मामा*
शाजापुर, 9424027500

क्रांतिकारियों का भारत बनाएं युवा...

एक महान क्रांतिकारी, विचारक भविष्यदृष्टा।
(28 सितम्बर-भगत सिंह जयंती परिप्रेक्ष्य में पुण्य-स्मरण)

हमारे भारत को स्वतंत्र हुए 68 वर्ष और भगतसिंह की शहादत को आठ दशक से अधिक होने पर भी वे आज के संदर्भ में अधिक सामयिक व प्रासंगिक लगते हैं तो उसका प्रमुख कारण उनके विचारों की यह ताजगी ही है। कौन जानेगा कि मात्र 23 वर्ष की अल्पायु में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बांगला व आयरिश भाषा के मर्मज्ञ चिन्तक और विचारक भगतसिंह भारत में समाजवाद के एक बड़े विचारक थे।

उन्होंने कारावास की काल कोठरियों से लेकर झोपड़ियों तथा बस्तियों में तड़पते लाखों इंसानों के समुदाय से लेकर, उन शोषित मजदूरों से लेकर जो पूंजीवादी पिशाच द्वारा खून चूसने की प्रक्रिया को धैर्यपूर्वक देख रहे हैं तथा उस मानव शक्ति की बर्बादी देख रहे हैं जिसे देखकर कोई व्यक्ति जिसे तनिक भी सहज ज्ञान है। भय से सिहर उठेगा। लेकिन लोग देख रहे हैं और फिर कहते हैं कि सब कुछ ठीक है। यह बात उनके द्वारा जुलाई 1928 में कानपुर में आयोजित एक मीटिंग में कही थी। इस मीटिंग में भगतसिंह ने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपने को व्यक्त किया था। उनके समाजवाद के प्रखर विचारक होने का एक प्रमाण यह भी है कि उन्होंने इसी सभा में अपनी पार्टी का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्टिम रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया था जो पूर्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन कहलाती थी।

उनके विचार में आजादी के मायने यह नहीं होते कि सत्ता गोरों के हाथों से काले हाथों में आ जाए, यह तो सत्ता का हस्तांतरण हुआ। असली आजादी तो तब होगी जब वह आदमी जो खेतों में अनाज बोता है भूखा नहीं सोएगा, वह आदमी जो बुनकर है स्वयं नंगा नहीं रहेगा, वो आदमी जो मकान बनाता है। खुद बेघर नहीं रहेगा। ऐसे विचारोत्तेजक उद्‌गार थे अमर शहीद भगतसिंह के। अन्याय, अत्याचार, शोषण, राजनीति, धर्म और उसके पाखंड पर प्रहार करते हुए भगतसिंह के ये क्रांतिकारी विचार देश के कर्णधारों के सम्मुख लाने के लिए सर्वाधिक सही समय है।

ईश्वर मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च में नहीं है वह यदि है तो मंदिर के बाहर सोये उस भूखे इंसान में जो तीन दिन से भूखा है, मस्जिद की दहलीज पर बैठे उस इंसान में है जिसके ठंड से ठिठुरते जिस्म पर चादर नहीं है, वह किसानों में है, खेतों में है, मजदूरों में है, कारखानों में है, कलमकारों में है यानि हर मेहनतकश इंसान में है और अगर वह वहां नहीं, तो वह कहीं भी नहीं है। कहने का मतलब यह है कि अगर एक आदमी भी इस संसार में भूखा है तो हम सब अपराधी हैं क्योंकि हम सब खा रहे हैं।

शहीद भगतसिंह की निगाह में भगवान मनुष्यों में है क्योंकि जिस भगवान को किसी ने देखा नहीं उसकी बात करने की अपेक्षा उसकी बात करें जो हमारे साथ हैं, इंसान की बात, मनुष्य की बात, उसके दु:ख सुख की बात, संसार का सबसे बड़ा और सबसे ऊपर का कोई सत्य है तो वह मनुष्य है, मानवता है। वे सभी वर्गों की समानता की बात करते थे। वे चाहते थे कि आजादी के बाद सबको न्यायपूर्ण हक मिले, भारत में कोई भूखा बेबस, गरीब, लाचार न हो। बड़ी विडम्बना है कि आजादी के 67 वर्षों बाद भी भगतसिंह का सपना अधूरा है। देश के करोड़ों लोग आज भी भूखे सोते हैं, बेबसी व अपमान की जिंदगी जीते हैं। पता नहीं इन लोगों के सपने कब पूरे होंगे और कौन करेगा?

राष्ट्र कल्याण के लिए भगत सिंह युवकों की भूमिका को बड़ा महत्वपूर्ण मानते थे। वे बार-बार युवकों को देश सेवा के लिए पुकारते थे। भगत सिंह का ये आह्वान था कि देश की रक्षा के लिए, भ्रष्ट व्यवस्थाओं को मिटाने के लिए, असमानता व शोषण को मिटाने के लिए हमें खड़े हो जाना चाहिये और अपने आपको आहूत कर देना चाहिये।

देश के सभी युवाओं से आह्वान है कि वे भी इस पुण्य, पवित्र अभियान से जुड़कर देश से असमानता, वर्ग संघर्ष व भ्रष्टाचार की जड़ें उखाड़ फेंकने में अपना समय देवें तभी इन क्रांतिकारियों का भारत बनेगा।

- महेश त्रिवेदी, इन्दौर
मो- 7869266131

आधुनिकता के सिलबट्टे पर संस्कारों की घिसाई

आधुनिक शब्द का दुरूपयोग व्यक्ति अपने स्वार्थ एवं सुविधा के अनुसार करता है। मैं आधुनिकता के खिलाफ नहीं हूं और पूर्वाग्रहों से ग्रसित भी नहीं हूं, इसलिये जो व्यक्ति अपने को अधिक प्रेक्टिकल बनाने की कोशिश करता है वह सोचता है कि जो मैं कर रहा हूं, जो सोच रहा हूं वह बिल्कुल सही है, दूसरा कोई ऐसा नहीं कर सकता है। वास्तव में यह सोच वह अपनी सुविधा के लिये बनाता है जिससे उसका बाहरी सौंदर्य, दिखावा, बनावटीवन व पैसा बना रहे। वह यह सब सोचने, करने में इतना तल्लीन है कि नाशवान चीजों को भी जीवित वस्तुओं से अधिक महत्व देने लगा है। मेरे घर की वस्तुएं घर का सौंदर्य बढ़ा रही है अथवा नहीं, वह किसी के छूने से खराब तो नहीं हो रही हैं, यहां तक कि जो वस्तुएं मनुष्य के आराम के लिए बनाई जाती हैं, वह उनको भी दिखाने की ही वस्तुएं समझता हैं वह अपने अभिमानी स्वभाव को भी आधुनिकता का आवरण पहनाने की असफल कोशिश कर रहा है। ताकि खुद को सही सिद्ध कर सके। आधुनिकता को ही शायद प्रेक्टिकल लाइफ जीने का नाम दे दिया गया है। इस जीवन की शैली को मेरी समझ में व्यक्ति को वास्तविकता से दूर ले जाती है, जहां आदमी सिर्फ अपने मूल परिवार (पति, पत्नी और बच्चे) को ही महत्व देने के लिए खास रिश्ते जैसे मां-बाप, भाई-बहन को भी दूर समझने लगा है। इस प्रेक्टिकल लाइफ जीने के बहाने आदमी स्वार्थी बन गया है, क्या पति-पत्नी और अपने बच्चों के लिए जीना ही प्रेक्टिकल लाइफ है, मैं सोचती हूं कि उसे फिर तो अपने माता-पिता से भी कोई उम्मीद नहीं करना चाहिए। क्या माता-पिता द्वारा अर्जित सम्पत्ति को वह लेने की इच्छा नहीं रखता है, क्या माता-पिता द्वारा अर्जित सम्पत्ति में यदि बहन हिस्सा मांगती है तो उसे कष्ट नहीं होता है? क्या माता-पिता को विवाह के पश्चात उन्हें ईश्वर के विश्वास पर छोड़ देना चाहिए, क्या माता-पिता की सेवा करना अपना कर्तव्य नहीं है, यदि व्यक्ति ऐसा ही सोचता है तो उसे यह भी सोच लेना चाहिये कि चक्र घुमता है, उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार होगा, जो उसने अपने माता-पिता के साथ किया है, क्योंकि उसके बच्चे यह सब देखते हैं, लेकिन बोलते नहीं है। मेरी समा में स्वार्थी जीवन जीना ही प्रेक्टिकल लाइफ है आधुनिकता है। आज इंतहा यह है कि बेटा माता-पिता की मृत्यु पर मुण्डन कराना भी उचित नहीं समझता है, कहता है कि यह प्रथा दकियानूसी है।

आधुनिकता में इतने ना बहो, कि खुद को भी भूल जाओ, मैं किसका बीज हूं, किसने मुझे बोया है यह भी बिसर जाओ, याद रहे, हम भी कोई बीज बो रहे हैं कहीं वह पौधा बनकर भूल न जाये कि उसको किसने आरोपा है।

श्रीमती सलिला नागर,
उज्जैन, 9179472887

गीत संगीत

गीत-संगीत जीवन है,
हर रंग का, हर ढंग का
हर सुबह-शाम का
जीवन की लय ताल का
समय की गति-भूचाल का...
गीत संगीत
मीत है, प्रति है, प्रीत की रीत है
हार की जीत है, सर्वत्र-
ज्ञान में, ध्यान में, भक्ति भाव में
शक्ति में अनुशक्ति में, सजगता में
जीवन के हर पड़ाव पर, स्वर्णिम सीढ़ियां
चढ़ने पर, उतरने पर...
गीत-संगीत बोझ नहीं है
वह तो सोच है, सफर है, तैयारी है कल की
मधुर मिलन की आस से...
गीत संगीत, भाषा है प्यार की,
मौसम के मनुहार की, व्यवहार की, सद्विचार की,
वो कल की आशा है, गूंजन है, जीवन का मधुबन है
मधुमास है, कल की आस है, विश्वास है इक दूजे का
कैसी प्यास है ये गीत-संगीत की
अनबुझी-अनकही
बनाये रखती है सामीप्य इक दूजे से...।
आओ जिये जीवन को
गीत संगीत लिये...

- सुभाष नागर (भारती)
अकलेरा राजस्थान

शिक्षक में चाहिये

मां - जैसी ममता
पिता - जैसा प्यार
किसान - जैसा उद्यम
वैज्ञानिक - जैसी सूझ
तपस्वी - जैसा मन
विद्यार्थी - जैसी जिज्ञासा
और
कलाकार - जैसी लगन

संकलन-
एम.आर. मण्डलोई
खण्डवा

हंसगुल्ले

एक महिला ने अपनी मां को फोन किया,
मां मेरा उनसे झगड़ा हो गया... मैं 1-2 महीनों के लिए आपके घर आ रही हूं।
मां बोली- क्या? झगड़ा उस कमबख्त ने किया है तो सजा उसे ही मिलनी चाहिए... तू वहीं रुक...
मैं 5-6 महीनों के लिए तेरे घर रहने आ रही हूं।

पेप्सी

एक लड़का पेप्सी सामने रखकर उदास बैठा था
उसका दोस्त आया और पेप्सी पी ली और पूछा यार तू उदास क्यू है...??
दोस्त बोला आज का दिन ही बुरा है...
सुबह गर्लफ्रेंड से झगड़ा हो गया,
रास्ते में कार खराब हो गई,
ऑफिस लेट पहुंचा तो बॉस ने नौकरी से निकाल दिया।
अब सुसाइड करने के लिए पेप्सी में जहर मिलाया और वो भी तू पी गया...

नारी के सम्मान से ही उद्धार सम्भव

आज नारी के शक्तिकरण की पुरजोर मांग उठ रही है, लेकिन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में हम भारतीयों ने सदैव ही नारी को पुरुष से उच्च एवं शक्ति सम्पन्न माना है। भगवती सरस्वती, लक्ष्मी तथा पार्वती तीनों क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश (त्रिदेव) से विशेष शक्तिशाली रही है। हमारी जीवनशैली के तीन प्रमुख विभाग शिक्षा (विद्या) वित्त तथा शक्ति इनकी ये तीनों क्रमशः अधिष्ठात्री है। यही कारण है कि सरस्वती की नारी (बालिकाओं) पर विशेष कृपा रहने से शिक्षा-क्षेत्र में वे प्रतिवर्ष सर्वोच्च अंक अर्जित करने में अग्रणी रहती आई है। उनका वित्त विभाग ग्रह लक्ष्मी (ग्रहणी) को दे रखा है। पुरुष पसीना बहाकर धनोपार्जन करता है, लेकिन उसका व्यय-संचालन ग्रहणी ही करती है। शक्ति के रूप में शास्त्र-पुराणादि साक्ष है कि जहां त्रिदेव असुरों को मारने में असफल रहे उन्हें नारी ने ही (शक्तिरूपेण संस्तुता:) संहार किया है। इस प्रकार नारी तो पूर्व से ही सर्वशक्तिमान रही है। तभी तो मानस के अमर गायक कवि कुलचूड़ा मणी महाकवि तुलसीदास ने कहा है

कहा न अबला करि सकै, कहा न सिंधु समाय।
काह न पावक जरि सकै, काह काल नहि खायं।।

इतना ही नहीं कवि ने मानस के प्रथम श्लोक में धार्मिक मान्यता एवं लोक मर्यादा को त्याग कर नारी को महत्व देते हुए श्रीगणेश की अपेक्षा सरस्वती (नारी) की वंदना प्रथम की है।

वर्णानामर्थ संघानां, रसानां छंद सामपि।
मंगलामंच कर्तारो, वंदे वाणी विनायको।।

भूत भावन भगवान आशुतोष का अर्धनारीश्वर स्वरूप इस बात का संदेश देता है कि पुरुष, नारी के बिना अधूरा है। यही कारण है कि कोई भी धार्मिक अनुष्ठान नारी की उपस्थिति के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकता। यह सही है कि कालांतर में नारी के स्वत्व तथा सम्मान को चोट पहुंची है। वैदिक काल से लेकर मुगलों के आक्रमण तक भारतीय समाज में नारी को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त था। किन्तु मुगलकाल में हमारी सभ्यता और संस्कृति पर कुठाराघात हुआ और यहीं से पर्दाप्रथा प्रारम्भ होकर नारी घर की चार दीवारों में सिमट गई। साथ ही कुछ अंशों में दोनों सभ्यता और संस्कृति का भी संसर्ग प्रभाव आदान-प्रदान हुआ। यहीं से नारी के सम्मान का भी शनै-शनै हनन होने लगा। मुगलों के पश्चात अंग्रेज आए और धीरे-धीरे हमारी जीवनशैली पर पछुआ हवाओं की बौछारें होने लगी। जो क्रमशः अद्यावत जारी है। अंततः वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ और हमने मुक्त आकाश और खुली हवा में सांस ली। धीरे-धीरे देश की तस्वीर बदलने लगी, लेकिन 67 वर्ष बीत जाने के बाद भी आधी आबादी के सामने यह प्रश्न बार-बार क्यों आ जाता है कि वे सही मायने में कितनी आजाद है? यद्यपि नारी ने कई दायरे तोड़े हैं और नये आयाम भी गढ़े हैं। फिर भी अभी बहुत कुछ बाकी है। जो हासिल करना है। आज भी आजाद भारत की दो अलग-अलग फ्रेमों में नारी की प्रथक-प्रथक तस्वीरें दिखाई देती हैं। एक हवाई जहाज के पायलेट के रूप में सुनीता विलियम की अंतरिक्ष यात्रा के रूप में अथवा प्रबंधन के क्षेत्र में सर्वोच्च पद पर कुशल नेतृत्व के रूप में तो दूसरी ओर खेतों में घुटनों तक कीचड़ पानी में धार्न रोपते अथवा निराला की इन पंक्तियों में 'वह तोड़ती पत्थर, देखा मैने इलाहाबाद के पथ पर' अथवा चाट रहे झूठी पत्तल, वे सभी सड़क पर खड़े हुए और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अड़े हुए। एक गरीब भूखे मंगत बच्चों के प्रति आदि। इतना ही

नहीं वह पुरुषों के अनेकानेक जुल्मों से जूझ भी रही है। पुरुषवादी सोच में महिलाओं के कदमों को हमेशा से पीछे खींचने का ही काम किया है। वे भूल जाते हैं कि अगर वे एक सफल और सम्मानीय व्यक्ति बन सके तो उसके पीछे नारी का ही हाथ होता है। फिर वह माता हो या पत्नी।

इसलिये पुरुष को अपने अहम् को त्यागकर नारी को कदम से कदम मिला कर, साथ चलाना होगा। क्योंकि यदि पुरुष को आधा अंग अशिक्षित पीड़ित, कुपोषित या उपेक्षित होगा तो पुरुष को पूर्ण स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। इसलिये उन्नत एवं प्रगतिशील राष्ट्र की कल्पना को साकार करने के लिए नारी-शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण सोपान है। हर्ष का विषय है कि अब सभी सरकारों का ध्यान नारी शिक्षा पर केन्द्रित हुआ है जिसके धीरे-धीरे सुफल भी सामने आने लगे हैं।

अंत में पुरुष को अब नारी के उस स्वरूप को जिसमें उसे ''रुपसी तेरा घन केश पाश। श्यामल श्यामल कोमल कोमल, लहराता सुरभित केश पात्र'' सुमित्रानंदन पंत की इन पंक्तियों से पुरुष को मुक्त होना होगा। अपितु आइये वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पंत की ही इन पंक्तियों का अनुसरण करने का संकल्प लें कि योनि नहीं है नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित। उसे पूर्ण आजाद करो, वह रहे न नर पर अविकक्षिता।

तभी हम नारी जाग्रती एवं उन्नति में अपना योगदान देकर मातृत्व ऋण के प्रति एक कदम बढ़ा सकेंगे।

धन्यवाद

-हरिनारायण नागर
पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. नागर परिषद शाखा पीपलरावां

खाली पेट चूना खाना अमृत के समान

चूना जो आप पान में खाते हैं वो सत्तर बीमारी ठीक कर देता है। जैसे किसी को पीलिया हो जाए याने जॉन्डिस उसकी सबसे अच्छी दवा है चूना। गेहूं के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस में मिलाकर पिलाने से बहुत जल्दी पीलिया ठीक कर देता है। और ये ही नपुंसकता की सबसे अच्छी दवा है-

अगर किसी के शुक्राणु नहीं बनते उसको अगर गन्ने के रस के साथ चूना पिलाया जाए तो साल डेढ़ साल में भरपूर शुक्राणु बनने लगेंगे और जिन माताओं के शरीर में अंडे नहीं बनते उनकी बहुत अच्छी दवा है ये चूना।

विद्यार्थियों के लिए चूना बहुत अच्छा है, साथ ही लंबाई भी बढ़ाता है-

गेहूं के दाने के बराबर चूना रोज दही में मिलाकर खाना चाहिए, दही नहीं है तो दाल में मिलाकर खाओ, दाल नहीं है तो पानी में मिलाकर पियो, इससे लंबाई बढ़ने के साथ स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी होती है।

जिन बच्चों की बुद्धि कम काम करती है याने मतिमंद है, उनकी सबसे अच्छी दवा चूना।

जो बच्चे बुद्धि से कम है, दिमाग देर में काम करता है, देर में सोचते हैं हर चीज उनकी स्लो है, उन सभी बच्चों को चूना खिलाने से बहुत फायदा होगा।

बहनों को अपने मासिक धर्म के समय अगर कुछ भी तकलीफ होती हो तो उसकी सबसे अच्छी दवा है चूना।

हमारे घर में जो माताएं हैं जिनकी उम्र पचास वर्ष हो गई और उनका मासिक धर्म बंद हुआ उनकी सबसे अच्छी दवा है चूना। गेहूं के दाने के बराबर चूना हर दिन दाल में, लस्सी में, नहीं तो पानी में घोल के पीने से जबर्दस्त फायदा होता है। जब कोई मां गर्भावस्था में है तो चूना रोज खाना चाहिए, क्योंकि गर्भवती मां को सबसे ज्यादा केल्शियम की जरूरत होती है और चूना केल्शियम का सबसे बड़ा भंडार है। गर्भवती मां को चूना खिलाना चाहिए।

अनार के रस में- अनार का रस एक कप और चूना गेहूं के दाने के बराबर ये मिलाकर रोज पिलाइए, नौ महीने तक लगातार दीजिए तो चार फायदें होंगे-

पहला फायदा- मां को बच्चे के जन्म के समय कोई तकलीफ नहीं होगी और नॉर्मल डिलीवरी होगी।

दूसरा- बच्चा जो पैदा होगा वो बहुत हृष्ट-पुष्ट और तंदुरुस्त होगा।

तीसरा फायदा- बच्चा जल्दी बीमार नहीं पड़ता, जिसकी मां ने चूना खाया है।

चौथा सबसे बड़ा लाभ- बच्चा बहुत होशियार होता है, उसका आईक्यू बहुत अच्छा होता है। चूना घुटने का दर्द ठीक करता है, कमर का दर्द ठीक करता है, कंधे का दर्द ठीक करता है, एक खतरनाक बीमारी है स्पॉन्डिलाइटिस वो चूने से ठीक होता है। कई बार हमारी रीढ़ की हड्डी में जो मनके होते हैं उसमें दूरी बढ़ जाती है, गैप आ जाती है- ये चूना ही ठीक करता है। रीढ़ की हड्डी की सब बीमारियां चूने से ठीक होती हैं।

अगर आपकी हड्डी टूट जाए तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ने की ताकत सबसे ज्यादा चूने में है।

चूना खाइए सुबह को खाली पेट।

मुंह में ठंडा-गरम पानी लगता है तो चूना खाओ, बिल्कुल ठीक हो जाता है, मुंह में अगर छाले हो गए हैं तो चूने का पानी पियो, तुरंत ठीक हो जाता है। शरीर में जब खून कम हो जाए तो चूना जरूर लेना चाहिए, एनीमिया है खून की कमी है उसकी सबसे अच्छी दवा है ये चूना, चूना पीते रहो गन्ने के रस में या संतरे के रस में, नहीं तो सबसे अच्छा है अनार के रस में, अनार के रस में चूना पिएं, खून बहुत बढ़ता है, बहुत जल्दी खून बनता है-

एक कप अनार का रस गेहूं के दाने के बराबर चूना सुबह खाली पेट

भारत के जो लोग चूने से पान खाते हैं, बहुत होशियार लोग हैं, पर तंबाकू नहीं खाना चाहिए, तंबाकू जहर है और चूना अमृत है, तो चूना खाइए, तंबाकू मत खाइए और पान खाइए चूने का उसमें कत्था मत लगाइए, कत्था कैंसर करता है, पान में सुपारी मत डालिए? सोंठ डालिए उसमें, इलाइची डालिए, लौंग डालिए, केसर डालिए, ये सब डालिए पान में चूना लगाके, पर तंबाकू नहीं, सुपारी नहीं और कत्था नहीं।

घुटने में घिसाव आ गया और डॉक्टर कहे के घुटना बदल दो तो भी जरूरत नहीं, चूना खाते रहिए ओर हरसिंगार के पत्ते का काढ़ा पीजिए, घुटने बहुत अच्छे काम करेंगे।

राजीव दीक्षित कहते रहे हैं चूना खाइए पर चूना लगाइए मत किसी को भी।

...ये चूना लगाने के लिए नहीं खाने के लिए है, आजकल हमारे देश में चूना लगाने वाले बहुत हैं, पर ये भगवान ने खाने के लिए दिया है।

संकलन-
सौ. दुर्गा शर्मा

प्यारेलाल को टेलीफोन कार्यालय से ऑपरेटर का टेलीफोन आया और उन्हें धमकी दी गई कि उनका टेलीफोन कनेक्शन काट दिया जायेगा, यदि उन्होंने मिसेज रेहाना से क्षमा नहीं मांगी। उनकी शिकायत है कि आप फोन पर उसे डराते-धमकाते हैं और बुरा-भला कहते हैं।

प्यारेलाल ने टेलीफोन वालों को आश्वासन दिया कि वह उनसे माफी मांग लेंगे।

तुरन्त प्यारेलाल ने मिसेज रेहाना को फोन किया और पूछने लगे-'क्या मिसेज रेहाना हैं?'

'बोल रही हूं।'

'मैं प्यारेलाल बोल रहा हूं।'

'तो फिर?'

'देखिए, आज सवेरे आपसे गर्मा-गर्मी हो गई थी और मैंने आपको कह दिया था कि जहन्नुम में जाओ।'

'हां।'

'देखिए, अब आपको कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। आप घर पर ही रहिए।'

संतुलित आहार से दिल का इलाज

अस्वास्थ्यकर भोजन की आदतें, शून्य व्यायाम, आलसी जीवन शैली, ने हमें वजनदार बना दिया है. इन वर्षों में दिल की बीमारियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. और जब हृदय की समस्या की बात आती है उस समय दिल के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए स्वस्थ आदतों का अभ्यास करने के लिए सिफारिश की जाती है. उचित पौष्टिक आहार और नियमित व्यायाम, तथा किसी भी रूप में तंबाकू से दूर रहना; वजन और हृदय रोग के जोखिम को कम करने के लिए सबसे आसान तरीके हैं. फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थ हृदय रोगियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं. कम सोडियम आहार हृदय आहार योजना का एक भाग के रूप में अच्छी तरह से काम करता है. एक स्वस्थ जीवन के लिए अच्छा खाना खाना चाहिए। विभिन्न प्रकार के रोगों सामने और उसके बाद, अधिक से अधिक लोगों को स्वस्थ और फिट रहने के लिए शाकाहारी भोजन योजना को बदल रहे हैं. संतुलित शाकाहारी भोजन का नियमित सेवन उच्च रक्त चाप और मधुमेह की घटनाओं को कम, कोलेस्ट्रॉल के स्तर में सुधार, वजन कम करने में मदद कर सकते हैं, जो परिणामतः सभी के हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा कम कर सकते हैं।

हमारे शरीर को ठीक से काम करने के लिए भोजन की आवश्यकता है. आप स्वस्थ खाना खा रहे हैं, तो शरीर भी स्वस्थ हो जाएगा. पौष्टिक भोजन स्वस्थ रहने के लिए बहुत आवश्यक है. अधिक वजन वाले लोगों को हृदय रोग और स्ट्रोक होने का खतरा है. वजन नियंत्रण और नियमित व्यायाम स्वस्थ दिल के लिए महत्वपूर्ण हैं. व्यायाम और आहार एक सिक्के के दो पहलू हैं. आप उनमें से एक के साथ वजन कम नहीं कर सकते. एक पौष्टिक संतुलित आहार अच्छे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है. एक स्वस्थ आहार वजन मुद्दों का इलाज कर सकता है और कम अंतराल पर स्वस्थ भोजन वजन प्रबंधन में मदद करता है. नियमित शारीरिक गतिविधि भी स्वस्थ होने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

दैनिक आधार पर स्किम, 1| या 2| (कम वसा) दूध और दूध उत्पादों का प्रयोग करें।

दैनिक आहार में साबुत अनाज और उनके उत्पादों के सेवन को बढ़ाने के लिए प्रयास करें।

नियमित आधार पर रंगीन फल और सब्जियां खाने चाहिए।

फाइड, तेल, नमकीन और जंक खाद्य पदार्थों से बचें।

भोजन का सेवन नियमित रूप से व्यायाम के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

भोजन में अधिक सब्जियां और दालों को शामिल करें।

सप्ताह के अधिकांश दिनों में सूखे मेवे (बादाम, अखरोट) खाना चाहिए।

स्वयं और परिवार के लिए एक वार्षिक स्वास्थ्य जांच प्राप्त करने की कोशिश।

हमेशा पर्याप्त नींद है।

जीवन शैली बदल रहा है और जनता की स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को बढ़ाने के साथ विभिन्न भोजन योजना तेजी से और अधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं. एक स्वस्थ जीवन शैली को अपनाने और जोखिम कारकों को नियंत्रित करने के लिए आहार विशेषज्ञ से परामर्श जरूरी है. स्वस्थ जीवन शैली, मोटापा और विभिन्न अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के खिलाफ सबसे अच्छा बचाव है. सरल आहार संशोधन दिल की रक्षा कर सकते हैं. एक स्वस्थ जीवन शैली लोगों के लिए एक स्वस्थ दिल सुनिश्चित करता है।

-स्वाति त्रिवेदी दवे
डायटीशियन, अहमदाबाद

संता के दांत में कीड़ा लग गया तो डॉक्टर बोला
4 दिन सुबह शाम चाय के साथ बिस्कुट लो
और
पाँचवे दिन सिर्फ चाय पीना
संता ने 4 दिन चाय के साथ बिस्कुट खाए
और पाँचवे दिन केवल चाय पी

कीड़ा बाहर निकला
और बोला
आज बिस्कुट नहीं है क्या?

एक आदमी टी.वी. पर बम रख कर भारत-पाकिस्तान का मैच देख रहा था।
उसकी पत्नी ने पूछा, ''यह बम किस लिए?''
आदमी बोला, ''अगर हारे तो सबको उड़ा दूंगा।''
पत्नी- और जीत गए तो
पति- दिवाली मन जाएगी और क्या...

रोग पहले मन में, फिर तन में

कहा जाता है कि शरीर है तो रोग होंगे ही। यानि हमने ये मान रखा है कि रोग तो होने ही है। शरीर में रोग या दु:ख दर्द क्यों होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आदिकाल से खोजा जा रहा है। कुछ कहते हैं कि बीमार होना तो भाग्य में लिखा है। कुछ कहते हैं कि रोगी होने का कारण पिछले जन्मों के दुष्कर्म हैं। आज अधिकांश लोग मानने लगे हैं कि अनियमित, अनियंत्रित व अनावश्यक खानपान रोगों का कारण हैं और यह मान्यता कुछ सीमा तक ठीक भी है। परन्तु कुछ लोग जो आध्यात्मिक जाग्रति रखते हैं उनका मानना है कि मानव की भाव दशा अर्थात् सोच-विचार का स्तर उसके रोगी या निरोगी होने का कारण है।

जीवन में भय, असमंजस, असंतुलन, अपूर्णता, अव्यवस्था, प्रतिरोध आदि हममें ऐसे भाव पैदा कर देते हैं जो हमें धीरे-धीरे अलग-अलग रोगों की ओर ले जाते हैं। हमें जीवन में केवल वही चीजें चाहिए जो हमारे मन के अनुकूल हों। ऐसे ही स्थितियां होनी चाहिए जो हमारे मनोकूल हों। यदि हमारा जीवन मनोकूल नहीं चलता तो क्षुब्धता हमें घेर लेती है और यदि कुछ चीजें मन के अनुसार ही मिलने लगें या घटित होने लगें तो उनसे विलग होने का भय हमें सताने लगता है और एक असुरक्षा का भाव हममें अवतरित हो जाता है। हमारी बहुत सारी ऊर्जा ऐसे ही नकारात्मक विचारों और भावों में व्यर्थ हो जाती है। हमारे ऊपर छाया हुआ ऊर्जा का कवच कमजोर पड़ने लगता है और धीरे-धीरे रोग हमारे शरीर को अपना घर बनाना शुरू कर देते हैं। ऐसा भी कहा जा सकता है कि शरीर के जिस-जिस अंग पर ऊर्जा का क्षेत्र कम हो जाता है उस-उस अंग में रोग अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू कर देते हैं।

आमतौर पर पाया जाता है कि बीमार पड़ने की स्थिति में हम सीधा ही बीमारी को हटाने में लग जाते हैं और हमें पता ही नहीं चलता कि बीमारी हटी नहीं बल्कि दबा दी गई है। बहुत ही कम लोग इस बात की गहराई में जाते हैं कि रोग क्यों हुआ? किसी भी रोग के कारण को केवल समझ लेना ही रोग समाप्ति की ओर जाना हो सकता है। इस दौरान हमारी कैसी भावदशा रही वैसा ही रोग हमारे शरीर में जड़े बनाता है। हम न तो किसी रोग को निमंत्रण देते हैं और न ही मन के भीतर के तल पर रोगी हो जाने का निर्णय करते हैं। फिर हमारी आज्ञा बिना हमारे किसी निर्णय के बिना कोई भी रोग हमें कैसे घेर लेता है। यदि हम केवल इतनी सी बात को पकड़ लें तो जीवन में एक अद्भुत रूपांतरण हो सकता है।

हमें अपने विचारों पर, भावों पर एक पैनी दृष्टि रखनी होगी। हमें अपने खान-पान और रहन-सहन को समझना होगा। जीवन में क्या आवश्यक है और क्या व्यर्थ है- इतना ही समझ आ जाए तो कुछ बात न सकती है। हमें अपने सुप्त पड़े ऊर्जा के भंडार को जानना होगा। किन-किन विचारों में, क्रियाओं में हमारी ऊर्जा व्यर्थ बह रही है हमें देखना होगा। जीवन में जैसे-जैसे सार्थक मिलता जाता है, व्यर्थ छूटता जाता है। हमें अपने ऊर्जा क्षेत्र को, ऊर्जा के कवचन को मजबूत बनाना होगा। रेकी से हमारी ऊर्जा एकत्रित होती है, संतुलित होती है।

रेकी हमें पूर्णता के मार्ग पर ले जाती है। हमें पता भी नहीं होता है कि रोग हमारी असंतुलित और कुछ हद तक नकारात्मक मानसिक स्थिति का परिणाम है। रेकी द्वारा किसी भी रोग को जड़ से कैसे समाप्त किया जा सकता है। यह बहुत ही विचारणीय प्रश्न है। जबकि यह एक व्यवहारिक सच है कि रेकी उपचार से कोई भी रोग जड़ से समाप्त किया जा सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि भयंकर रोग की स्थिति में उपचारक तथा रोगी, दोनों को बहुत मेहनत की आवश्यकता पड़ती है। रेकी उपचार में रोगी के ऊर्जा क्षेत्र को बढ़ाने व सबल बनाने पर कार्य किया जाता है। रेकी के अलावा योग, ध्यान प्राणायाम सुदर्शन क्रिया जो आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर जी द्वारा प्रवलित की गई है, इन सभी विद्याओं में से अपनी पसंद के अनुसार चुनाव करें और नियमित अभ्यास और साधना से अपने आपको चुस्त-दुरुस्त रखें।

-उषा ठाकोर, मुंबई

'तुम्हारे पिताजी ने मरते समय कुछ कहा था।' एक मित्र ने दूसरे से पूछा।

'नहीं, मां उनके सिर पर खड़ी रही थी, इसलिए वह मुंह से एक शब्द भी न निकाल सके।'

सबको स्तब्ध कर गया, उनका यूं असमय चले जाना

अरे... पाठक मैडम नहीं रहीं? क्या बोल रहे हो? ऐसा हो नहीं सकता, वे कल ही भोपाल से अवार्ड लेकर लौटी हैं, और हम उन्हें यहां बधाई देने की राह देख रहे हैं। सम्पूर्ण रेल्वे स्टॉफ इटारसी में यही चर्चा हो रही थी और हो भी क्यों नहीं... जिसने रेलवे विभाग इटारसी में अपने जीवन के तीस वर्षों में विभिन्न पदों पर रहकर अपनी कार्य कुशलता का परिचय दिया और अनेक रेलवे कर्मचारियों को निस्वार्थ भाव से प्रशासकीय सेवाएं प्रदान की है। साथ ही अनेकों को नौकरी और रोजगार दिलवाया तथा उनकी समस्याओं को सूझबूझ से हल किया हो, उनका आज असमय हम सभी से दूर जाने की बात पर कोई विश्वास नहीं कर रहा है। वर्तमान में श्रीमती उर्मिला पाठक जिन्हें सब पाठक मैडम के रूप में जानते हैं, इटारसी रेलवे विभाग के लोको फोर मेन कार्यालय में अधीक्षक पद पर कर्तव्यनिष्ठ एवं दबंग अधिकारी के रूप में कार्यरत थी। दिनांक 19 सितम्बर 2014 को मंडल रेल प्रबन्धक पश्चिम रेलवे भोपाल संभाग द्वारा एक समारोह में उन्हें हिन्दी में उल्लेखनीय एवं सराहनीय कार्य करने के उपलब्ध में प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। दिनांक 20 सितम्बर 2014 की प्रातः घर के आवश्यक कार्य करते समय उन्हें अचानक घबराहट हुई और वे पसीने से नहा गई। उन्हें तत्काल इटारसी के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टर ने बताया कि उन्हें हार्ट अटैक आया है। चिकित्सा के दौरान दोपहर 1 बजे उन्हें पुनः दूसरा हार्ट अटैक आया और हृदय गति रुक जाने से 58 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया। उनके निधन के समाचार से सभी स्तब्ध रह गए। जीवन में कहीं भी अन्याय के विरुद्ध उन्होंने हमेशा आवाज बुलन्द की, किन्तु ईश्वर की इस लीला का वे कोई विरोध नहीं कर पायी। 6 सितम्बर 1956 को खंडवा जिले के हरसूद निवासी डॉ. ओ.पी. त्रिवेदी एवं स्व. दुर्गा देवी त्रिवेदी के यहां उनका जन्म हुआ था। प्राथमिक शिक्षा हरसूद से प्राप्त करने के बाद एस.एन. कॉलेज से उन्होंने अर्थशास्त्र विषय में एम.ए. किया। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की उनमें गजब की शक्ति थी। इसी कारण परिवार में उन्हें धून के नाम से सब पहचानते हैं। बड़े भाई श्री अशोक त्रिवेदी बैंक

श्रीमती उर्मिला पाठक
अवसान 20 सितम्बर 2014

ऑफ इंडिया के सेवानिवृत अधिकारी हैं। छोटे भाई श्री संतोष त्रिवेदी जिला उद्योग एवं व्यापार विभाग बुरहानपुर में प्रबंधक हैं। 27 अप्रैल 1983 को इटारसी के नागर परिवार में स्व. नारायण राव पाठक व श्रीमती शकुन्तला पाठक के पुत्र राकेश पाठक (रेलवे मेल गार्ड) से उनका विवाह हुआ था। उनकी बड़ी बेटी श्रीमती मिनी समीर जोशी मुंबई में तथा छोटी बेटी कु. रिनी पाठक पुना में निजी कंपनी में कार्यरत है। बेटा नमन पाठक इन्दौर में बी.ई. की शिक्षा प्राप्त कर रहा है। नागर समाज कार्यकारणी खंडवा के युवा सदस्य श्री मनोज मंडलोई ने बताया कि उर्मिला भाभी का अचानक इस तरह चले जाना परिवार के साथ ही समाज की भी अपूरणीय क्षति है। नागर समाज खंडवा की उपाध्यक्ष श्रीमती कामिनी पंडित ने कहा कि वे समाज की महिलाओं की प्रेरणा स्त्रोत रही और किसी के भी दुःख सुख में सहा सहयोग प्रदान करने में अग्रणी रही हैं। उनकी सास श्रीमती शकुन्तला पाठक ने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि वे संस्कारी बहु के साथ ही आदर्श मां और सभी की चहेती भाभी थी। उनकी कमी हमें हमेशा अखरेगी। उनके मामा ससुर श्री राम भाऊ जी मंडलोई (खंडवा) मौसी सास श्रीमती इन्दू नागर (झांसी) ननंद श्रीमती किरण विजय भारद्वाज (इन्दौर) दामाद श्री अभय वर्षा मेहता (बड़ौदा) शशिकांत कामिनी पंडित (कालमुखी) अजय मोना भट्ट (ग्वालियर) सहित परिवार के सदस्यों ने श्रीमती उर्मिला पाठक के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है। उनके कार्य क्षेत्र एवं इटारसी में उनके सभी परिचितों की किसी भी प्रकार की कोई समस्या आने पर सर्वप्रथम लोग उन्हीं याद करते थे। यही कारण था कि 21 सितम्बर को उनके अंतिम संस्कार में सैकड़ों लोगों ने सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। जय हाटकेशवाणी परिवार की ओर से भी हार्दिक श्रद्धांजलि।।।ओम शांति।।

प्रेषक-
शशिकांत पंडित
(खंडवा) म.प्र. 9669400322

श्री रमेशचंद्रजी जोशी, इंदौर

नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री रमेशचंद्र जी जोशी का 14.07.14 को देहावसान हो गया। आप उद्योग विभाग में उप संचालक रहे। आपके परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती कमला जोशी, सुपुत्र प्रमोद जोशी एवं सुपुत्री रश्मि हैं। मृदुभाषी एवं कर्तव्यनिष्ठ श्री जोशी के देहावसान से अपूरणीय क्षति हुई है। श्रद्धांजलि

श्राद्ध से समृद्धि

गरुड़ पुराण में उल्लेख है कि श्राद्ध करने से कुल में कोई दुखी नहीं रहता। देवताओं से पहले पितरों को प्रसन्न करना कल्याणकारी है। जो श्राद्ध नहीं करते उनके पितर नाखुश रहते हैं। घर में सुख शांति की कमी और बीमारियां रहती हैं। अच्छी संतान और स्वास्थ्य के लिए श्रद्धा करना चाहिए। श्राद्ध से पुत्र आयु, आरोग्य, यश, अभिलाषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। श्राद्ध में उत्तम बेटी का बेटा-दोहित्र

- रीता मोहन शर्मा
देवास
मो-9907482662

कर्म के पुजारी-दीपशंकर याग्निक

पंडित परिवार के दामाद दीपशंकर याग्निक को गुजरे एक वर्ष हो चुका है। हम उन्हें आज तक भुला नहीं पाए हैं और ना कभी भुला सकेंगे। 27 सितम्बर 2014 को उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर उन्हें हमारे परिवार की ओर से शब्दों की श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आंखें नम हो रही हैं।

खंडवा जिले के ग्राम कालमुखी निवासी डाक्टर बलीराम एवं श्रीमती इन्दिरा पंडित की सबसे छोटी बेटी अणिमा का विवाह 5 मई 1992 को धूमधाम से हुआ था। कलकत्ता निवासी श्री विरेन्द्र शंकर एवं श्रीमती कमलाबेन याग्निक के पुत्र दीपशंकर याग्निक दुल्हा बनकर खंडवा आए थे। कलकत्ता में दीपशंकर आईएनजी वैश्य बैंक में अधिकारी के पद पर पूर्ण निष्ठा एवं मेहनत के साथ कार्यरत थे। बैंक में अपने मधुर एवं कर्मठ व्यवहार से अत्यन्त लोकप्रिय थे।

अणिमा व दीप ने अपने विवाह के 21 वर्षों में आपसी सूझबूझ से सम्पूर्ण परिवार का परम स्नेह व विश्वास हासिल किया। इसी बीच दो पुत्र दिव्यांशु और अनमोल की उन्हें प्राप्ति हुई। दीप भाई ने अपने दोनों पुत्रों की शिक्षा एवं उच्च संस्कार पर विशेष ध्यान दिया। बैंक में रात-दिन कड़ा परिश्रम किया। अनेक विद्यार्थियों को पढ़ाई में कोचिंग से सहयोग दिया। नागर समाज की रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया। अथक परिश्रम का उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा और वे वर्ष 2012 में अस्वस्थ हो गए। महानगर कलकत्ता में उनका अच्छे से अच्छा उपचार एवं शल्य क्रिया हुई, किन्तु 27 सितम्बर 2013 को वे हम सभी को छोड़कर परमात्मा में विलीन हो गए। हमसे विदा हुए एक वर्ष हो गया है, किन्तु उनकी निश्चल हंसी और मधुर व्यवहार हमें हमेशा याद आता है।

कलकत्ता में दीपभाई के सभी भाइयों-प्रभात शंकर-संध्या भाभी, जय शंकर-नीता याग्निक, अभयशंकर याग्निक, नरेन्द्र शंकर-सुनीता याग्निक, अरुण शंकर, जीतू याग्निक एवं प्रदीप शंकर-प्रीति याग्निक के भरे-पूरे परिवार में दीप की कमी सभी के लिए एक दु:खद घटना है। दीप भाई का जन्म 30 अक्टूबर 1959 को कलकत्ता में हुआ था। उन्होंने बी.काम एवं सीए की शिक्षा प्राप्त कर 29 वर्षों तक सतत आईएनजी वैश्य बैंक में अपनी कुशल सेवाएं दी। मात्र 54 वर्ष की आयु में उनका अचानक चले जाना पूरे परिवार पर वज्रपात के समान हुआ है।

हम जब भी कलकत्ता गए उन्होंने अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर हमें शहर दर्शन करवाया। शिरड़ी के सांई बाबा में उनकी बहुत श्रद्धा रही है, अनेक बार वे बाबा के दरबार में दर्शन करने गए। उनके साथ एक बार हमें भी शिरड़ी जाने का अवसर मिला जो हमें हमेशा याद रहेगा। दीपभाई तो आज हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनकी स्मृति में हमने कुछ शब्दों के माध्यम से उन्हें याद करने का प्रयास किया है।

जिन्हें हम समझ रहे हैं कि वे चले गए हैं, किन्तु हर पल यही लगता है कि वे यहीं कहीं है आस-पास... किसी ना किसी रूप में होता है अहसास दूर होकर भी आप हैं हमारे पास। उनकी अनुपस्थिति में होता है उनकी परिस्थिति का अहसास। प्रकृति के प्रकाश पूंज है शशि-रवि, ऐसे ही हमारे जीवन के प्रेरणा स्त्रोत हैं आप। हमे आशीर्वाद दें कि हम चलते रहे आपके दिखाए पथ पर और आगे बढ़कर आपके नाम को गौरवान्वित करें।

शशिकांत पंडित
कालमुखी (खंडवा) 9669400322

वास्तव में वे 'रतन' थे...

अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व, मां गायत्री के परम उपासक, जिनका जीवन समाज को समर्पित था, अनेक शिष्यों के पथ प्रदर्शक सरल और नियमित जीवन आदि अनेक गुणों से परिपूर्ण थे- श्री रामरतन शर्मा जी। श्री शर्माजी जीते जी समाज में कहीं भी सुख दुख में हमेशा तुरन्त उपस्थित होते एवं परिवार को सांत्वना देते। सामाजिक कार्यों में सदैव क्रियाशील रहे। कार्यक्रमों में मंच से स्पष्ट समाज सुधार की प्रेरणा देते साथ ही धार्मिक पारम्परिक रीति रिवाजों के पक्ष में समझाइश देते। गायत्री शक्तिपीठ एवं हाटकेश्वर धर्मशाला के लिये पूर्ण समर्पित थे। जीर्ण शीर्ण हो रही धर्मशाला के खतरे को सर्वप्रथम उन्हीं ने समझकर धर्मशाला को पूरी तरह तोड़कर नवीन आधुनिक निर्माण की कल्पना एवं साहस श्री शर्मा जी ने ही किया। उन्होंने सदैव समाज के सभी वर्गों एवं गुटों को एक कर संगठित रहने का प्रयत्न किया। वे जीवन पर्यन्त अध्ययन शील रहे उन्होंने विद्यार्थियों के हित में दर्जनों पुस्तकें लिखी। वे अर्थशास्त्र में पारंगत तो थे ही, साथ ही राजनीति, समाजशास्त्र में भी निपुण थे। जाना तो सभी को है किन्तु असमय में जाना बहुत ही दर्दनाक होता है वास्तव में वे असमय ही चले गये। उनकी न केवल परिवार को, बल्कि समाज को, शिक्षा जगत को एवं उज्जैन नगर को भी आवश्यकता थी। हमेशा स्वस्थ फूर्तिवान लगने वाले का शर्माजी का स्वास्थ्य

कुछ खराब हुआ, उन्हें उज्जैन में भार्गव हॉस्पिटल में भर्ती कराया, दूसरे दिन जानकारी मिलने पर मैं उनसे मिलने अस्पताल गया उस समय उन्हें चिकित्सा हेतु इन्दौर ले पाने की तैयारी चल रही थी। वे अच्छी तरह बात कर रहे थे। यहां चिकित्सक कुछ समझ सके कि नहीं, किन्तु उन्हें इन्दौर के लिये रेफर कर दिया गया था। इन्दौर जाने के लिये गाड़ी में उन्हें लेटने के लिये कहा तो उनका उत्तर था मैं बैठ सकता हूं, मुझे इन्दौर क्यों भेजा जा रहा है, वाहन में इन्दौर प्रस्थान समय में मैं उनके समक्ष था और वे अच्छी तरह बातचीत कर रहे थे। आगे इन्दौर जाने पर क्या हुआ, क्या निदान हुआ ईश्वर ही जाने। जो हुआ अत्यन्त दु:खद। ईश्वर की इच्छा। अब उनकी यादें ही शेष हैं। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों पर चले, जय मां के उपासक बनें एवं उनकी कल्पना के अनुसार हाटकेश्वर धर्मशाला के नवीन निर्माण का उनका स्वप्न पूर्ण करें। ऊं शान्ति।

- डॉ. बालकृष्ण व्यास
उज्जैन

द्वितीय पुण्य स्मरण

स्व. श्री हरिवल्लभजी नागर

26 अक्टूबर

आपकी यादें हमें रुला रही है
आपके आदर्श हमें
दिशा दिखा रहे हैं
हर पल यह एहसास होता है
कि सदा आप हमें
आशीष दे रहे हैं...

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत :
श्रीमती श्यामा देवी नागर
पं. श्री कमलकिशोरजी, विमलशंकर,
डॉ. सुधीर, बलराम,पं. राजेश्वरजी
सुनील, सुमीत, विनोद, पं. ब्रजेश,
सुशील एवं समस्त नागर परिवार
(इन्दौर, मुंबई, ग्राम सेमली,
ग्राम घुन्सी (जि.शाजापुर)

चतुर्थ-पुण्य-स्मरण

स्व. देवकुंवर नागर
(पत्नि मनोहरलाल नागर)
रमापति विहार कॉलोनी, राऊ
अवसान 29/10/2010

चतुर्थ-पुण्य-स्मरण

स्व. कमलाबाई मेहता
(पत्नि स्व. स्वरुपनारायणजी मेहता)
मड़ावदा
अवसान-6/10/2010

षष्ठम-पुण्य-स्मरण

स्व. देविन्द्रा दवे
(पत्नि भुवनेश दवे)
लुनेरा जि.रतलाम
अवसान-6/11/2008

ननंद भाभी के घनिष्ट प्रेम-प्यार की परछाई,
परिवार में सहयोगात्मक दृष्टि की यादें छोड़ गए
पुण्य दिवस स्मरण के साथ शत-शत नमन

श्रद्धानवत-मनोहरलाल नागर, राऊ, भुवनेश दवे, लुनेरा (रतलाम), जीवनलाल दवे, इन्दौर, रामलाल दवे, लुनेरा, दीपक मेहता, मड़ावदा, कैलाशजी आचार्य, उज्जैन, पंकज नागर, इन्दौर, एवं समस्त मेहता, रावल, नागर व दवे परिवार
मड़ावदा-इन्दौर-उज्जैन-लुनेरा मो.9685823513, 9744623556

षष्टम् पुण्य स्मरण

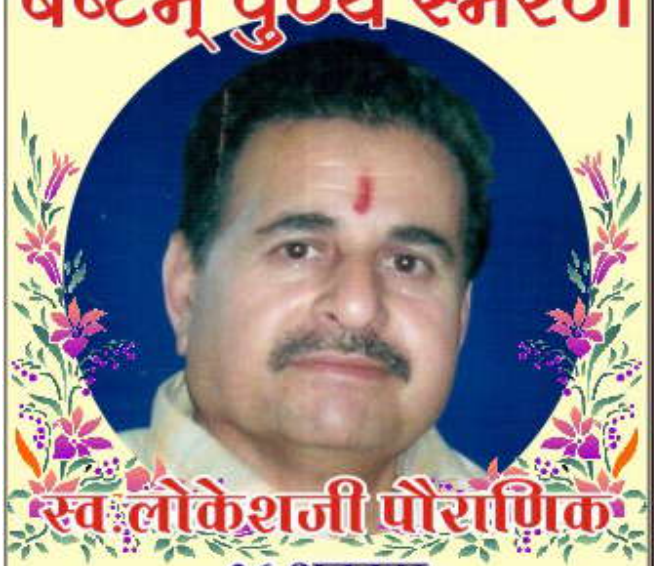

स्व. लोकेशजी पौराणिक
26 अक्टूबर
श्रद्धावनत
श्यामादेवी पौराणिक
एवं समस्त परिवार
147, गंगा नगर, देवास

पुण्य स्मरण

श्रद्धेय स्व. पं. लक्ष्मीनारायणजी शर्मा
भाकड़ोन
1 अक्टूबर
: श्रद्धावनत :
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, मुरलीधर शर्मा
एवं समस्त शर्मा परिवार
भाकड़ोन, 07369-261391, 07369-261160

समस्त नागर बंधुओं को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

अरुण-उषा मेहता, शुभम मेहता, डॉ. सत्यम मेहता, सुन्दरम मेहता
नरसिंहगढ़, जिला राजगढ़ (म.प्र.)

हमारे प्रतिष्ठान

मेहता कृषि केन्द्र

छत्री चौराहा,ब्यावरा रोड़
नरसिंहगढ़, जिला राजगढ़ (म.प्र.)

मेहता डेन्टल हॉस्पिटल

छत्री चौराहा,ब्यावरा रोड़
नरसिंहगढ़, जिला राजगढ़ (म.प्र.)

अरुण कुमार मेहता
मो.9425445137

शुभम मेहता
(बी.टेक एग्री.इंजीनियर, एमबीए-रुरल मैनेजमेंट)
मो.9913027069

डॉ. सत्यम मेहता
(बी.डी.एस.-एनसीआर नईदिल्ली)
मो.7509977737

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2013-15

ॐ शांति

॥ नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

द्वितीय पुण्य स्मरण

स्व. पं. मोतीलालजी शर्मा

(घुंसी वाले)

22.10.2014

श्रद्धावनत :

सावित्रीबाई शर्मा (पत्नि)
दिनेश शर्मा (पुत्र), सुनीता शर्मा (पुत्र वधू)
अर्पण शर्मा (पौत्र), दिपीका शर्मा (पौत्री)
8/96, इमली बाजार, राऊ जिला इन्दौर
98260-38313, 98270-10777, 98272-67679

गिरधर शर्मा, (भ्राता)
राजेन्द्र शर्मा, नरेन्द्र शर्मा
देवेन्द्र शर्मा एवं समस्त
शर्मा परिवार
मो.बड़ोदिया एवं राऊ

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा श्री दीपक प्रिंटर्स
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
संपादक : सौ.संगीता शर्मा 52 मो. 99262-85002